@NewsRotary
/RotaryNewsIndia
May 2017
Vol.34, Issue 11 Annual Subscription Rs.420

रोटरी समाचार

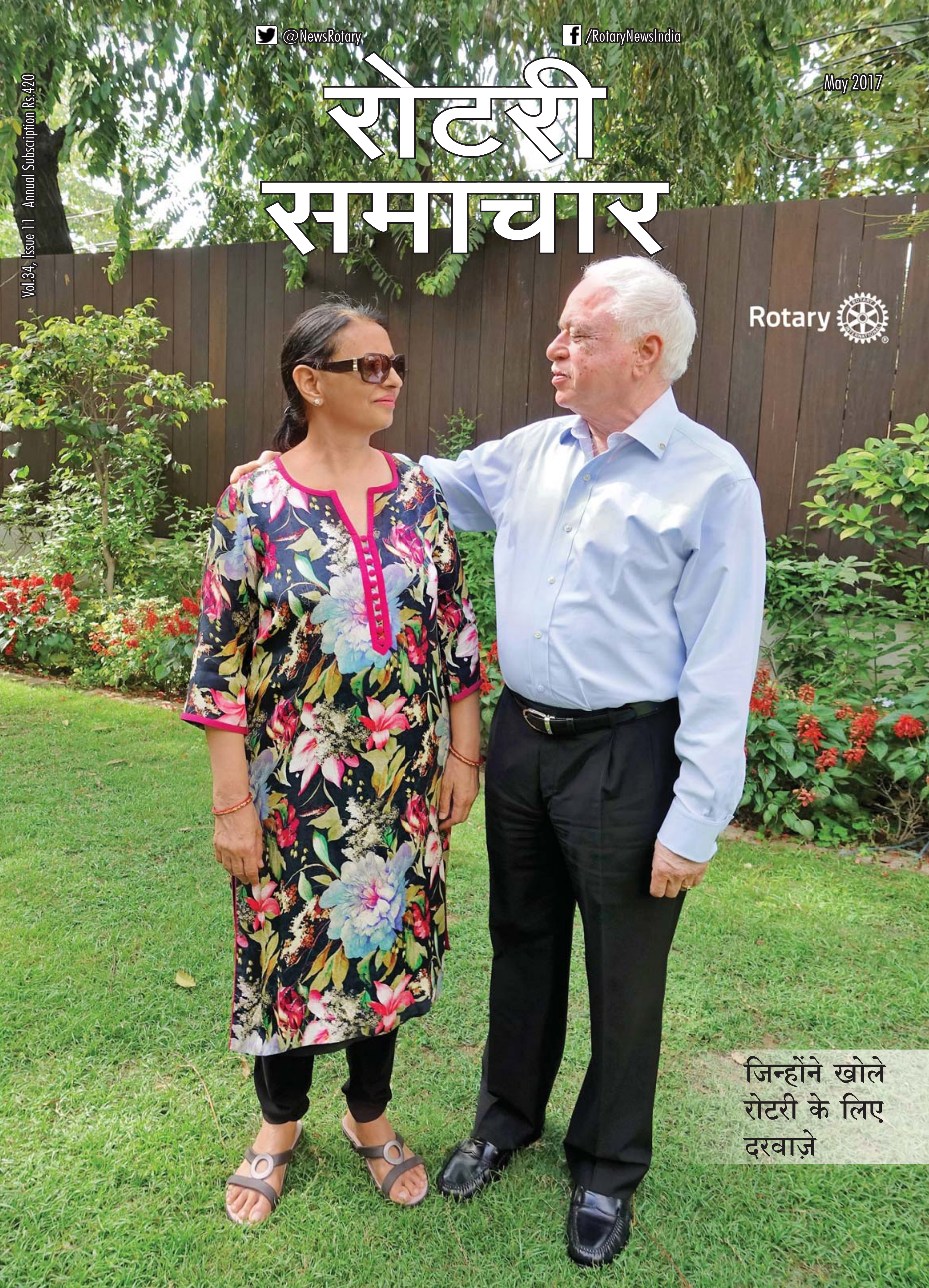

Rotary

जिन्होंने खोले रोटरी के लिए दरवाज़े

एक गंभीर पाठक

विभिन्न बैठकों के आयोजन के सिलसिले में संपूर्ण भारत के तीव्र भ्रमण के दौरान, RI के निर्वाचित अध्यक्ष इयान राय्सली ने पीडीजी अशोक गुप्ता द्वारा जयपुर में उनके घर पर रात के खाने के बाद आराम करने के लिए थोड़ा समय लिया, जहां मैंने उन्हें *रोटरी समाचार* के अप्रैल अंक की एक प्रति दी। वहीं, अपने चारों ओर हास-परिहास के बीच में, उन्होंने इसका अधिकांश भाग पढ़ लिया, और यहां तक कि *सरल अर्थशास्त्र* नामक स्तंभ से एक प्रश्न भी मुझसे पूछा। वैसे, वह और उनकी पत्नी जूलियट दोनों ने बताया कि वे हर महीने हमारी पत्रिका पढ़ने का आनंद उठाते हैं!

शब्द और चित्र - रशीदा भगत

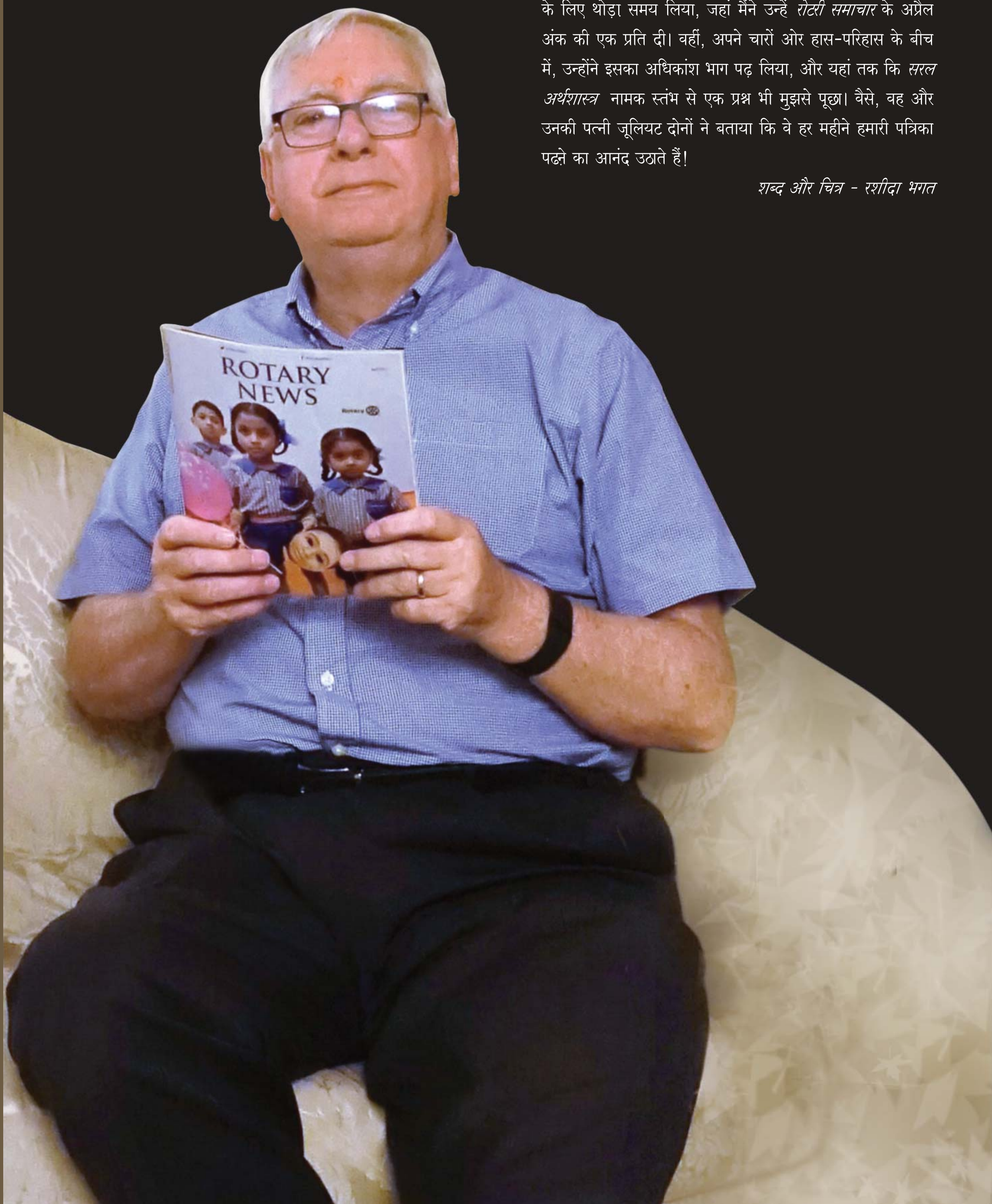

विषयसूची

14 जहाँ जरूरत वहाँ मैं

रोटरी फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने *रोटरी समाचार* के साथ बातचीत में अपने अनूठे जीवन के विभिन्न पहलुओं पर खुलकर की चर्चा।

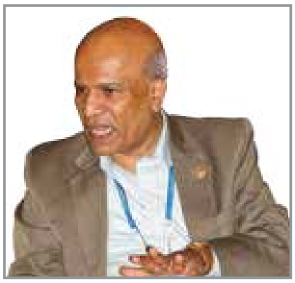

28 परोपकार मेरे खून में समाया है

AKS दाता जयंता कुमार का मानना है कि हमें कम भाग्यशाली लोगों के साथ हमारे पास जो कुछ भी हो उससे बाँटना चाहिए।

36 फौजी क्लब ने किया WinS का फौजी कार्यान्वयन

भुवनेश्वर के एक सरकारी स्कूल में WinS परियोजना का शीघ्र निष्पादन पर एक विवरण।

72 गोवा: काजू की ख़ुशबू हर कहीं

काजू के साथ बहुत कुछ हो सकता है। फेनी बनाने से लेकर एक पूर्ण काजू स्पा तक - गोवा में एक दिलचस्प काजू की भेंट।

32 डीजी के लिये कुछ हिदायतें

रोटरी के तीन अनुभवी परामर्शदाताओं ने आगंता डीजी यों को नेतृत्व, भला करने के उनके अधिकार, आदि के बारे में स्फूर्तियुक्त वक्तव्य पेश की।

44 उत्कृष्ट माता एवं बाल स्वास्थ्य रक्षा को वहनीय बनाना

एक 150,000 डॉलर ग्लोबल ग्रांट के ज़रिये रोटरी क्लब मद्रास मेट्रो ने चेन्नई के VHS अस्पताल में एक नया ब्लॉक प्रदान किया।

50 श्रवण शक्ति बाधित बच्चों के शिक्षण में क्राँति

सक्षम - मंडल 3131 की एक विशिष्ट ई-शिक्षण परियोजना जो श्रवण शक्ति में अक्षम बच्चों को बेहतर सीखने में मदद कर रहा है।

68 निम्न प्रदर्शन, उच्च प्रतिफल

प्रदर्शन-पुरस्कार के संबंध में गेंदबाज़ों और सरकारी अफसरों के बीच एक दिलचस्प समानांतर।

56 इक्कात... रंगों की गुंथायी

एक आकर्षक इक्कात की यात्रा में, लेखिका ने आंध्र और उड़ीसा के सुन्दर इक्कातों और गुजरात के शानदार पटोलों की बुनावट की जटिल प्रक्रिया के बारे में जाना।

कवर पर : टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और उनकी पत्नी विनीता।

चित्र: रशीदा भगत

संग्रहकर्ता की चीज़

हालाँकि किसी व्यक्ति ने साक्षरता नायकों जैसे कैलाश सत्यार्थी, शांता सिन्हा, आदि के बारे में सुना होगा, परन्तु RILM ने कुछ अनसुने नायकों को पहचानकर उन्हें सम्मानित किया। शारीरिक रूप से विकलांग खिमजीभाई करसेनभाई प्रजापति की कहानी प्रेरणात्मक है।

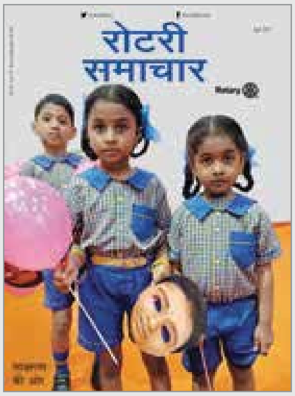

एन. जगथीसन
रोटरी क्लब एलुरु -मंडल 3020

मैं एक रोटरियन नहीं हूँ लेकिन मैंने *रोटरी समाचार* को अपने भाई के साथ पढ़ा जो एक रोटरी सदस्य है। बधाईयाँ; बहुत बढ़िया सम्पादकीय और लेख, रोटरी के कार्यक्रमों की उत्तम तस्वीरें इसे संग्रहकर्ताओं की चीज़ बनाती है। मेक्सिको और कपड़ो पर लेखों को पढने के बाद मैं कांचीपुरम और मेक्सिको की यात्रा पर जाने चाहता हूँ। परन्तु आपको डीजीयों के नाम देने चाहिऐ, *भविष्य के नेता* शीर्षक की एक तस्वीर के साथ।

संजीव सी. भारम्गुदे, पुणे

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का रोटरी दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन में दिया गया प्रेरणात्मक भाषण आँखें खोल देने वाला है। गरीब बंधुआ मजदूर बच्चों की उनकी कहानियाँ हृदय-विदारक थी।

जी. वी. सयागावी, रोटरी क्लब दवानगेरे विद्यानगर - मंडल 3160

लेख *एक रोटरियन अंग दान के लिए उदाहरण प्रस्तुत करता है* (मार्च अंक) प्रेरणात्मक है। रोटरी हमेशा आपको दूसरों का भला करने के लिए प्रेरित करती है। डॉ. पुनीत महाजन और उनके परिवार को सलाम।

डॉ. संजय अग्रवाल
रोटरी क्लब सोलन - मंडल 3080

तीन अनूठी शख्सियतों दीपा मलिक, रोटरियन मनोज इसरानी और पूर्व सेना प्रमुख जनरल वी. पी. मलिक पर दो मंडल सम्मेलनों (मंडल 3141, 3080) की रिपोर्ट प्रेरणाप्रद थी। दीपा की कहानी ज़बर्दस्त थी। आरआईपीई इयान रिसले का साक्षात्कार पढकर मैं उनका प्रशंसक बन गया। मुझे 'रोटरनामा' शब्द बहुत पसंद आया जो उनकी बेटी ने दिया था। बोलीविया की दिलचस्प दुनिया से हमें परिचित करवाने के लिए अदिति डे प्रशंसा के योग्य है। मैं आपको क्षेत्रीय प्रतिनिधियों को नियुक्त करने की सलाह देता हूँ।

अतुल भिड़े रोटरी क्लब ठाणे हिल्स - मंडल 3140

एक रोटरियन होने के नाते जिसने वर्ष 1978 में रोटरी के आधारभूत पाठ सीखे थे, मैंने रोटरियन विजय जलान के लेख (*सदस्यता को बढ़ावा, सदस्यों का अवरोधन*) का पूर्ण रूप से आनंद लिया। मैं एक बात जोड़ना चाहूँगा; रोटरियनों द्वारा क्लब छोड़ने के अनेक कारणों में से एक कारण उनके कौशल या योग्यता के अनुरूप जिम्मेदारियाँ ना देने का है। एक अन्य कारण है कि रोटरी उनकी व्यावसायिक अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरती। इसलिए, यह आवश्यक है कि सदस्यों की भर्ती के दौरान अत्यधिक सावधानी बरती जायें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी नया व्यक्ति केवल रोटरी के नाम द्वारा अपने पेशे में उन्नति के लिए क्लब से ना जु सके।

एन.आर.यू.के. करथा
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

मार्च अंक में सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रेरणादायक जानकारियाँ और लेख थे। संपादक का लेख *रोटरी पर क्यों विशिष्ट संस्था वाली मोहर लगी है* लाखों पाठकों तक सन्देश को प्रसारित करता है। इन मापदंडों में से एक है दुनिया भर में 35,000 से ऊपर समुदायों में इसकी उपस्थिति। वर्ष 2003 में यूएस की यात्रा के दौरान, रोटरी क्लब वर्जिनिया के अध्यक्ष ने मुझे क्लब की बैठक में आमंत्रित किया। वहाँ मैंने एक साथी रोटरियन से बात की और वह विश्वविद्यालय के अध्यक्ष थे। चूंकि मैं भी एक प्रोफेसर हूँ, उन्होंने मुझे उनके विद्यार्थियों और अध्यापकों को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया। 20 वर्षो से भी अधिक समय से एक रोटरियन होने का मुझे अच्छे लाभ मिला है।

प्रोफेसर सी. के. सरदाना
रोटरी क्लब भोपाल मिडटाउन
मंडल 3040

मुंबई में आयोजित मंडल 3141 के सम्मेलन में संजय दत्त के शामिल होने से ठीक पहले मैं उनसे कोलकाता में मिला था। उन्हें सुनते हुए, कोई भी व्यक्ति चुनौतियों, अवसाद, दर्द, तकलीफों, और एक वापसी करने के लिए जेल में हर कठिनाई का सामना करने की उनकी दुखद कहानी को समझ सकता है।

पियूष दोषी
रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

दीपा मलिक की कहानी उन लोगों की आँखें खोल देने वाली है जो अपनी नाकामयाबी के लिए बहाने बनाते है। लेख को पढ़कर कोई भी व्यक्ति कह सकता है की कुछ भी असम्भव नहीं है। यह निःशक्तजनों के लिए मनोबल वर्धक है। उनको सलाम।

ओ. पी. खड़िया
रोटरी क्लब जयपुर कोहिनूर
मंडल 3052

लेख *रोटरी अपना वादा पूरा करती है* के संदर्भ में, मुझे 1981 में रोटरी क्लब हरिद्वार से पीडीजी प्रेम पी. भल्ला द्वारा परिचित करवाया गया था। मैं गरीब बच्चों को शिक्षा देने के उनके काम से प्रभावित था। उन्होंने देहरादून के हिम ज्योति स्कूल में

पीआरआईडी सुदर्शन अग्रवाल (उत्तराखंड के पूर्व गवर्नर) के साथ, उत्तराखंड के दूरस्थ इलाकों की सुविधाओं से वंचित लड़कियों के लिए उत्कृष्ट काम किया है।

टी.डी. भाटिया
रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार
मंडल 3112

मार्च अंक में लाभदायक और आदर्शो से परिपूर्ण कहानियों का एक रोचक मिश्रण था - इनमें सबसे अच्छा था मानव जीवन के बारे में दीपा मलिक का अवलोकन (*अक्षमता से परे क्षमता*)। रॉबर्ट ब्राउनिंग के शब्दों में, वह एक असंशोधनीय आशावादी है जो अपनी पारी को वांछनीय ढंग से खेल रही है। रोटरियन मनोज इसरानी की टिप्पणी (*धन-दौलत जमा करना आपको पागल बना सकता है*) ने उन्हें बिल गेट्स जैसे दानदाताओं की मण्डली में लाकर खड़ा कर दिया है। रोटरी अनूठी क्यों है के चार कारण हमें अपने संस्थान पर गर्व महसूस करवाते है। आरआईपीई इयान रिसले ने आने वाले नेतृत्वकर्ताओं को सदस्यता वृद्धि के लिए उत्तम सलाह दी है। कुल मिलाकर, मार्च अंक हमारी आत्मा एवं मस्तिष्क के लिए एक शानदार दावत थी। बधाई हो रशीदा।

परन्तु *रोटरी समाचार* का बकाया लाखों रुपये में है और यह राशी हर साल बढ़ रही है। क्लब के प्रेसिडेंट के बदलाव और कुछ ग्राहकों के नाम और पते नहीं है, जिसके कारण पत्रिका नहीं मिलने की शिकायतें आती है।

प्रभावशाली पत्रिका

आपने मार्च अंक में करनाल में मेरी बातचीत को विस्तार से प्रस्तुत किया और पेशेवर धर्म के लिए मेरी प्रवृत्ति को प्रकट किया। रोटरी समाचार एक प्रभावशाली पत्रिका है जो रोटरी के कार्यक्रमों के साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं विचार-उत्तेजक लेखों को सम्मिलित करती है। आपके लिए मेरी शुभकामनायें।

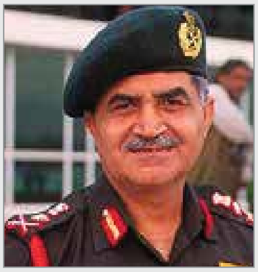

जनरल वी.पी मलिक
सेना के पूर्व प्रमुख

साथ ही, *रोटरी समाचार* को देय शुल्क पर कोई जुर्माना नहीं लगता। समस्या को सुलझाया जा सकता है यदि सदस्यता राशी को आरआईएसएओ द्वारा ज़ारी किये गए बिलों में शामिल किया जायें और एक व्यक्ति आपकी नामावली में देय राशी की वसूली की स्थिति का निरीक्षण करें। साथ थी, देय राशी का भुगतान ना करने पर जुर्माना लगना चाहिए। कृपया इस पर विचार कीजिये।

पीडीजी के.के. धीर
मंडल 3070

अधिक क्षेत्रीय खबरों की आवश्यकता है

मैंने दो वर्षो तक नियमित रूप से *रोटरी समाचार* पढ़ा है। कुछ विशेषताओं की गंभीरता को तस्वीरें प्रभावित करती है। अप्रैल अंक में, बहुत सी तस्वीरें है, जो संलग्न लेख को काफी हद तक अरुचिकर बनाती है। कृपया क्षेत्रीय क्लब की खबरों में वृद्धि कीजिये, मंडल गवर्नरों द्वारा इनपुट लेकर, जिससे कि रोटरियन प्रोत्साहित होंगे।

आई. राजगोपाल,
रोटरी क्लब अनाकापल्ले
मंडल 3020

सेवा परियोजनाएं रोटरी की छवि को ऊपर उठाती है

सदस्यों के मिलने, चर्चा एवं सेवा परियोजनों के माध्यम से समुदाय के लिए काम करने हेतु रोटरी क्लब आदर्श है। यह क्लब पर है कि वह मूल्यांकन करें कि वे रोटरी के दिशा-निर्देशों का पालन कर रहे है या नहीं। पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर के शब्दों में "हम एक सेवा संगठन है, सेवा को हठा दीजिये और हम एक जिमखाना या सर्वव्यापी क्लब बन जायेंगे। तो कभी भी अच्छी सेवा परियोजनाओं को करना मत छोड़िये। अच्छी सामुदायिक परियोजनाएं, WinS और साक्षरता के माध्यम से सदस्यों को संतुष्टि प्रदान करती है और रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाती है।

सुदाम बासा रोटरी क्लब
भुवनेश्वर - मंडल 3262

अप्रैल अंक में जयश्री के लेख *रोटरी क्लब शिमला एक जेल को परिवर्तित करता है* के लिए धन्यवाद। यह हमारे क्लब के लिए एक सम्मान है कि आपने हमारी परियोजना को *रोटरी समाचार*, एक प्रतिष्ठित पत्रिका, में छापा। इससे हमारा मनोबल बड़ा है और हम निकट भविष्य में इस प्रकार की और सेवा परियोजनाओं को करने के लिए प्रेरित हुए है। धन्यवाद।

मनु अग्रवाल
प्रेसिडेंट, रोटरी क्लब शिमला
मंडल 3080

आपके ई-संस्करण के लिए धन्यवाद

मैं *रोटरी समाचार* की संपादक को पत्रिका के ई-संस्करण के लिए बधाई देता हूँ, जिसके कारण मैं इसे दूर अमेरीका में भी पढ़ पाया।

एन. जी. गुप्ता
रोटरी क्लब बैंगलोर
सिटी सेंटर - मंडल 3190

मूर्खतापूर्ण, चोट पहुँचानेवाली टिप्पणी

रोटरियन हेमंत गोगटे (*आप के पत्र, अप्रैल अंक*) की टिप्पणी विचित्र एवं चोट पहुँचाने वाली है। रशीदा भगत द्वारा *रोटरी समाचार* की संपादक का कार्यभार सँभालने के बाद से, कई रोटरियनों ने कहा है कि पहले वे केवल पन्ने पलटाते थे, लेकिन अब वे उन्हें पढ़ते भी है! इसलिए, यह मूर्खतापूर्ण टिप्पणी अनुचित है। इन दिनों, *रोटरी समाचार* एक स्मृति चिन्ह बन गया है।

कोरुकोंडा बुत्ची राजू
रोटरी क्लबअनाकापल्ले
मंडल 3020

अपने विचार संपादक को भेजें।
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com
पर इ-मेल करें।

Governors Council

RI Dist 2981	DG	A Mani
RI Dist 2982	DG	T Shanmugasundaram
RI Dist 3000	DG	M Muruganandam
RI Dist 3011	DG	Dr N Subramanian
RI Dist 3012	DG	Sharat Jain
RI Dist 3020	DG	Dr S V S Rao
RI Dist 3030	DG	Mahesh H Mokalkar
RI Dist 3040	DG	Darshan Singh Gandhi
RI Dist 3051	DG	Dinesh Kumar V Thacker
RI Dist 3052	DG	Ramesh Choudhary
RI Dist 3053	DG	Bhupendra Jain
RI Dist 3060	DG	Hitesh Manharlal Jariwala
RI Dist 3070	DG	Dr Sarbjeet Singh
RI Dist 3080	DG	Raman Aneja
RI Dist 3090	DG	Sanjay Gupta
RI Dist 3110	DG	Dr Ravi Mehra
RI Dist 3120	DG	Dr Pramod Kumar
RI Dist 3131	DG	Prashant Deshmukh
RI Dist 3132	DG	Pramod Shashikant Parikh
RI Dist 3141	DG	Gopal Rai Mandhania
RI Dist 3142	DG	Dr Chandrashekhar Kolvekar
RI Dist 3150	DG	Ratna Prabhakar Anne
RI Dist 3160	DG	Sreerama Murthy
RI Dist 3170	DG	Dr Vinaykumar Pai Raikar
RI Dist 3181	DG	Dr R S Nagarjuna
RI Dist 3182	DG	Devarunda Subbegowda Ravi
RI Dist 3190	DG	H R Ananth
RI Dist 3201	DG	Dr Prakash Chandran Arackal
RI Dist 3202	DG	Dr Jayaprakash P Upadhya
RI Dist 3211	DG	Dr John Daniel
RI Dist 3212	DG	Dr K Vijayakumar
RI Dist 3230	DG	Natrajan Nagoji
RI Dist 3240	DG	Dr Rintu Guha Niyogi
RI Dist 3250	DG	Dr R Bharat
RI Dist 3261	DG	Deepak Mehta
RI Dist 3262	DG	Narayan Nayak
RI Dist 3291	DG	Shyamashree Sen

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3140
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3230
RID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RIDE	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2016–17)

DG	M Muruganandam Chair - Governors Council	RI Dist 3000
DG	Shyamashree Sen Secretary - Governors Council	RI Dist 3291
DG	Sarbjeet Singh Secretary - Executive Committee	RI Dist 3070
DG	Natarajan Nagoji Treasurer - Executive Committee	RI Dist 3230
DG	Gopal Rai Mandhania Member - Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust or Rotary International. No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

सुचित्रा की असाधारण उपलब्धि का जश्न

इस बात को बार-बार दोहराया गया है कि भारत की बेटी को ऊपर उठाने की आवश्यकता है, और किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं बल्कि स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसे दोहराया है, जिन्होंने जनवरी 2015 में हरियाणा से *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ* योजना की शुरुआत की थी, भारत के एक ऐसे राज्य से जो गिरे हुए लिंगानुपात के लिए बदनाम है। इस कारण जब एक लड़की समुदाय में नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाती है, तो यह वाकई दिल को सुकून पहुँचाता है। इसलिए, जब अंग्रेजी दैनिक अखबार, *ध हन्दू* , ने रविवार के संस्करण में के. पी. सुचित्रा, कर्नाटक के एक गाँव की 11 वर्षीय लड़की जिसने पूरे गाँव को उनके घरों में शौचालय बनवाने के लिए राज़ी किया था, की प्रेरक कहानी को छापा, तो *रोटरी समाचार* को उसकी कहानी सुनानी पड़ी।

रोटरी क्लब चमराजनगर के रोटरियनों की मदद से, वरिष्ठ सहायक संपादक जयश्री ने सुचित्रा की प्रेरणादायक कहानी सुनाने के लिए कर्नाटक के कमाराहल्ली गाँव की यात्रा की। वह सुचित्रा जो बिल्कुल वैसा ही कर रही है जैसा WinS के वैश्विक प्रमुख और टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता कहते आये है - स्कूली बच्चों को घर में शौचालय बनाने के लिए माता-पिता पर दबाव डालकर व्यावहारिक परिवर्तन की शुरुआत करना है। कहानी काफी सरल है; सुचित्रा के दोस्त शौचालय इस्तेमाल करने के लिए स्कूल भागा करते थे क्योंकि उन्हें खुले में शौच करने में "शर्म" आती थी। कहानी सरल हो सकती है, परन्तु सुचित्रा की उपलब्धि कम नहीं है। हर शाम ऊर्जा की यह छोटी जनरेटर उसके दोस्तों के घर गयी और उनके माता-पिता से घर में शौचालय बनवाने के लिए प्रार्थना की क्योंकि यह ना केवल अस्वास्थ्यकर था बल्कि उनकी बेटियों के लिए खुले खेतों का इस्तेमाल करना असुरक्षित भी था।

उसके अनुनय ने काम किया और गाँव के सभी 20 घरों में अब शौचालय है, और इस तरंगनुमा प्रभाव से, गुन्दलुपेट तालुक, जिसमें कमाराहल्ली को मिलाकर पाँच गाँव शामिल है, अब 'खुले में शौच से मुक्त है' और अंतिम तीन घरों में शौचालय बनाने का कार्य चल रहा है। जयश्री, अत्यधिक उज्जवल एवं ज़िन्दादिल सुचित्रा, जो अपने गाँव और राज्य से बाहर प्रभाव को जन्म दे रही है, की डिंपल वाली मुस्कान से पूर्णतः अभिभूत होकर लौटी। सुचित्रा क्षेत्रीय नायिका बन गयी है; एक स्थानीय मंत्री ने उसके सम्मान में उसके स्कूल में एक पौधा लगाया है; महिला आयोग दिल्ली ने उसे रु 30,000 के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया है, और जैसे ही रोटरियन विदा लेते है, वह धीरे से उनसे एक लैपटॉप दान देने का आग्रह करती है "मेरे लिए नहीं, बल्कि मेरे स्कूल के लिए!" (पृष्ठ 22 पर उसकी कहानी पढ़िए)

उस परिवर्तन की कल्पना कीजिये जो ऐसी साहसी लड़कियाँ और लड़के भी, हमारे देश में ला सकते है, ख़ास तौर से ग्रामीण भारत में, जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। हमें भारत में कई चीज़ों को साफ़ करने की आवश्यकता है; चलिए कम से कम शारीरिक स्वच्छता से शुरुआत करें। सुचित्रा जो करती है, किसीकी सहायता के बिना...। स्वच्छ भारत के लिए कोई बड़े-बड़े मंत्र नहीं दे रही, परन्तु फिर भी इस अभियान से अनभिज्ञ होने के बावजूद वह इसकी सबसे चमकदार शुभंकरों में से एक है। निस्संदेह, और आशापूर्वक, साल दर साल, उसके अंदर के नेतृत्वकर्ता की चिंगारी, जिसे सौभाग्यवश अधिकारियों ने पहचाना एवं उसकी प्रशंसा की, एक आग का रूप लेगी जो सकारात्मक परिवर्तन लाएगी। हम इस छोटी लड़की के आभारी है, और इसके जैसे हजारों के भी जिनकी कहानियाँ हमें अक्सर सुनने को नहीं मिलती, इस बात को सुनिश्चित करने के लिए उसे उसकी योग्यता के अनुसार शिक्षा मिले। अभी तो वह डॉक्टर बनना चाहती है, परन्तु उसके बड़े होने के साथ-साथ यह सपना बदल सकता है, और वह किसी अन्य क्षेत्र के प्रति अपना रुझान दिखा सकती है। तंत्र, के साथ-साथ हमारे सामूहिक विवेक, को यह सुविधा प्रदान करनी चाहिए कि हमारे देश में ऐसे उभरते नायकों को आगे बढ़ने के लिए सभी अवसर मिल सके।

और फिर शायद, एक दिन, भारत को उसके लायक नेतृत्व की क्षमता मिलेगी, नागरिक समाज में, शासन में और राजनीति में भी।

रशीदा भगत

अध्यक्ष
की ज़बानी

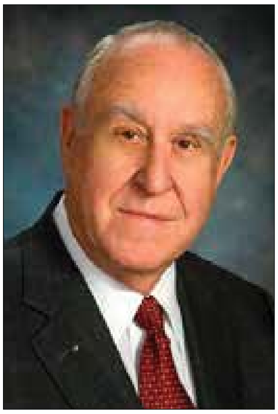

अटलांटा मे मिलेंगे

प्रिय साथी रोटरी सदस्यों,

जब आप इन पंक्तियों को पढ.रहे होंगे, तब अटलांटा में 10-14 जून तक, हमारे 108वें रोटरी अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन की अंतिम तैयारियाँ चल रही होगी। हम अभी तक सबसे विशाल और सर्वश्रेष्ठ रोटरी सम्मेलनों में से एक की प्रतीक्षा कर रहे हैं, क्योंकि हम न केवल *रोटरी मानवता की सेवा में* का एक शानदार वर्ष मनाने जा रहे हैं, बल्कि रोटरी फाउंडेशन के माध्यम से संपूर्ण विश्व में पूरी शताब्दी तक *जन-कल्याणं को निष्पादित करते रहने* का भी उत्सव मनाने जा रहे हैं।

यदि आपने पहले से ही सम्मेलन में भाग लेने की योजना नहीं बनायी है, तो *riconvention.org* पर पंजीकरण करने में अभी भी विलंब नहीं हुआ है। 40,000 या उससे अधिक साथी रोटरियनों के एक-साथ एक मंच पर एकत्रित होने, अपने विचारों को साझा करने, प्रेरणा प्राप्त करने, और एक-साथ बेहतर समय व्यतीत करने से बढ़कर रोटरी में एक और महान वर्ष के समापन का कोई अन्य बेहतर तरीका नहीं हो सकता है।

हम इस वर्ष अपने सम्मेलन में पोलियो उन्मूलन में हमारे मित्र और साथी रहे बिल गेट्स की उपस्थिति को लेकर रोमांचित है, जो सम्मेलन में उपस्थित जनसमूह को भी संबोधित करेंगे। और 9-10 जून को एक विशेष अध्यक्षीय शांति सम्मेलन में भाग लेने के लिए शीघ्र पहुंचना उचित होगा, जिसमें मार्टिन लूथर किंग जूनियर और कोरटा स्कॉट किंग की बेटी बर्निस ए. किंग जैसी प्रसिद्ध शख्सियत शामिल होंगे।

मुझे एक ऐसा सम्मेलन आयोजित करने पर गर्व है: अटलांटा एक जीवंत, आधुनिक राज्य की राजधानी है, जो मेरे ग्रह शहर चट्टनूगा, टेनेसी से सिर्फ दो घंटे की दूरी पर स्थित है, और यह दक्षिण अमेरिका के प्रसिद्ध आतिथ्य का अनुभव करने के लिए एक शानदार स्थान है। हमारी मेज़बान आयोजक समिति ने शनिवार की रात को 'ब्लू जीन्स और ब्लूग्रास' समारोह के साथ शुरू होने वाले एक बेहतर सप्ताह की योजना बनाई है।

सेन्टेनीअल ओलंपिक पार्क में आएं, जो हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप के ठीक सामने स्थित है, और ग्रेमी अवार्ड विजेता रिकी स्कैग्स और उनके केंटकी थंडर बैंड के साथ नृत्य करने के मूड में आ जाएं। सेंटेनियल सेलिब्रेशन ब्लॉक पार्टी या अटलांटा के पीस टूर में अपने नए और पुराने दोस्तों से मिलें। हैबिटैट होम बिल्ड में भाग लेने के लिए कमर कस कर तैयार हो जाएं या एन्ड पोलियो नाउ के लिए 3K वाक/रन में भाग लेने के लिए तैयार हो जाएं। और इससे पहले कि आप अलविदा कहें, एक और पार्टी हमारे फाउंडेशन के 100वें जन्मदिवस की पार्टी में भाग लेने के लिए हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप वापस आएं, और (बेशक!) इस पार्टी में लेज़ीज़ केक और आइसक्रीम तो होगा ही।

यह एक अविश्वसनीय अनुभव होने जा रहा है, और जूडी और मैं आपके साथ मिल कर उत्सव मनाने के लिए उत्सुक हैं - या, जैसा कि हम दक्षिण में कहते हैं, with y'all!! See you in Atlanta! (आपको अटलांटा में देखने के इच्छुक हैं!)

जॉन एफ जर्म
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेशा

अपनी पत्रिका की बकाया राशि का भुगतान करें

विगत कुछ दशकों में प्रिंट मीडिया अकल्पनीय परिवर्तनों के दौर से होकर गुजर रही हैं, परंतु इस माह के *रोटरी समाचार* में अपने संदेश के अनुरूप यहाँ मैं केवल पत्रिकाओं के बारे में चर्चा करूँगा। जैसा कि आप सभी जानते हैं, पत्रिकाओं के लिए वित्तपोषण की व्यवस्था आम तौर पर विज्ञापन, रैक पर बिक्री और प्रीपेड सदस्यता के संयोजन के माध्यम से की जाती है। हम जानते हैं कि बडे.पैमाने पर वितरित की जाने वाली पत्रिकाएं 1900 के बाद से आम हो गई, कुछ पत्रिकाओं के सैकडों हजारों सदस्य बन गए। कुछ पत्रिकाओं के लिए सदस्यता का आकड़ा 1920 के दशक में लाखों के निशान पार कर गया। यह मास मीडिया का युग था और विज्ञापनदाताओं के सहयोग से, संपूर्ण विश्व में पत्रिकाओं की कीमतें बहुत कम हो गई।

परंतु मुद्रित पत्रिकाओं के लिए समय कठिन होता जा रहा है। न्यू यॉर्क स्थित प्रकाशक ऑक्सब्रिज कम्युनिकेशंस के अनुसार, वर्ष 2008-2015 के मध्य 227 पत्रिकाएं शुरू की गई; और वर्ष 2012 में उत्तरी अमेरिका में 82 पत्रिकाएं बंद हो गई। इसके अतिरिक्त, MediaFinder.com के मुताबिक, वर्ष 2014 के पहले छह महीनों के दौरान 93 नए पत्रिकाएं शुरू की गई जबकि इसी अवधि के दौरान 30 पत्रिकाएं बंद हो गई। आंकडों के अनुसार, वर्ष 2013 के अंत तक, शीर्ष 25 पत्रिकाओं में से 22 के सदस्यता स्तर में गिरावट दर्ज की गई, केवल *टाइम, ग्लैमर* और *ईएसपीएन ध मैगज़ीन* की सदस्यता संख्याओं में वृद्धि दर्ज की गई।

इन आकडों पर एक नजर डालने पर, मुझे आश्चर्य होता है - *रोटरी समाचार* पर क्या हम आने वाले समय के लिए तैयार है? हाँ, हमारे पास हमारा ऑनलाइन ई-संस्करण भी उपलब्ध हैं। तो क्या *रोटरी समाचार* की लोकप्रियता प्रभावित हुई है? इस प्रश्न का उत्तर सकारात्मक शब्दों में हाँ है; यह निरंतर मजबूत होती गई है, विशेष रूप से विगत तीन वर्षों के दौरान। हमें खुले हृदय से रशीदा और *रोटरी समाचार* के सभी कर्मचारियों को उनके शानदार काम के लिए बधाई देना चाहिए।

परंतु क्या आप सभी हमारी एक बड़ी समस्या से परिचित है? *रोटरी समाचार* के बकाए राशि का भुगतान समय से नहीं किया जा रहा है और कई मंडलों के पिछड़ने के साथ बकाएं की कुल राशि रू 40 लाख के आकड़े को पार कर चुकी है? यह एक गंभीर मामला है। कुछ लोगों ने मुझे बताया कि चुनाव पायलट मंडल 5 और मंडल 7 बेहतर थे, और उन दिनों सभी क्लब अपनी पत्रिका के बकाए राशि का भुगतान समय से कर रहे थे? क्या हम केवल कानून द्वारा शासित होते है... और वह भी केवल चुनाव के दौरान?

दोस्तों, रोटरी अखंडता के साथ 'आमंत्रित लोगों' की एक समाज नहीं है? जरा अपनी अंतरात्मा से पूछिए कि क्या आप उन 4-मार्गी परीक्षण का अनुसरण कर रहे हैं, जिसका उच्चारण आप प्रत्येक बैठक के दौरान करते हैं।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि यथाशीघ्र *रोटरी समाचार* के बकाए राशि का भुगतान करें। मैं जानता हूँ कि मेरे संदेश को कई वरिष्ठ नेता भी पढ़ेंगे। लेकिन तथ्य यह है कि हमें अपनी पत्रिका, *रोटरी समाचार*, को सशक्त बनने और सुधार करने की प्रक्रिया जारी रखना चाहिए। आइए हम *टाइम, ग्लैमर* और *ईएसपीएन ध मैगज़ीन* की ऊंचाई तक पहुंचने का प्रयास करें। और कृपया याद रखें, कम से कम एक रोटरी पत्रिका - *ध रोटेरियन* या किसी क्षेत्रीय पत्रिका की सदस्यता अनिवार्य है।

मैं आपसे अपने क्लब के बुलेटिन संपादक की सराहना करने के लिए भी अपील करता हूँ क्योंकि इन प्रकाशनों के लिए बहुत अधिक प्रयास और कडी मेहनत की आवश्यकता होते हैं। और कृपया *रोटरी समाचार* के बकाए राशि का भुगतान करने और एक सच्चे रोटेरियन बनने के मेरे अनुरोध पर ध्यान दें। धन्यवाद सहित!

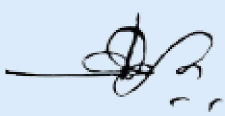

मनोज देसाई
निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

100 वर्षों से संसार को बेहतर बनाने का निरंतर प्रयास

जैसे कि हम रोटरी फाउंडेशन की 100वीं वर्षगांठ के अपने उत्सव के समापन की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं, आइए हम सभी कुछ क्षणों के लिए रुके और सोच-विचार करें कि यह दुनिया कैसी होती, अगर रोटरियनों ने दुनिया में लोक-कल्याण के लिए एंडॉवमेंट फंड का गठन नहीं किया होता।

मेरे विचार में, हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि रोटरी के ऐतिहासिक पोलियो प्लस कार्यक्रम के बिना, दुनिया पोलियो को जड़-मूल से उन्मूलित करने के प्रयास में सफल नहीं होती। हालांकि सार्वजनिक स्वास्थ्य अधिकारियों और सरकारों ने नियमित टीकाकरण के लिए प्रयास किया होता, यह रोटरी का नेतृत्व और समर्थन ही था जिसने रोकथाम से आगे बढ़ते हुए इस विषाणु के वैश्विक उन्मूलन को आगे बढ़ाने में हर संभव सहयोग किया।

और आइए हम अन्य बीमारियों पर विचार करें जिसके प्रसार की रोकथाम और उपचार हमारे फाउंडेशन के अनुदान परियोजनाओं के माध्यम से स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ, स्वच्छ पेयजल और पर्याप्त स्वच्छता उपलब्ध कराते हुए किया गया। मलेरिया, हैजा, एचआईवी / एड्स, गिनी कीडा - बीमारियों की यह सूची बहुत लंबी है। हजारों-हजार लोग पीड़ित होने से और यहाँ तक कि मौत के मुँह में जाने से बच गए क्योंकि रोटरियनों ने परियोजनाओं को निष्पादित किया?

फाउंडेशन के सहयोग के बिना, बहुत से लोग निरक्षर ही रहते और कई अन्य लोगों के पास व्यावसायिक कौशल नहीं होता, जो जीवन जीने के लिए और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए उपलब्ध कराया गया।

और उसके बाद शांति की हमारी खोज अतुलनीय है। वर्ष 2002 में, प्रथम शांति फेलो ने रोटरी शांति केंद्रों में कक्षा लेना शुरू किया। आज हमारे सैकडों स्नातक संघर्ष को रोकने तथा उनकी मध्यस्थता करने के लिए अपने कौशल का उपयोग कर रहे हैं, साथ ही उन लोगों की भी सहायता कर रहें है जिनका जीवन युद्ध से तबाह हो गया है।

संपूर्ण विश्व भर के गाँवों में, आपको रोटरी फाउंडेशन परियोजनाओं की पहचान करने वाले सैकडों चिन्ह देखने को मिल जाएंगे। उन्हें कुएं के पास स्थापित किया गया हैं और क्लीनिकों और स्कूलों पर चिपकाया गया हैं। जब मैं इन चिन्हों में से किसी एक को देखता हूँ, तो मुझे एक रोटरियन होने पर गर्व महसूस होता है और मैं सोचता हूँ, "मेरे योगदान से इस कार्य को पूरा करने में मदद मिली।"

आइए हम इस तथ्य को कभी नहीं भूलें कि इन चिन्हों में से प्रत्येक के पीछे उन लोगों की कहानी है जिनके जीवन को बेहतर परिवर्तन के माध्यम से स्पर्श किया गया है और शायद उन्हें बचाया भी गया है। यह उनकी कहानियाँ हैं, जो इस तथ्य को रेखांकित करता है कि आज रोटरी फाउंडेशन के कारण दुनिया कितनी बेहतर बन चुकी है।

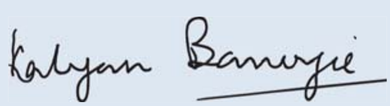

कल्याण बेनर्जी
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

कैंसर की देखभाल में गुणवत्ता मामले

पूर्व की अपेक्षा अधिक बच्चे कैंसर से जीवित बच रहे हैं। अधिकांश प्रकार के कैंसर पूर्ण रूप से ठीक किए जा सकते हैं किंतु या तो उसके लिए अधिक सुविधाएँ सज्जित नहीं थीं अथवा लोग सजग नहीं थे। कारण भिन्न थे, कुछ मरीज विशिष्ट और कुछ तुच्छ थे। उदाहरण के लिए, अस्पताल तक जाने के लिए धन न होना अथवा यहाँ उनका साथ देने के लिए कोई नहीं, ऐसा नहीं कहा जाना कि बीमारी चार अथवा पाँच मुलाकातों में पूर्ण रूप से ठीक की जा सकती है, इत्यादि।

आँकड़े खुलासा करते हैं कि प्रत्येक वर्ष हमारे राज्य में लगभग 6000 से 8000 बच्चों में कैंसर की पहचान होती है। हमारे राज्य में ठीक होने की समग्र दर का आकलन 10% किया जाता है जब विश्वव्यापी मानक 90% से तुलना की जाती है।

उन बच्चों में से 40% BPL से संबंध रखते हैं। कैंसर का उपचार बहुत महँगा है और इन लोगों के लिए वहनीयता के परे है, जिसका परिणाम मृत्य होता है। वंचित वर्ग के बच्चों के पास कोई साधन अथवा वित्तीय सहायता नहीं होती है। बसावर्तकम इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट (BIACHRI) आप जैसे संरक्षकों के उदार दानों के माध्यम से निशुल्क उपचार प्रदान करने के पदों में ऐसे लोगों की सहातया करता है। उपचार में आवश्यकता के आधार पर कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और सर्जरी सम्मिलित होती है।

हम कैंसर से लडने वाले बच्चों की देखभाल को सुधारने के लिए हमारे प्रयास में आपकी उदार सहायता की वास्तव में प्रशंसा करते हैं। आपका योगदान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत खढ लाभों का पात्र है।

प्राप्त दानों का खाता पृथक रूप से रखा जाता है और उल्लेखित उद्देश्य के लिए न्यायपूर्वक खर्च किया जाता है

हम रु 50,000 और अधिक के दानदाताओं को स्वयं और दंपत्ति के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक, रु 25,000/- और अधिक के दानदाताओं को स्वयं के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक और रु 10,000/- हम स्वयं के लिए कैंसर जाँच पर 10% छूट प्रदान कर रहे हैं।

समय निर्धारण के लिए कृपया संपर्क कीजिए +91 95537 98500, +91 98493 98879

For those using EFT/ NEFT/ RTGS payment System INR donations to the following Bank Account.
Name of the Account: **Smt. Nandamuri Basavataraka Rama Rao Memorial Cancer Foundation Corpus Fund A/c.**
Bank Account No.: **151411100000070**
Name & Address of the Bank: Andhra Bank, Road No.14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034
MICR Code No.: 500011118 | IFSC Code No.: ANDB0001514 | SWIFT Code: ANDBINBB
You can also pay Online or with your Credit Card. Visit our **www.induscancer.com**

Please download form from our website and send in duly filled along with your cheque/ DD to the below address

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN CANCER HOSPITAL & RESEARCH INSTITUTE

Dept. of Corporate Affairs and Strategic Alliance
BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN
CANCER HOSPITAL AND RESEARCH INSTITUTE
Promoted by Smt. Nandamuri Basavataraka Ramarao Memorial Cancer Foundation and Indo-American Cancer Organisation
Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034 India T: +91 40 2355 1235 Ext. 2315

WINNER 2015
CNBC TV18 & ICICI LOMBARD India Healthcare Awards, 2014
Best Single Speciality Hospital "ONCOLOGY"
Amongst India's 15 Best Cancer Hospitals
The WEEK-NIELSEN Survey, 2013 & 2014

www.induscancer.com **Toll-free: 1800 4253 6666**

14th JJS JAIPUR JEWELLERY SHOW
Ruby
...Red, Rare, Royal
the December show
JECC, JAIPUR
22-25 DECEMBER 2017
JAIPUR JEWELLERY SHOW
Gold Souk, TF-01, Third Floor, Adjoining Hotel Lalit, Jawahar Circle, Jaipur – 302017, Tel.: +91 141 4035900 / 2725648
E-info@jaipurjewelleryshow.org W-www.jaipurjewelleryshow.org

Häcker

kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000

E-mail: info@hacker-kitchens.com

Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

जहाँ जरूरत वहाँ मैं

रशीदा भगत

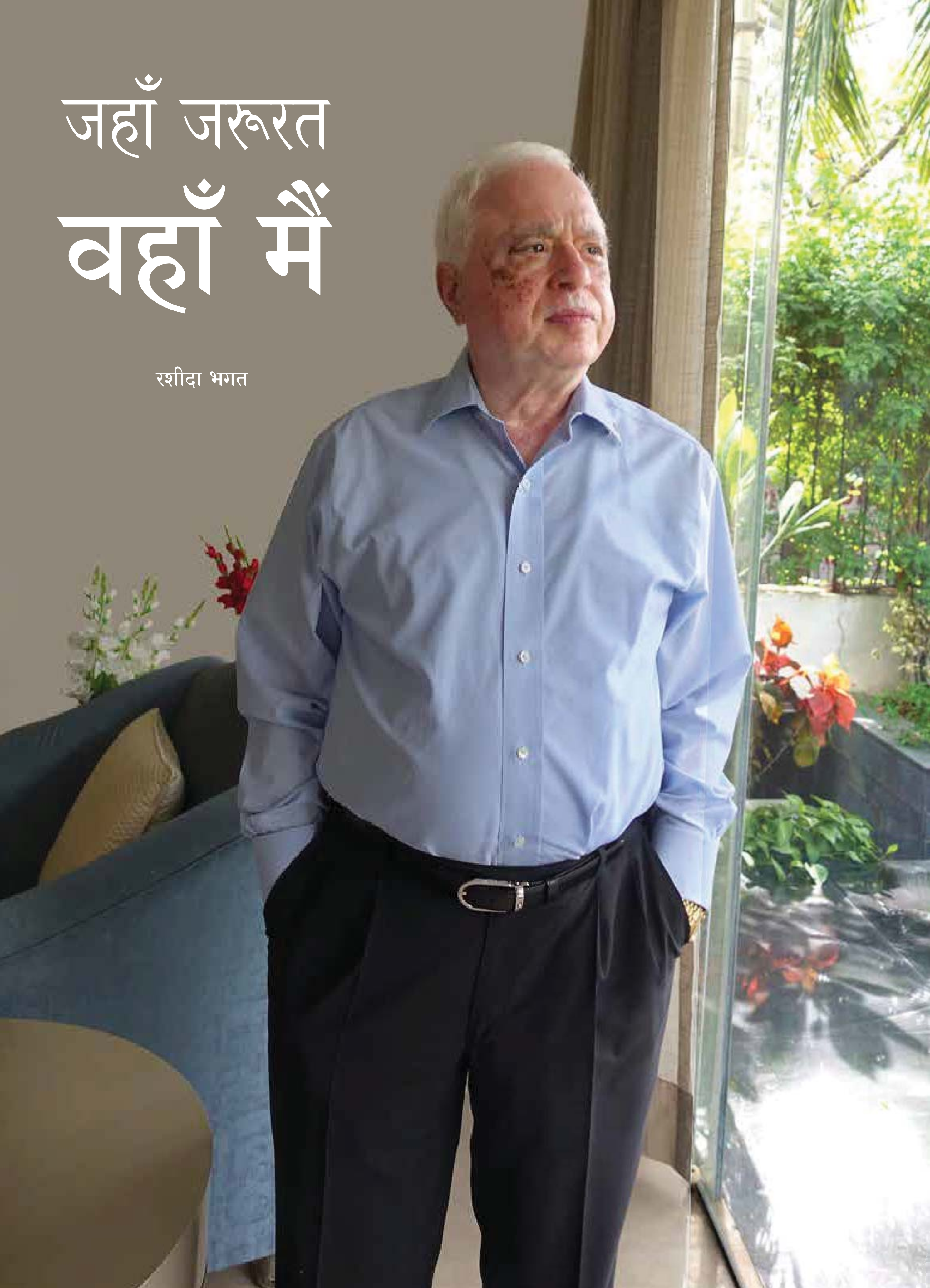

रोटरी फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने *रोटरी समाचार* के साथ बातचीत में अपने अनूठे जीवन के विभिन्न पहलुओं पर खुलकर की चर्चा।

विनीता के साथ 1967 में दिल्ली पालम एयरपोर्ट के बहार।

मैं ने 90 के दशक के शुरू में ही महसूस कर लिया था कि पानी" एक दिन पूरी दुनिया के लिए चिंता का गंभीर विषय बनेगा, तभी से इस दिशा में काम शुरू कर दिया और 2003 में नई दिल्ली में एक विशाल जल-सम्मेलन' का आयोजन किया।"यह कहना है, जल-संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाले सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता रोटरी फाउण्डेशन के ट्रस्टी सुशील गुप्ता का।

उन्होंने पानी' को रोटरी के प्लेटफार्म पर प्रमुख मुद्दे के रूप में स्थापित कर दिया।

सुशील गुप्ता को पहाड़ों से बहुत प्यार है। कई बार गौमुख ग्लेशियर की यात्रा कर चुके हैं। ग्लेशियर के प्रवाह में आ रही गिरावट से उन्हें बहुत निराशा भी है। वे हिमालय पर्यावरण ट्रस्ट (HET) के उपाध्यक्ष रह चुके हैं और हाल ही उनके नेतृत्व में रोटरी ने गंगा नदी को स्वच्छ करने की महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए भारत सरकार के साथ समझौता-पत्र (MOU) पर हस्ताक्षर किये हैं।

"रोटरी की दुनिया में मेरा पानी के प्रति रूझान जग जाहिर हैं। जब मैं 2014 में रोटरी फाउण्डेशन का ट्रस्टी बना तो, फाउण्डेशन के निर्वाचित अध्यक्ष जॉन केनी ने जल-सरंक्षण में मेरी रूचि को देखते हुए मुझे WASH in Schools(WinS) समिति का अध्यक्ष बनने को कहा। इस तरह WinS जो केवल पानी से जु कार्यक्रम नहीं है, उसकी जिम्मेदारी मेरी गोद में आ गिरी, और मुझे जो जिम्मेदारी दी जाती है, मैं उसे अपना शत-प्रतिशत देता हूँ और पूर्ण रूप से पूरा ध्यान उसी पर रखता हूँ।"

नई दिल्ली के शांति निकेतन में स्थित अपने विशाल घर के खूबसूरत लैंडस्कैप वाले लॉन में सुशील गुप्ता ने ये बातें कहीं। उनकी धर्मपत्नी विनीता भी साथ थी। इस लॉन को उनके पुत्र संदीप ने बहुत ही प्यार से सजाया संवारा है।

प्रारंभिक जीवन

गुप्ता का जीवन विविधताओं से भरा है। अमृतसर में उनका जन्म हुआ। वे व्यापारिक और स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार से हैं, जिनके गहरे राजनीतिक सम्बन्ध हैं। उनका कहना है "हमारा परिवार राष्ट्रवादी परिवार है।" उनका पैतृक व्यवसाय हार्डवेयर का था, जो 1860 में शुरू हुआ। गुप्ता कहते हैं विभाजन के पश्चात हमें पूरा व्यापार दिल्ली लाना पड़ा, क्योंकि अमृतसर सीमावर्ती शहर बन गया था। दिल्ली, अमृतसर की जगह उत्तरी भारत का महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र बन गया। हमारा प्रमुख व्यापार कराँची में था, जिसे हमें खोना पड़ा'' हालाँकि बाद में परिवार दुबारा अमृतसर आकर रहने लगा, जहाँ उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी।

युवावस्था में मसूरी की यात्रा के दौरान एक होटल में जब उन्होंने

(बाएं से) PRIP कार्ल-विल्हेल्म स्टेनहाम्र, प्रेजिडेंट APJ अब्दुल कलम और PRID फ्रांसिस्को क्रेओ के साथ।

Rotary Meets Here का बोर्ड देखा, तो उनके मन में रोटरी के प्रति जिज्ञासा पैदा हुई। उनके साथ टेनिस खेलने वाले एक खिलाड़ी दोस्त ने उन्हें रो. प्रकाश खन्ना से मिलवाकर उनकी रोटेरियन बनने की ख्वाहिश को पूरा किया। सुशील गुप्ता ने रोटरी क्लब नई दिल्ली मिडवेस्ट की सदस्यता ग्रहण की। इस क्लब को 1975 में चार्टर मिला था और उसे सदस्यों की जरूरत थी। एक चिंतन शील टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा हमेशा एक निश्चित रूपरेखा होती है, जहाँ जिन्दगी आपको लेकर जाती है। एक छोटा क्लब होने के कारण मैं 1981-82 में ही अध्यक्ष और 1986-87 में गवर्नर बन गया। यदि मैं रोटरी क्लब दिल्ली का सदस्य बनता तो मुझे अध्यक्ष बनने में 20 वर्ष लग जाते, गवर्नर बनना तो दूर की बात है।''

एक गौरवान्वित रोटेरियन की तरह वे नियमित रूप से रोटरी पिन लगाते हैं। पहले दिन से ही "मैं रोटरी पिन अपनी घड़ी और अँगूठी के साथ रखता हूँ और रोटरी पिन को शान से पहनता हूँ।" सुशील गुप्ता का कहना है कि पिन पहनने का लाभ यह है कि भी में भी उन्हें दूसरे रोटरी साथी पहचान लेते हैं।

पोलियो उन्मूलन

सुशील गुप्ता पोलियो उन्मूलन के लिए किये गये कार्य को अपने "रोटरी कैरियर का विशिष्ट आकर्षण" मानते हैं। वे पोलियो उन्मूलन अभियान में उस शुरूआती समय से जुड़े हैं, जब जनवरी, 1987 में पोलियो उन्मूलन को लेकर देश का पहला कार्यक्रम 'पोलियो मिटाओ मार्च' राष्ट्रपति भवन से निकाला गया था। इस मार्च को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिंह ने तत्कालीन रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष मैट कपारास और मनोनीत रोटरी निदेशक सुदर्शन अग्रवाल की उपस्थिति में झण्डी दिखाकर रवाना किया था।

विनीता के साथ दुबई जोन इंस्टिट्यूट के TRF डिनर में।

गुप्ता कहते हैं "जब रोटरी ने पोलियो टीकाकरण के लिए भारत सरकार को 19 मिलियन डॉलर दान देने के लिए सम्पर्क किया, तो मुझे 6 महिने लग गए। लेकिन मैने किसी न किसी तरह के उस नुकसान रहित अनुबंध पर सरकार के हस्ताक्षर प्राप्त करने में सफलता हासिल की, जिसमें रोटरी को विभिन्न दायित्वों से मुक्त रखा गया।"

रोटरी फाउण्डेशन के इस ट्रस्टी ने कई संकटकालीन अवसरों पर भारत के लिए 'रोटरी के दरवाज़े' खोले हैं। रोटरी फाउण्डेशन के अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी अधिकांशतः उनका परिचय 'लीक से हटकर सोचने वाले' व्यक्तित्व के रूप में देते हैं। गुप्ता मुस्कुराकर कहते हैं, मेरा दिल्ली में रहना, होटल व्यवसाय करना टेनिस और गोल्फ में रूचि रखने ने मुझे ऐसा करने में मदद की है। (देखें बॉक्स)।

वर्ष 2005 में रोटरी इन्टरनेशनल के निदेशक और कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने रोटरी एक्शन समूहों को रोटरी इन्टरनेशनल बोर्ड से स्वीकृति दिलाने में अहम भूमिका निभाई। गुप्ता ने बताया कि प्रारंभ में रोटरी एक्शन समूहों को लेकर बहुत लोग विरोध में थे। उनका मानना था कि ये रोटरी फाउण्डेशन से प्रतिस्पर्द्धा करेंगे, लेकिन अब ज़मीनी स्तर पर इनकी स्वीकार्यता हो गई है और आज बहुत सारे सक्रिय रोटरी एक्शन समूह' हैं, जिनमें से अधिकांश पानी' और स्वच्छता' के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

वर्ष 1978-79 में सुशील गुप्ता की मुलाकात रोटरी इन्टरनेशनल

एक नजर में

भोजन: खाना खाने के मामले में मैं बहुत चयनशील हूँ और मैं केवल बेसिक खाना नहीं खा सकता। यदि मुझे कोई चीज पसन्द नहीं है तो वह (पास बैठी अपनी धर्मपत्नी विनीता की तरफ संकेत करते हुए) भी मुझे खाने के लिए मजबूर नहीं कर सकती। आतिथ्य व्यवसाय ने खाने को लेकर मेरे स्वभाव को बदल दिया। मुझे इटालियन' और फ्रेंच खाना बहुत पसन्द है, लेकिन बाकी यूरोपीयन देशों का भोजन मुझे पसन्द नहीं है। उन्होंने बताया कि भारत में पर्यटन क्षेत्र के उन्नयन के लिए गठित 'एक्सपीरीयंस इंडिया सोसाइटी' के लम्बे समय से अध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहते हुए हाल ही हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की हनोवर यात्रा के दौरान मैं वहां 42 लोगों की टीम लेकर गया, जिन्होंने जर्मनी के 3 हजार मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (CEOS) के लिए अनेक प्रकार के भारतीय व्यंजन तैयार किये। गत वर्ष हमने मुंबई में आयोजित 'मेक माइ इंडिया मेगा मीट' के लिए भी भोजन तैयार किया। इन व्यवसाय के साथ मेरे सम्बन्ध बहुत प्रगा है।

अचानक उनकी सहधर्मिणी विनीता बीच में टोकते हुए बोलती हैं "आधी चीजें खाते नहीं। अपनी प्लेट में उन्हें अलग-अलग रंग चाहिए और जब उनसे पूछा जाता है कि डिनर में क्या लेंगे, तो कहेंगे कि वो भी मैं सोचूं"... अरे आपको खाना है, ... और जो भी कुछ तैयार है, उसे आप खायेंगे नहीं ... यह भी ग्रीन', वो भी ग्रीन' कहकर विरोध करेंगे। गुप्ता बीच में टोकते हैं, "मुझे पता है खाने के मामले में मैं बहुत मीन-मेख निकालता हूँ।"

संगीत: मुझे सूफी संगीत और पुराने गाने बहुत पसन्द हैं, लेकिन आजकल के फिल्मी गाने नहीं।

अध्ययन: जब समय मिलता है तब उपन्यास पता हूँ। इतिहास से सम्बन्धित कोई भी किताब मुझे बहुत रूचिकर लगती है क्यों की वह मुझे उस युग में ले जाती है। मानसिक रूप से मैं वहां होता हूँ और ऐसा ही आभास तब होता है। जब मैं ऐतिहासिक स्थलों पर जाता हूँ, मेरा दिमाग 1000-2000 वर्ष पहले चला जाता है।

सिनेमा: कभी नहीं। मुझे पसन्द नहीं है।

धर्म-कर्म: मैं बहुत धार्मिक हूँ, लेकिन बहुत उन्मुक्त भी हूँ। मैं चाहे चर्च में जाऊँ या मस्जिद में, मुझे समान अनुभूति होती है। मैं भगवान में विश्वास करता हूँ लेकिन प्रतिदिन मन्दिर में नहीं जाता और ना ही कर्मकाण्ड करता हूँ।

तंदरूस्ती (फिटनेस): मैं योगाभ्यास करता हूँ और प्रतिदिन गोल्फ खेलता हूँ।

आराम-विश्राम: (मुस्कुराते हैं,) विनीता हमेशा कहती है कितना कुछ करोगे ... इधर भागोगे, उधर भागोगे।''

कपड़ों के प्रति रूचि: (मंद मंद हंसते हैं) जब तक मेरे पिताजी थे, तब तक वे मेरे लिए सारी खरीददारी करते थे, मेरे सूट लाते थे, अब विनीता यह सब करती है, और हमेशा शिकायत करती है कि आपके पास पर्याप्त कपड़े नहीं है।' लेकिन मैं इतना फैशन-पसन्द नहीं हूँ। कुछ भी पहनकर कहीं भी जा सकता हूँ। विनीता ने बात काटते हुए कहा "ये जब शापिंग के लिए बाहर जायेंगे तो केवल गोल्फ के कपडे खरीद कर लायेंगे ... ट्राउजर्स, टी-शटर्स, शूज़... अब क्या गोल्फ के कपडे पहनकर पार्टी में जा सकते हैं? और पूछते है, कुर्ता-पायजामा पहन लूँ?"

सलाहकार और दोस्त: मेरे रोटरी जीवन के प्रारंभ में वर्ष 1978-79 में मैं पूर्व रोटरी निदेशक मनचंदा और पूर्व निदेशक सुदर्शन अग्रवाल से मिला। रोटरी को और उसके मूल्यों के बारे में समझाने में उन्होंने मुझे बहुत मदद की। उनसे रोटरी के बारे में बहुत कुछ सीखा, बहुत अवसर मिले तथा नेतृत्व करने में सहभागिता निभाई। वर्ष 1986 में कल्याण बेनर्जी और सुदर्शन अग्रवाल से मित्रता हुई। मैने अपनी मित्रता के साथ कभी समझौता नहीं किया। एक दोस्त गलत काम कर सकता है, पर मैं नहीं करूंगा, और वह सदैव मेरा दोस्त रहेगा।''

फिलासफी: जिन्दगी में कभी भी पीछे मुड़कर मत देखो, आज में जिओ और धारा के साथ चलो।''

विनीता की भूमिका: उसने सदा मेरा सहयोग किया, मेरा अनुसरण किया। वह एक सहृदयी महिला है। वह किसी भी परियोजना में सक्रिय भागीदारी तो नहीं कर सकती, लेकिन उन्होंने हमेशा एक सहयोगात्मक भूमिका निभाई है।

महत्वपूर्ण सदाचार (ETHIC): मेरे माता-पिता हमेशा एक बात पर जोर देते थे, और वह एक बात थी "कभी झूँठ मत बोलो" कई बार मैं चुप रह जाता हूँ लेकिन मैने कभी झूँठ नहीं बोला। इसके लिए मैं अपने माता-पिता का अहसानमंद हूँ।

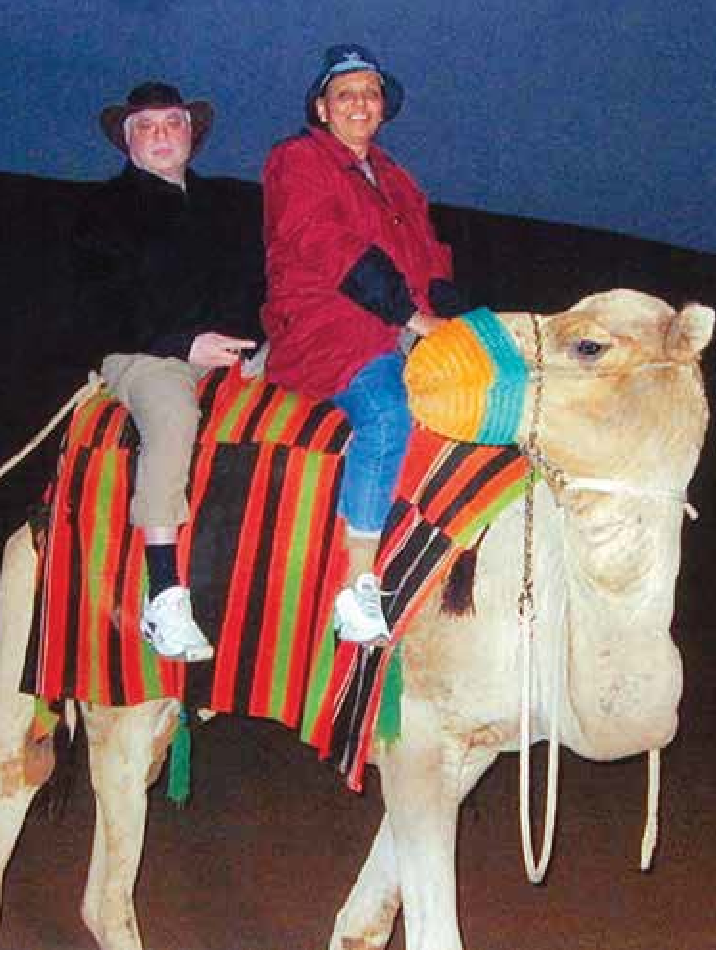

> हिमालय ने मुझे हमेशा आकर्षित किया है। मुझे वहाँ बहुत ही अद्भुत महसूस होता है।

निदेशक मनोहर लाल मनचन्दा से हुई। गुप्ता कहते हैं "मेरी रोटरी यात्रा में उन्होंने बहुत मदद की। उनसे और रोटरी इन्टरनेशनल के पूर्व निदेशक सुदर्शन अग्रवाल से मैने रोटरी के बारे में बहुत कुछ सीखा। वर्ष 1986 में मेरा परिचय कल्याण बेनर्जी से हुआ और हम बहुत अच्छे दोस्त बन गये। रोटरी के इस सफर में मुझे बहुत मित्र मिले और मुझे उनकी मित्रता पर गर्व है।"

आतिथ्य व्यवसाय

जब मैने उनसे पूछा आप होटल व्यवसाय में कैसे आये, गुप्ता ने कहा मैं अक्सर कहता हूँ कि रेस्टोरेन्ट, फिल्म उद्योग आदि के प्रति हम पंजाबियों में एक स्वाभाविक हुनर है। हम हमेशा ग्लैमर का एक हिस्सा बने रहते हैं। इसलिए 1980 में एक अवसर आया और मैने उसे साहसपूर्वक हासिल कर लिया, जबकि मुझे होटल व्यवसाय का कोई अनुभव और ज्ञान नहीं था।, यह एशियाई खेलों से पहले की बात है। उन्होंने "दो साझेदारों के साथ मिलकर नीलामी में भाग लिया और परिणाम स्वरूप एशियन होटल्स का जन्म हुआ।"

अपने जीवन के सिद्धान्त पहले मुझे समझाइये' के अनुसरण में उन्होंने होटल व्यवसाय में उतरने के बाद इस उद्योग को जानने समझने के लिए बहुत मेहनत की। गुप्ता बताते हैं "मैं बहुत व्यावसायिक और सक्रिय इंसान हूँ। हमारी कम्पनी निजी क्षेत्र की ऐसी पहली कम्पनी थी जिसे 1982 में 11 लाख यूरो का ऋण स्वीकृत हुआ। इसका कवरेज दूरदर्शन न्यूज पर भी हुआ।"

इस तरह प्रथम होटल हयात रीजेन्सी' का उद्भव हुआ, जहाँ एशियाई खेलों के लिए प्रारंभ में 200 कमरे खोले गये और बाद में 520 कमरों तक वृद्धि की गई। उनका कहना है, मेरा उद्देश्य सदैव लक्ष्य हासिल करने का रहा है और मैं मूल्यों के साथ कभी समझौता नहीं करता। यहाँ तक कि जब हमने नई दिल्ली हवाई अड्डे के पास जे. डब्लू मेरियट होटल खोला तब भी बहुत सारी कठिनाइयाँ आई, लेकिन मैने संघर्ष किया। मैने अधिकारियों से कहा होटल तो खुलेगा जरूर, बताइये करना क्या है? और मैं कहता हूँ कि किसी ने भी कुछ माँग नहीं रखी। इस उद्योग के बारे में जो कुछ भी सीखा' भ्देके व्द सीखा। जब गुप्ता फैडरेशन और होटल्स एण्ड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष बने तो उन्होंने 1997 में अमेरिकन होटल्स एंड मोटल्स एसोसिएशन से उक (Certified Hotel Administration) की डिग्री हासिल की।

ट्रेकिंग

सुशील गुप्ता को पहों के प्रति गहरा लगाव उन्हें उनके पिता से विरासत में मिला है। उनमें टेक्रकिंग के प्रति जबर्दस्त जुनून है और वे दिग्गज पर्वतरोही रेन्होल्ड मेसनर के साथ ट्रेकिंग कर चुके हैं। पर्यावरण के लिए कुछ करने की ललक के चलते वे हिमालय पर्यावरण ट्रस्ट (HET) से जुड़े। सर एडमंड हिलेरी इस ट्रस्ट के

ऊपर: ग्रेट वाल ऑफ़ चाइना में एक ऊंट की सवारी ।

दाएं: हिमालय में त्सोम्गो झील, सिक्किम में येक पर सवारी ।

गोल्फ ने पोलियो संकट के समय मदद की

पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता और प्राणिक इलाज के साथ-साथ सुशील गुप्ता गोल्फ के लिए भी समर्पित हैं जिसे वे प्रतिदिन प्रातः खेलते हैं। वे कहते हैं, "पहले मैं टेनिस खेलता था, लेकिन अब गोल्फ, और इसने मुझे बहुत मित्र दिए हैं, जैसे रोटरी ने दिए। वास्तव में मेरे बहुत सारे गोल्फ दोस्त अब रोटेरियन बन चुके हैं।"

करीब 45 मिनट के योगाभ्यास और प्रार्थना के बाद 9 होल के गोल्फ खेल का नम्बर आता है। सुबह-सुबह इतना समय निकालते पर वे प्रतिक्रिया देते हैं समय मन की अवस्था है, "यदि आप समय निकालना चाहते है, तो निकाल सकते हैं।"

सुशील गुप्ता ने भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जस्टिस वी.एन. कृपाल के साथ कई वर्षो तक गोल्फ खेला है। उन्होंने बताया कि हमने बीस वर्ष तक प्रतिदिन गोल्फ खेला और पर्यावरण से सम्बन्धित मुद्दों पर हमेशा चर्चा की। वे वास्तव में ग्रीन जज' थे। हालांकि लोग जस्टिस कुलदीप सिंह को भी यही कहते हैं। जस्टिस कृपाल ने असम और उत्तर-पूर्वी राज्यों में पे काटने पर पाबन्दी लगा दी थी। यदि मैं रोटरी में दरवाज़ों को खोल पाया तो उसका सीधा श्रेय गोल्फ और टेनिस को जाता है जिन्होंने मुझे आतिथ्य-व्यवसाय की तरह प्रभावशाली तरीके से मदद की। खेलों और आतिथ्य-व्यवसाय दोनों के लम्बे समय चले सम्बन्धों के कारण रोटरी के लिए दरवाजे खोलने में मुझे बहुत मदद मिली, विशेषकर पोलियो उन्मूलन अभियान में।

गुप्ता ने एक प्रसंग सुनाते हुए बताया कि किस तरह 2003-04 में जब वे रोटरी निदेशक थे, तब पोलियो उन्मूलन के अभियान में बहुत कठिनाईयों का सामना करना पा। उन्होंने कहा, "हमारे सामने बड़ी विकट समस्या थी, पोलियो मरीजों की संख्या बती जा रही थी और हमें लग रहा था कि भारत से पोलियो कभी भी दूर नहीं किया जा सकेगा और वास्तव में हम दरवाजे खोलने के लिए संघर्ष कर रहे थे।" उत्तर प्रदेश में बहुत दिक्कतें थी, जहां पोलियो टीकाकरण में भी लोगों की रूचि बिल्कुल कम होती जा रही थी। लेकिन गुप्ता के एक गोल्फर दोस्त ने उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव डी.एस. बग्गा को फोन किया। गुप्ता बताते हैं, हम दोनों उनसे मिलने साथ-साथ गये और उसके बाद एकदम से उत्तर प्रदेश सरकार पूरी तरह से सक्रिय हो गई।

दूसरी समस्या तब उत्पन्न हुई जब भारतीय रेलवे ने पोलियो के टीकों के परिवहन तथा रेलवे प्लेटफार्मो पर पोलियो टीकाकरण बूथ लगाने के लिए मना कर दिया। गुप्ता ने बताया दिल्ली गोल्फ क्लब में सुबह कुछ सरकारी अफसर और अन्य लोग गोल्फ खेलते हैं, वहाँ मैने बहुत सारे दोस्त बना लिए थे। मैने मेरे एक दूसरे दोस्त को फोन किया जो रेलवे से रिटायर्ड हुए थे। उन्होंने रेलवे बोर्ड के एक सदस्य को फोन किया जो माल-परिवहन व्यवस्था के प्रभारी थे। उन्होंने तुरन्त मुलाकात का समय दिया और काम हो गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अधिकारी आज भी जब कहीं मिलते हैं, और भारत में पोलियो उन्मूलन अभियान की बात करते हैं, तो इस तरह के कई संस्मरणों की चर्चा करते हैं।

यहाँ तक कि एक ओर समस्याग्रस्त क्षेत्र, बिहार में भी उन्होंने तत्कालीन राज्यपाल सरदार बूटा सिंह से सम्पर्क किया, जो गुप्ता से भलीभांति परिचित थे। बाद में उन्होंने मुख्यमंत्री नीतिश कुमार से भी मुलाकात की। गुप्ता ने बताया "उन वर्षो में बिहार में भी बहुत ही मुश्किल समय था,हमें बहुत काम करना पा और मैं भारत को पोलियो मुक्त करने के अभियान का हिस्सा था। मेरा कार्य विविधता भरा है, लेकिन जहां कहीं भी मेरी जरूरत है, मैं वहां हूँ, भले ही यह रेलवे प्लेटफार्म हो।"

खेलों और आतिथ्य-व्यवसाय दोनों के लम्बे समय चले सम्बन्धों के कारण रोटरी के लिए दरवाजे खोलने में मुझे बहुत मदद मिली, विशेषकर पोलियो उन्मूलन अभियान में।

मुख्य संरक्षक रहे थे। गुप्ता ने गंगोत्री संरक्षण परियोजना की शुरूआत की। गुप्ता बताते हैं वहाँ वनों की जबर्दस्त दुर्दशा हो रही थी। लोग भोजपत्रों को आग जलाने के काम में ले रहे थे। "हमने वहाँ की बहुत यात्रा की। उस क्षेत्र में रसोई गैस लेकर गये। इसके अलावा भी वनारोपण के लिए बहुत सारे कार्यक्रम हाथ में लिये। वर्ष 1990 में रोटरी के प्रोजेक्ट के माध्यम से गंगोत्री ग्लेशियर के आधार-क्षेत्र भोजबासा में भोजपत्र के 20 हजार पड़े लगाये। हिमालय ने उन्हें हमेशा आकर्षित किया है। "वहाँ मेरे लिए एक अनूठा आकर्षण है। मुझे वहाँ बहुत ही अद्भुत महसूस होता है।"

गुप्ता और विनीता AKS सदस्य है और गुप्ता को 2007 में सामाजिक कार्य और पर्यटन में योगदान के लिए पद्मश्री पुरस्कार मिला।

गढ़वाल, हिमालय में पर्वतारोहियों के साथ।

प्राणिक चिकित्सा

सुशील गुप्ता अपनी प्राणिक चिकित्सा' के हुनर के लिए भी मशहूर हैं जिसे वे 1995 से कर रहे हैं। जब हाइपरटेंशन' के इलाज के लिए उन्होंने दवाईयाँ लेने में अनिच्छा जाहिर की, तो उन्हें प्राणिक चिकित्सा' का सुझाव दिया गया। इस चिकित्सा पद्धति ने काम किया और जब वे इससे प्रभावित हुए तो उन्होंने दिल्ली प्राणिक हीलिंग फाउण्डेशन' की स्थानीय शाखा का गठन किया। उन्होंने बताया "जब से मैने इसके मूल कोर्स का अध्ययन किया है, तब से अनेक लोगों की प्राणिक चिकित्सा के साथ दूरस्थ इलाज भी कर चुका हूँ। जब मैं रोटरी इन्टरनेशनल निदेशक के रूप में कार्यरत था, तब अनेक गवर्नर मुझे स्वामी सुशील गुप्ता कह कर पुकारते थे, क्योंकि मेरा सम्बन्ध अनेक श्रद्धेय साधुओं से रहा है।"

शताब्दी वर्ष

गुप्ता का मानना है रोटरी फाउण्डेशन का शताब्दी वर्ष रोटरी के शो-केस' के लिए एक अनुपम अवसर है। सौभाग्य से हम दुनिया को पोलियो उन्मूलन के लिए किए गये हमारे कार्य को दिखा सकते हैं, जिसे हम करीब-करीब खत्म करने के नजदीक हैं। रोटेरियन और जो लोग रोटरी के सदस्य नहीं है, अब उन्हें भी रोटरी की कहानी बताने का यह महत्वपूर्ण मौका है। बहुत कम क्लब है, जो रोटरी फाउण्डेशन से जुडे हैं। यह एक अवसर है, जब हम उनसे बात करें तथा फाउण्डेशन के लिए और धन एकत्रित करें। परन्तु, सबसे महत्वपूर्ण है साझेदारी। बिल गेट्स पहले से जुड़े हैं और अब गूगल भी अप्रत्यक्ष वास्तविक वीडियोज (Virtual Reality Videos) के लिए तैयार है। इनमें से एक पोलियो उन्मूलन पर है, जो रोटरी कन्वेंशन में सर्वप्रथम प्रदर्शित होगा।"

अपने कार्यक्रम WinS पर चर्चा करते हुए गुप्ता कहते हैं कि "इसका मुख्य फोकस केवल शौचालय बनाना नहीं है, बल्कि असली उद्देश्य लोगों के व्यवहार में बदलाव लाना है।" जब मुझे इस कार्यक्रम की संरचना करने को कहा गया और बाद में जब मैं इसका अध्यक्ष बना तो मुझे उम्मीद नहीं थी कि इसका इतना बा स्वरूप बन जायेगा।

प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह के साथ।

चित्र: विशेष व्यवस्था
और रशीदा भगत

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

ENJOY GREAT RATES WITH
COMPLIMENTARY BREAKFAST AND DINNER
PLUS ACCESS TO AQUAVENTURE WATERPARK

Stay at One&Only Royal Mirage, Dubai for 2 nights in a Superior Deluxe Room, enjoy complimentary breakfast and dinner, plus access to Aquaventure Waterpark at Atlantis The Palm, Dubai. Package includes private airport transfers in Dubai and complimentary shuttle service to Aquaventure Waterpark.

Package starting at ₹25,100* per person on twin sharing basis.

*Terms and Conditions apply. Valid on stay from now until September 29, 2017. Blackout dates apply. Rates as per current Rate of Exchange. Rate of Exchange at the time of payment would apply. Rates vary as per room type and dates of stay.

Call 1800 266 2345
Email outbound@mercurytravels.in
www.mercurytravels.co.in

MERCURY TRAVELS
Experiences that take you far. Experiences that bring you closer.

WinS की एक आकर्षक युवा राजदूत

जयश्री

मिलिये के. पी. सुचित्रा से, वह साहसी छोटी लड़की जिसके कारण कर्नाटक के उसके अपने गाँव के हर घर में शौचालय है।

कितने 11-वर्षीय बच्चों के सम्मान में एक पौधा लगाया गया है या उन पर लोगों का ध्यान गया है?

कर्नाटक के कमाराहल्ली गाँव की के. पी. सुचित्रा दोनों चीज़ों का गौरव प्रधान कर चुकी है। वह बड़े गर्व के साथ छह माह पहले सहयोग और चीनी के स्वर्गीय कैबिनेट मंत्री एच. एस. माधव द्वारा उसके सम्मान में उसके विद्यालय में लगाए गए आम के पौधे को दिखाती है। तुरंत ही आरआईपीई इयान रिसले का सभी क्लबों से किया गया जोशीला अनुनय याद आता है जिसमें उन्होंने हर सदस्य से उनके अध्यक्षता वर्ष के दौरान कम से कम एक पौधा लगाने का आग्रह किया है... "इस तरह हमें कम से कम 1.2 मिलियन पेड़ मिलेंगे" उन्होंने कहा।

के पी सुचित्रा (काले कपड़ों में) स्कूल में अपने दोस्तों के साथ।

हाल ही में, सुचित्रा ने *द हिन्दू* के रविवार संस्करण की कवर स्टोरी में आकर कमाल कर दिया, जिसमें अपने समुदाय को शौचालय बनाने के लिए राज़ी करने में उसकी भूमिका को विशिष्ट रूप से दर्शाया गया था। इस वजह से उसे महिला आयोग दिल्ली (DCW) द्वारा अभियान का नेतृत्व करने के लिए DCW उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अभी गर्मी की छुट्टियाँ चल रही है मगर कमाराहल्ली का सरकारी स्कूल गतिविधियों से गुंजायमान है; प्रधानाध्यापक और उनका शिक्षकों का दल गांव के जाने माने लोगों की मेज़बानी करके खुश है - ग्राम पंचायत अध्यक्ष नागलम्बिका, ज़िला परिषद् सदस्य रथनम्मा और ग्राम सभा के सदस्य। मैं रोटरी क्लब चमराजनगर के रोटरियनों के साथ स्कूल में हूँ, सुचित्रा से मिलने के लिए, जो अपने सहपाठियों के साथ खेल रही है, अपनी सारी अतिप्रशंसाओं से अप्रभावित होकर। अपने सभी दोस्तों के घर में शौचालय होने को लेकर उसके द्वारा किये गए धर्मयुद्ध के कारण आज गाँव के सभी 20 घरों में शौचालय है। इसका तरंगनुमा प्रभाव इतना है कि पूरे गुन्दलुपेट तालुक जिसमें कमाराहल्ली को मिलकर पाँच गाँव शामिल है अब 'खुले में शौच से मुक्त' है, क्योंकि हर घर, केवल तीन को छोड़कर जहाँ काम चल रहा है, में शौचालय है।

मैंने सुचित्रा से पूछा, कि तुमने ऐसा कैसे किया। "मेरे दोस्त शौचालय का उपयोग करने के लिए स्कूल भागा करते थे। उन्हें अपने घर के पास खेतों में शौच करने में शर्म आती थी। मेरे घर में एक शौचालय था और मेरे दोस्त भी अपने घरों में वह चाहते थे। तो, हर शाम मैं उनके घर जाती और उनके माता-पिता को समझाती कि खुले में शौच से बीमारियाँ होती है और खेतों में शौच करना असुरक्षित है और उन्हें शौचालय बनवाने के लिए राज़ी किया," कन्नड़ में उसके उत्तर का अंग्रेजी में अनुवादन रोटरियन सी. वी. श्रीनिवास ने किया।

सुचित्रा उस सब के लिए एक उत्तम आदर्श व्यक्ति है जिस पर WinS टारगेट चैलेंज समिति के अध्यक्ष सुशील गुप्ता रोटरी के WinS कार्यक्रम की शुरुआत से ही ज़ोर दे रहे थे - समुदाय में स्कूली बच्चों, जिन्हें वह **परिवर्तन-कर्ता** कहते है, के माध्यम से व्यावहारिक परिवर्तन लाना।

हर शाम मैं उनके घर जाती और उनके माता-पिता को समझाती कि खुले में शौच से बीमारियाँ होती है और खेतों में शौच करना असुरक्षित है और उन्हें शौचालय बनवाने के लिए राज़ी किया।

सुचित्रा, USHA का चेहरा

सुचित्रा जल्दी से अपनी परामर्शदाता, उस समय के ज़िला पंचायत की सी.ई.ओ हेफसिबा रानी कोरलापति, का आभार प्रकट करती है, जिन्होंने उसके परिवार को वर्ष 2014 में अपने घर में शौचालय बनाने के लिए प्रेरित किया था।

पिछली नवम्बर, जब हेपशिबा कमाराहल्ली आयी थी, सुचित्रा ने गाँव में शौचालयों के निर्माण के लिए उनसे मदद मांगी थी। "हमने तब USHA (समझना, संवेदीकरण, मदद करना और सफल होना' का लघु रूप) अभियान प्रारंभ किया ही था जिसका उद्देश्य मंडल में महिलाओं एवं बच्चियों के अधिकार और गरिमा को बहाल करना था, शौचालयों तक पहुँच और मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन पर पर्याप्त ध्यान केन्द्रित करके। जब सुचित्रा मुझसे मिली, हमने तुरंत ही उसे मनाया और उसे USHA का चेहरा बनाया।"

वह 130 बहादुर विद्यार्थी में प्रथम थी जो, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ, चमराजनगर में शौचालय-पहुँच एवं लड़कियों की शिक्षा के साथ अन्य सामाजिक मुद्दों का प्रचार करने के लिए लगभग चार लाख लोगों तक पहुँची। हेफसिबा ने कहा, नवम्बर 2016 और इस साल की जनवरी के मध्य, 10,000 शौचालय बनाये जा चुके है और अन्य 8,000 तैयार किये जा रहे है।

नागलम्बिका कहती है, "लोगों को शौचालय बनाने के लिए राज़ी करना चुनौतीपूर्ण था क्योंकि हमारा क्षेत्र भयंकर सूखे क्षेत्र में आता है। हालाँकि

मेरी बेटी के कारण, आज मैं कन्नड पढ़ सकता हूँ, लिख सकता हूँ और हस्ताक्षर कर सकता हूँ एवं बुनियादी गणित कर सकता हूँ। वह मेरी पूँजी है।

— सुचित्रा के पिता

रोटरी क्लब चामराजनगर, मंडल 3181 के बैनर के आगे सुचित्रा अपने स्कूल के छात्रों को हाथ-धोने का अभ्यास दिखते हुए।

हमने गाँव वालों को विश्वास दिलाया कि उनके द्वारा किये गए खर्च को स्वच्छ भारत मिशन के तहत लौटा दिया जाएगा, वे अन्य वित्तीय जिम्मेदारियों के कारण हिचकिचा रहे थे।" उसने व्यक्तिगत रूप से 300 शौचालयों के निर्माण के निधिकरण का रास्ता निकला और बाद में उस खर्च का पुनर्भुगतान प्राप्त किया।

स्कूल के प्रधानाध्यापक शिवकुमार ने कहा, "अब मैं स्कूल में एक और शौचालय खण्ड बनवाऊंगा। सुचित्रा ने मुझे भी राज़ी कर लिया है।" जैसे ही वह हमें उनके कक्ष में नाश्ता करने के लिए आमंत्रित करते है, सुचित्रा मुझे अपने "हाथ धोने" के लिए कहती है, हम सभी को आश्चर्य में डालते हुए। शेट्टी कहते है, "रोटरी के WinS कार्यक्रम के लिए एक उचित राजदूत।" उसके शिक्षक वेंकटचलाचरी कहते है कि उसने अपने सहपाठियों में भी हाथ धोने की आदत को विकसित कर दिया है।

गौरवान्वित माता-पिता

सुचित्रा के माता-पिता इस उत्तेजना को काफी गर्व एवं तुष्टि के साथ महसूस करते है। जहां उसके पिता उसे एक शिक्षाविद बनते देखना चाहते है, वहीं सुचित्रा का सपना एक डॉक्टर बनकर "यहीं मेरे गाँव में सेवा देना का है।" उसने उसके पिता, जो कभी स्कूल नहीं गए, को लिखना एवं पढ़ना सिखाया है। प्रभु कहते है, "मेरी बेटी के कारण, आज मैं कन्नड पढ़ सकता हूँ, लिख सकता हूँ और हस्ताक्षर कर सकता हूँ एवं बुनियादी गणित कर सकता हूँ। वह मेरी पूँजी है।" गीता छठवीं कक्षा तक पढ़ी है और घर पर सुचित्रा की मदद उसकी पढ़ाई में करती है। उनकी गरीबी के बावजूद, दोनों ही उसकी शिक्षा ज़ारी रखने के लिए उत्सुक है। DCW द्वारा उसे दिए गए ₹30,000 की पुरस्कार राशी का उन्होंने फुर्ती से एक सावधि जमा में निवेश कर दिया है। सुचित्रा का चहरा चमक जाता है जब वह पुरस्कार

लोगों को शौचालय बनाने के लिए राज़ी करना चुनौतीपूर्ण था क्योंकि हमारा क्षेत्र भयंकर सूखे क्षेत्र में आता है।.

सुचित्रा और उसके दोस्त स्वर्गीय कैबिनेट मंत्री एच एस महादेव प्रसाद द्वारा उपहार में दिए गए पौधे की देख रेख करते हुए।

नीचे : सुचित्रा DCW पुरस्कार को अपने माता - पिता प्रभु और गीता (बीच में), जिल्ला परिषद् सदस्य रत्नाम्मा, रोटेरियन सी वी श्रीनिवास शेट्टी, क्लब अध्यक्ष जी गुरुस्वामी, रोटेरियन प्रभाकर, ग्राम पंचायत अध्यक्ष नागालाम्बिका और हेडमास्टर शिवकुमार की उपस्थिति में प्रदर्शित करती हुई।

लेने के लिए हाल ही में हेफसिबा के साथ की गयी दिल्ली की हवाई-यात्रा के बारे में बात करती है। आँखें फैलाकर, वह कहती है कि उसे सबसे अधिक राष्ट्रपति भवन पसंद आया।

शौचालयों के लिए काम करने के अलावा, वह उत्सुकता से वृक्षारोपण को बावा दे रही है और तो और वह ग्लोबल वार्मिग (भूमंडलीय तापक्रम वृद्धि) और पर्यावरण हनन के विषय में भी बात करती है। वह हमें उसके स्कूल में ले जाती है जहाँ वह हमें पौधों की कतारें दिखाती है जिनकी देखभाल वह उसके दोस्तों के साथ करती है। "हम भगवन को रोज धोते और सजाते है," उसका सहपाठी संजय, नागा पत्थरों, जो प्रांगण की दीवार के निर्माण के वक्त परिसर से खोदकर निकाले गए थे, की एक कतार के तरफ इशारा करते हुए कहता है।

जैसे ही हम विदा लेने और जाने के लिए तैयार होते है, सुचित्रा हिचकिचाते हुए कार की खिड़की खटखटाती है और प्रीतिकर ढंग से अंग्रेजी में निवेदन करती है, "कृपया एक लैपटॉप," थोड़ा रूककर, "मेरे लिए नहीं.... मेरे स्कूल के लिए।" उसकी ईमानदारी और मोहकता दोनो जादू करते है और तुरंत ही चमराजनगर के रोटरी क्लब अध्यक्ष जी. गुरुस्वामी स्कूल और गाँव को सहायता प्रदान करने का वादा करते है, जिसका प्रतिउत्तर सुचित्रा हाथ जोकर "*थुम्बा संथोषा* (बहुत-बहुत धन्यवाद)" कहकर देती है।

यह देखना सरल है कि कैसे उस छोटी लड़की ने सबसे पहले पूरे गाँव को सफलतापूर्वक प्रेरित किया, और अब संपूर्ण क्षेत्र को, कुछ बहुत ही बुनियादी और अत्यावश्यक - शौचालयों - के लिए।

चत्र: जयश्री

प्रत्यक्ष, गहन प्रभाव वाली परियोजनायें

टी आर एफ का नया मंत्र

रशीदा भगत

टीआरएफ ट्रस्टी और WinS वैश्विक प्रमुख सुशील गुप्ता ने एक साक्षात्कार में *रोटरी समाचार* को बताया कि, संस्थान की अनुदान परियोजना निरंतर बड़ी और अधिक चिरस्थायी होती जा रही है; वैश्विक अनुदान का औसत आकार अब 72,000 डॉलर है। उन्होंने आगे कहा, सौभाग्य से, शुरुआती निराशावाद, शंकाएं और लंबी-अवधि की परियोजनाओं से बचने के सरल उपायों को ढूँढने की कोशिशें अब कम हो रही है।

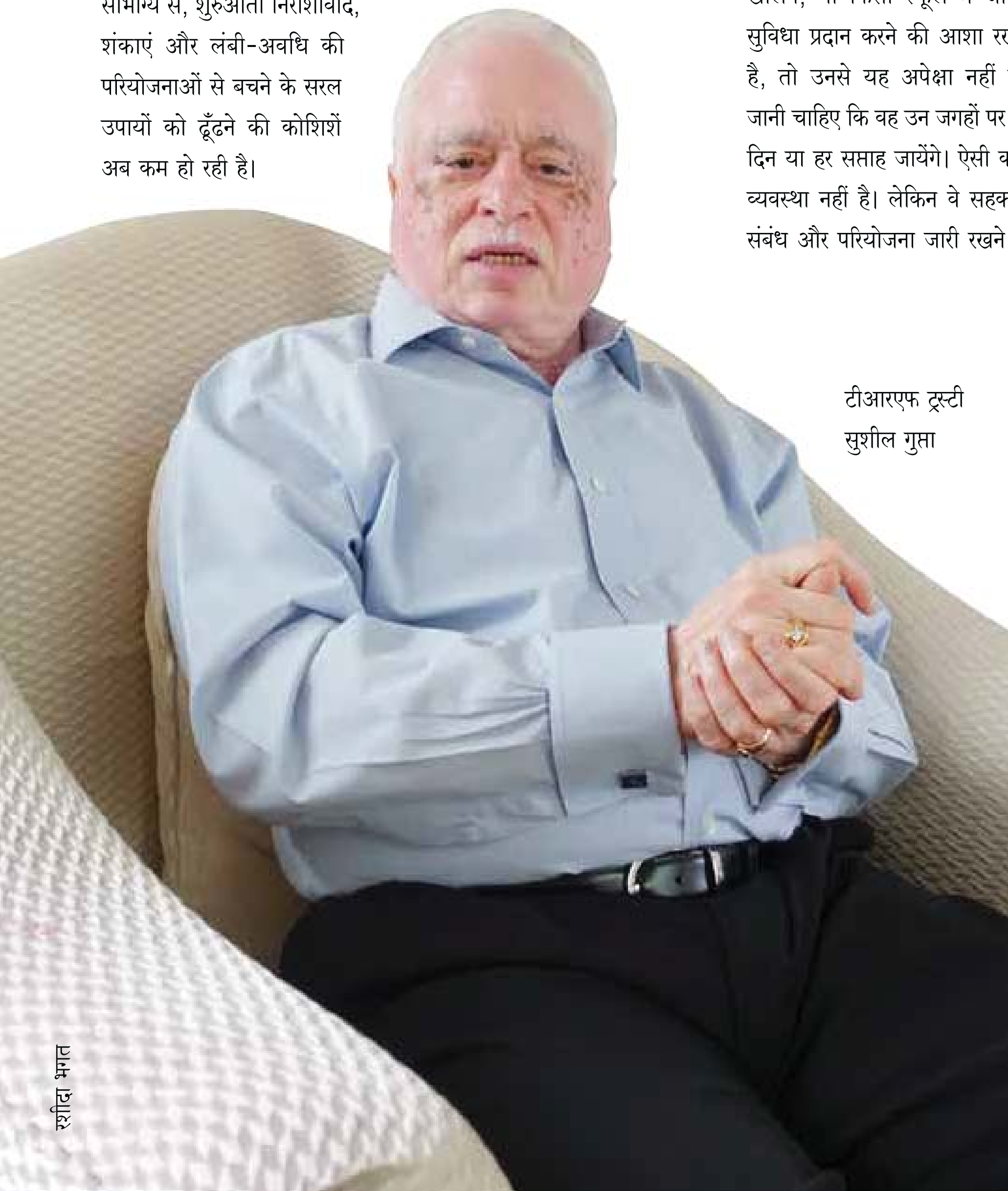

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता

रशीदा भगत

इन दिनों रोटरी संस्थान में संवहनीयता को लेकर बहुत चर्चायें हो रही है; कैसे टीआरएफ संवहनीयता को परिभाषित करता है?

जब 'भविष्य परिकल्पना' योजना समिति की स्थापना की गई, हमने एक सर्वेक्षण किया और पाया की लगभग 80 प्रतिशत रोटरी परियोजनायें अल्प-अवधि की थी; केवल 20 प्रतिशत ही लंबी-अवधि की थी और समुदाय को निरंतर सेवा प्रदान कर रही थी। हमने पाया कि लोग एक संपत्ति का निर्माण करते और उसे छाड़ेकर चले जाते है। आखिरकार, रोटरी में, हम सभी स्वयंसेवक है। तो जब हम किसी रोटरी क्लब या मंडल से कोई ब्लड बैंक बनाने, या आँखों का अस्पताल खोलने, या किसी स्कूल में जाकर सुविधा प्रदान करने की आशा रखते है, तो उनसे यह अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए कि वह उन जगहों पर हर दिन या हर सप्ताह जायेंगे। ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। लेकिन वे सहकारी संबंध और परियोजना जारी रखने के लिए कुछ तंत्र बना सकते है। आमतौर पर ऐसा कोई तंत्र नहीं होता है।

जल पर हुए सीओल सम्मेलन के सेमिनार में, एरिक स्टोवे, स्प्लैश के संस्थापक, जो जल पर बहुत अधिक कार्य कर रहे है, विशेषकर वाश पर, ने कहा कि "मुझे रोटरी की परियोजनाओं के बहुत से कब्रिस्तानों का पता है!" यह सच है और हमने अनेकों बार भारत में ऐसा होते हुए देखा है। अब टीआरएफ का बुनियादी उद्देश्य यह है कि हम ऐसी परियोजनाओं को सामने लाये जो स्थायी हो और लंबी-अवधि तक समुदाय को लाभान्वित करें।

भविष्य की परिकल्पना के आने के पश्चात्, यह अनुपात उल्टा हो जायेगा, जिसमें 80 प्रतिशत परियोजनाएं संवहनीय होगी। उदाहरण के लिए, अगर आप एक परियोजना बनाते है जिसका जीवनकाल 20 वर्ष है, तो उसे 20 वर्षो तक चलना ही चाहिए, और आपको एक तंत्र तैयार करना होगा, चाहे वह सहयोगी साझेदार के ज़रिये करें, या अनुदान का एक हिस्सा अलग निकालकर करें, जैसे कि पाँच प्रतिशत या लगभग, ताकि परियोजना की अन्य चिरस्थायी विशेषताओं की देखरेख की जा सके। या फिर क्लब इस पहलू का रॉटरस्टॉर्स, इंट्रक्टर्स, इनरव्हीलर्स की मदद से निरंतर ख्याल रख सकता है। पहले ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। जिससे हमारा उद्देश्य समुदाय को लंबी-अवधि तक लाभ दे सके।

एक मिलान और एक वैश्विक अनुदान में क्या अंतर है?

पोलियो में हमारी सफलता के बाद, हमने छह प्रमुख ध्यानाकर्षण क्षेत्रों पर ध्यान देने का निश्चय किया है, जो कि संयुक्त राष्ट्र के संवहनीय विकास लक्ष्यों', जिसे पहले सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों' के नाम से जाना जाता था, के तालमेल में है। पहले यह कहीं भी

> **पूरे रोटरी जगत में कोई भी अन्य जल परियोजना उतनी बेहतर नहीं है जितनी कि राजस्थान और गुजरात में हमारे द्वारा बनाये गए रोधक बाँधों की है... कोई नहीं जो इसके बराबर हो।**

कुछ भी हो सकते थे; जैसे एक एम्बुलेंस जो, शायद, सिर्फ छह महीने तक चली!

अगला पहलू मूल्य का है; पहले मिलान अनुदान 4,000-5,000 डॉलर जितने छोटे हो सकते थे, और उन अनुदानों की प्रक्रिया का खर्च- कुछ 6,000-7,000 डॉलर - अत्यधिक होता जा रहा था। उस लागत और समय को बचाने के लिए, परियोजना की न्यूनतम कीमत 30,000 डॉलर कर दी गई। पहले कई तरह के प्रतिरोध थे, लोग पूछते थे छोटे क्लबों का, छोटी परियोजनाओं का क्या होगा। परन्तु अब, मैं यह सूचना देते हुए खुश हूँ कि वैश्विक अनुदान का हमारा मौजूदा औसत 72,000 डॉलर है। देखिये कैसे चीज़ें बदल गयी है! साथ ही, हम कहते है कि क्लबों को ऐसी परियोजनाएं करनी चाहिए जो प्रत्यक्ष हो और जिनका समाज पर गहरा प्रभाव हो। रणनीतिगत योजना भी यही कहती है।

क्या आप मुझे भारत की एक अच्छी संवहनीय परियोजना का उदाहरण दे सकते है?

बहुत सारे है; रोटरी नेत्र अस्पताल,स्कूल, रक्त बैंक, खासकर दिल्ली में रोटरी ब्लड बैंक भारत में सबसे बड़ा है।

क्या आप कह सकते है कि भारत गहन प्रभाव वाली संवहनीय परियोजनाओं में बाकि रोटरी जगत के मुकाबले बेहतर कर रहा है?

नहीं, यहाँ पर मेरा एक प्रश्न है। करीब एक साल पहले, जब मैं एक ऐसे व्यक्ति के साथ चर्चा कर रहा था जो क्लबों को अनुदान दिलवाने में मदद कर रहे थे, उन्होंने कहा कि हमने संवहनीय परियोजनाओं को करने का रास्ता खोज लिया है। और मैं चौंक गया! मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है कि हमारे अधिकांश क्लब और मंडल इस दस्तूर का पालन कर रहे थे... कि चलों इसका कोई रास्ता ढूंढते है।

परन्तु जैसे ही हमने संवहनीयता पर और अधिक बातें करना शुरू की, बात हमारी समझ में आने लगी। मैं व्यापक अनुमान तो नहीं लगा सकता, परन्तु शुरुआत में, कुछ वरिष्ठ-जन भी संवहनीयता को लेकर क्यों ओर क्या जैसे प्रश्न कर रहे थे। लेकिन मैं हमेशा से ही अपने जीवन के उसूलों का तरफदार रहा हूँ, यदि हम कुछ भी करते है, तो चलिए उसे सही ढंग से करें।

तो जब एक परियोजना तैयार होती है, उसे टिकाऊ और कम से कम 10-15 सालों के लिए स्थायी बनाने के लिए सभी आवश्यक तत्वों को शामिल करना चाहिए। रोटरियन सफल व्यवसायी या पेशेवर लोग है। मैं हमेशा कहता हूँ कि अपने रोटरी के मूल्यों को अपने व्यवसाय/पेशे में शामिल करें और अपने पेशे के अनुभव को रोटरी में लायें।

मात्रा के मुकाबले गुणवत्ता कितनी महत्वपूर्ण है?

(हँसते हुए) यह एक मिलियन-डॉलर का प्रश्न है, जिसका उत्तर हम नहीं खोज पाए है, और यहीं हम सदस्यता के मामले में संघर्ष कर रहे है! गुणवत्ता महत्वपूर्ण होनी चाहिए। 100 स्कूल करने और सिर्फ शौचालय बनाने के बजाय, मैं चाहूँगा कि आप 10 स्कूल करें और उसमें WinS के सभी घटकों को सम्मिलित करें, इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि यह व्यावहारिक परिवर्तन लाने में मददगार हो जैसे कि सुचित्रा, कर्नाटक की उस लड़की ने किया था। (पेज 22) यह इतनी बड़ी खबर है कि *द हिन्दू* ने इसे अपने मुख-पृष्ठ पर छापा था; यह उत्तम कहानी है।

अब हमने भारत सरकार के साथ गंगा नदी की सफाई के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। बहुत से लोगों, जिनमें सरकार के लोग भी शामिल है, के मन में शंका है, कि गंगा साफ़ नहीं होगी... हज़ारों करोड़ रूपए लगेंगे। मैंने गंगा नदी का गौमुख ग्लेशियर से अनुगमन किया है; पिछली बार जब मैं वहाँ था मैं ग्लेशियर पर सेना के एक तम्बू में सोया था। मुझे विश्वास है कि यह भी होगा बशर्ते हम अपने पत्ते सही खेले थो, जैसे हम ने पोलियो का उन्मूलन करते समय किया था और साडी दुनिया सोच रही थी क्या भारत यह कर सकता है।

समुदाय आंकलन कितना जरुरी है, और यह क्यों जरुरी है? क्या रोटरी सदस्य इस बात का आंकलन करने में सक्षम नहीं कि एक समुदाय की क्या आवश्यकता है?

बेशक समुदाय आंकलन बहुत ज़रुरी है। आखिरकार, कौन निश्चय करता है; कैसे आप परियोजना के स्वामित्व का निर्धारण करते है? हम हमारी जल परियोजना कर रहे हैं; आपने राजस्थान में एक परियोजना को कवर किया था जहाँ हम एक रेगिस्तानी इलाके में रोधक बाँध बना रहे हैं। वहाँ पर बाँध, समुदाय का आंकलन करके एवं उसकी जरूरतों के हिसाब से बनाया जा रहा है, ना कि पीएचडी वाणिज्य मंडल, जो हमारा साझेदार है, या रोटरी जल ट्रस्ट के हिसाब से।

अभी तक हमने 82 बाँध बना दिए है और 300 गाँवों की मदद की है, जिससे 3,00,000 लोग लाभान्वित हो रहे है। बात इस बारे में नहीं की गयी कि उस परियोजना में संस्थान का कोई भी पैसा नहीं लगा है। परन्तु पूरे रोटरी जगत में इससे बेहतर कोई जल परियोजना नहीं है... कोई भी नहीं जो इसके बराबर हो। इसे फ्रांस, जर्मनी और भारत के रोटरी क्लबों द्वारा इकठ्ठा किये गए धन की मदद से किया जा रहा है और अमेरीका व कनाडा के कुछ रोटरी सदस्यों ने एक बांध को अपनी जिम्मेदारी पर बनाया। वे गाँव में कुछ दिन रहे, ग्रामीणों के साथ ठहरे, उनके साथ खाया और स्वयं काम किया।

टीआरएफ परियोजनाओं के विचार/कार्यान्वियन पर रोटरियनों के लिए कोई सन्देश?

मुख्य बात यह है कि सामुदायिक परियोजनाओं की योजना बनाते समय या उसे करते समय हमें हमारी सोच बदलना होगी। परन्तु मैं यह बात भारत या दक्षिण एशिया अफ्रीका, फिलीपींस, लैटिन अमेरिका को ध्यान में रखकर कहता हूँ; हमें ऐसी परियोजनाओं पर विचार करना चाहिए जो स्थायी हो और अनेक वर्षो तक अपनी सेवा प्रदान करे।

भारत में WinS परियोजना कैसा काम कर रही है?

यह तो केवल एक शुरुआत है; अभी हमने बहुत कम किया है। आगे क्या होगा? क्या हम परियोजना में इंटरैक्टरों, रोटरेक्टरों या एक सहकारी एजेंसी को शामिल करेंगे? क्या हम परियोजना को बनाने और हमारा समाज में परिवर्तन और स्वच्छ भारत बनाने के लिए क्या हम बच्चों को WinS,परिवर्तन के एजेंट बनाएंगे? ■

Charity is my passion

Rasheeda Bhagat

At the age of 22, in 1985, after graduating in Commerce, he left his home because his father gave him an ultimatum: either join as a clerk in the school where he had studied in his village in Kerala, and where his father was a teacher, or leave home.

"I opted to leave because I didn't want to work as a clerk in the village school. I left my village in Oachira, which is on the border of Kollam and Alleppey," says Jayantha Kumar, from RC Karunagapally in Kerala. As charity is his passion, he recently joined Rotary and has become an Arch Klumph Society member.

Leaving home, he went to Jamshedpur, and struggled for a while to find a good job and finally settled for one in a printing press at a Rs 10 salary per day! "It had no power supply, so I had to manually operate the machine, lifting my arms up and down, getting one copy or receipt at a time. I had to print 10,000 of them every day," smiles Kumar, as we chat at the reception level of the world's tallest building, the Burj Khalifa in Dubai, where Kumar owns and lives in an apartment on the 64th floor.

From the Rs 10 a day income to living in one of the most iconic buildings in the world is an interesting journey. He stayed on at the Jamshedpur press for four months, and then got a job at the Kwality ice creams in the city, at a monthly salary of Rs 300.

He worked there for a year as a clerk, and recently visited Jamshedpur and "saw the typewriting machine on which I had worked in 1985, met my colleagues and the owner of the company. He came to the airport to receive me, put me up in his house and he is going to gift me that typewriter the next time I go to Jamshedpur," grins Kumar.

After a year, he was transferred to Kwality ice creams in Chennai at a salary of Rs 550. After seeing his performance for a year, "the MD of the company said why don't you start your own ice cream parlour? He gave me the franchise, helped me further with a deep freezer and other equipment and I started a parlour in Chromepet in Chennai." Slowly he expanded and gradually under him, 20 Kwality ice cream shops were established.

One day, he saw an ad on for some products of a company and took up the distributorship for South Chennai. Twice he gave them advance money and got the products. But the third time, when he had given Rs 2.45 lakh as advance, a big amount in 1987, he was cheated. "The owners disappeared and my capital of Rs 2.45 lakh, a lot of money for me then, was wiped away. I was devastated."

Totally broke, he confided in the MD of Kwality and "told him please take back whatever you have given me, because I have been cheated. He said I will

Rtn Jayantha Kumar

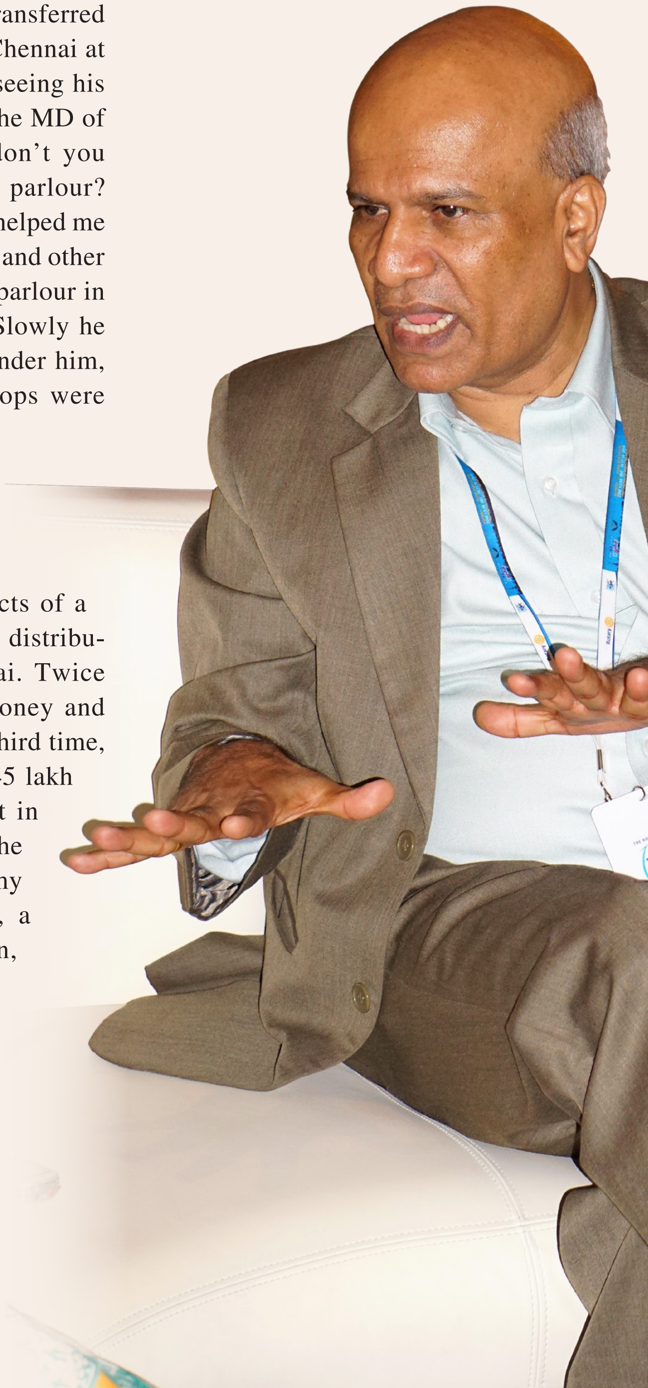

allow you credit, please continue. But I said no, I've been cheated in Chennai and don't want to stay here anymore."

Not wanting to return to Kerala without a job, he got a job next as a medical representative at a salary for Rs 3,400. "This was in 1987; I was happy and worked here for two years." In less than a year he got promoted as manager "as I always exceeded the targets given to me."

He was sent to Mumbai for a meeting and there he saw an ad for a job in Saudi Arabia, appeared for the interview and was selected.

Kumar left for Saudi Arabia in 1989 and worked there for seven years. "I slowly built up capital and started my own business in medical rehabilitation and today I have eight companies in Dubai, three in the US and four in India."

We are chatting on the sidelines of the Dubai Zone Institute dinner at the Armani Pavilion at the Burj Khalifa.

His business empire extends across different sectors in medical rehabilitation, manpower recruitment, artificial limbs, tourism, garbage chute manufacturing and erection of high rise buildings.

When asked about his meteoric growth, he says, "I was fascinated by RI Director Manoj Desai's theme for the Dubai Institute — Nothing is Impossible. Actually, exactly this same thought struck in my head when I was only 10 and studied about Napoleon Bonaparte who said "nothing is impossible". I suppose that is why I am sitting in Burj Khalifa today!" In cold print, this might sound like hubris, but there is no hubris in that statement, because of the simple manner in which it is made. Even today you can see the Kerala boy in the business tycoon.

On the challenges he faced while building up his business empire, Kumar says simply, "No, there are no challenges if you want to do anything in life. You go about doing things with an honest outlook and work hard. I can tell you from experience that this (Dubai) is the best place if you have integrity and are willing to work hard."

"In 2010 I bought an apartment in Burj Khalifa, the tallest building in the world... Not only that; in 2006, I purchased shares of the RVSM High School and became the Manager of that school, where my father wanted to make me a clerk in 1986! And he was so happy." Adds Kumar, "He came twice or thrice to Dubai, but loved living in our native place. For 17 years, I've gone every week to Kerala from Dubai to meet my father."

On what cars he drives, he says disarmingly, "I don't drive here, I don't have the driving license for Dubai! But I have a Range Rover, a Benz, BMW, a Beetle (Volkswagon). I am very fond of cars and have five of them in my village in Kerala." There he has built a palatial villa.

I was fascinated by RID Manoj Desai's theme — Nothing is Impossible. The same thought struck in my head when I was 10. I suppose that is why I am sitting in Burj Khalifa today!

But what really defines the essential Kumar is his vision on charity, something that made him join Rotary and motivated him to give to TRF… give enough to become an AKS member. "Right from childhood, my father taught me that whatever we have, we must share with those who are less fortunate than us. As a child, I keenly observed that my mother, a simple village housewife, would feed at least 4 to 5 people every day. And we were not rich; my father was just a school teacher."

Having grown up in such a background, Kumar gives "pension" to some 500 people in his village, has constructed more than 40 houses for the needy, and has given scholarships to "thousands of children. Helping others is something that my father taught me from a very young age, and my mother too, through example.

Rtn Jayantha Kumar with his family.

I pray to god that *loka samasta sukhino bhavantu* (the whole world should live peacefully and happily)."

That takes me to the next question. Is he a religious man? "Of course yes, I believe in God.For the last 24 years, I've been doing the *Udayasthamana Pooja* at Sabarimalai from morning to night, which I have booked for 50 years. I am the luckiest man to do that."

As a child, I keenly observed that my mother, a simple village housewife, would feed at least 4 to 5 people every day. And we were not rich; my father was just a school teacher.

He invites my colleague K Vishwanathan, who is photographing him, and who is a great Ayyappa devotee, to join him next year. "You can stand with me in front of the *Sreekovil* and pray there." A major donor at Sabarimalai, "I brought 41 MPs from the Parliamentary Public Accounts Committee for the development of Sabarimalai and was the first person who started free feeding or *annadanam* in *Sannidhanam*."

Kumar also worships every month at the Guruvayur temple. "I always pray to god to give me both good health and life; if I have these two, I can help other people. Every night, I pray *loka samasta sukhino bhavantu*."

So what more does he want to do on the charity front? "Through Rotary, I am going to start a drive against cancer. I lost my mother (53), elder brother (55) and mother-in-law (52) to cancer. Along with Rotary, I plan to start a palliative cancer care facility in my village in Kerala," he says.

He also works with other charitable organisations and his wife Sindhu supports him totally.

"Both my daughters Amritha and Aswathi have been taught to give to the less fortunate; birthdays and wedding anniversary we celebrate with orphan children," he adds.

Pictures by K Vishwanathan

आशा-किरण को मिला एक चेहरा

टीम रोटरी न्यूज

जब कभी भी हम साक्षरता के बारे में सोचते है, तब हमारे दिमाग में उस बच्चे का ख्याल आता है, जिसे स्कूल जाने की आवश्यकता है, ऐसे बच्चे जो बहुत गरीब हैं, वंचित हैं, ऐसे बच्चे जो पेशेवर सेक्स वर्कर्स, भिखारियों, एड्स के मरीजों और कैदियों की सन्तान हैं। वे बच्चे, अक्सर जिनकी पिटाई होती है, जिनके साथ गाली गलौच और अभद्र व्यवहार होता है, और जिन्हें जबरन अपंग कर दिया जाता है। रोटरी इंडिया साक्षरता मिशन ने ऐसे बच्चों की शिक्षा के लिए प्रभावशाली मदद की है।

ऐसे 45 हजार से भी अधिक बच्चों को वापिस स्कूल भेजने के बाद यह तय किया गया कि इन बच्चों को एक चेहरा मिले जो उन्हें नई पहचान दे। एक ऐसा प्रतीक जो अमूल गर्ल' या एयर इंडिया के महाराजा' की तरह प्रसिद्ध हो। परिणामस्वरूप आशा और किरण के रूप में इन प्रतीकों का सृजन हुआ।

दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन में TEACH के बाल विकास कार्यक्रम की नेशनल चैयरमेन पूर्व डी जी रेखा शेट्टी ने पुछा, "आशा कहाँ हैं? वो कहीं खो गई है। वो या तो किसी गली में भीख मांग रही है या किसी माचिस फैक्टरी में काम कर रही है, और वो किसी वैश्यालय में भी हो सकती है, जब हम उसे बुलाते हैं, तो वो जवाब भी नहीं दे पाती, क्योंकि शायद उसके पैर बंधे हैं, और मुँह खोलने पर प्रतिबन्ध हैं।"

और इस तरह आशा शुभंकर का पदार्पण हुआ एक आठ वर्ष की लड़की, जिसके बालों में गुलाबी रिबन बंधे है और खुले-खुले दांतों से मुस्करा रही है, साथ में उसका जुड़वा भाई किरण। RILM के चैयरमेन शेखर मेहता कहते है "दोनों का जन्म 15 अगस्त को हुआ।" प्रक्षेपण के बाद रोटरी क्लब वेलाचेरी की अध्यक्ष प्रभा पद्मनाभन द्वारा किये गए आयोजन में एक गीत और 50 स्कूल के बच्चों द्वारा नृत्य का प्रदर्शन किया गया जिन्होंने आशा का संदेश प्रबलित किया।

एक बालक को स्कूल वापिस भेजने की कीमत रू 2100 है।दोनों प्रतीक रोटरी इंडिया के साक्षरता अभियान का संदेश देंगे और विभिन्न व्यापारिक उत्पादों जैसे टी-शर्ट, स्कूल की किताबों, पानी की बोतलों, कॉफी के प्यालों, डायरियों, पेन पेंसिल आदि पर भी होंगे। वंचित बच्चों द्वारा बनाये गए आशा या किरण का प्रतिरूप प्राप्त करने के लिए अपना ऑर्डर *childevelopmentrotaryteach.org* या *rekhashetty123gmail.com* पर भिजवायें।

चैक "RSAS A/c Literacy Mission" के नाम, आप Rotary India Literacy Mission, Skyline House, 145, Sarat Bose Road, Kolkata-700026 पर भेज सकते हैं।

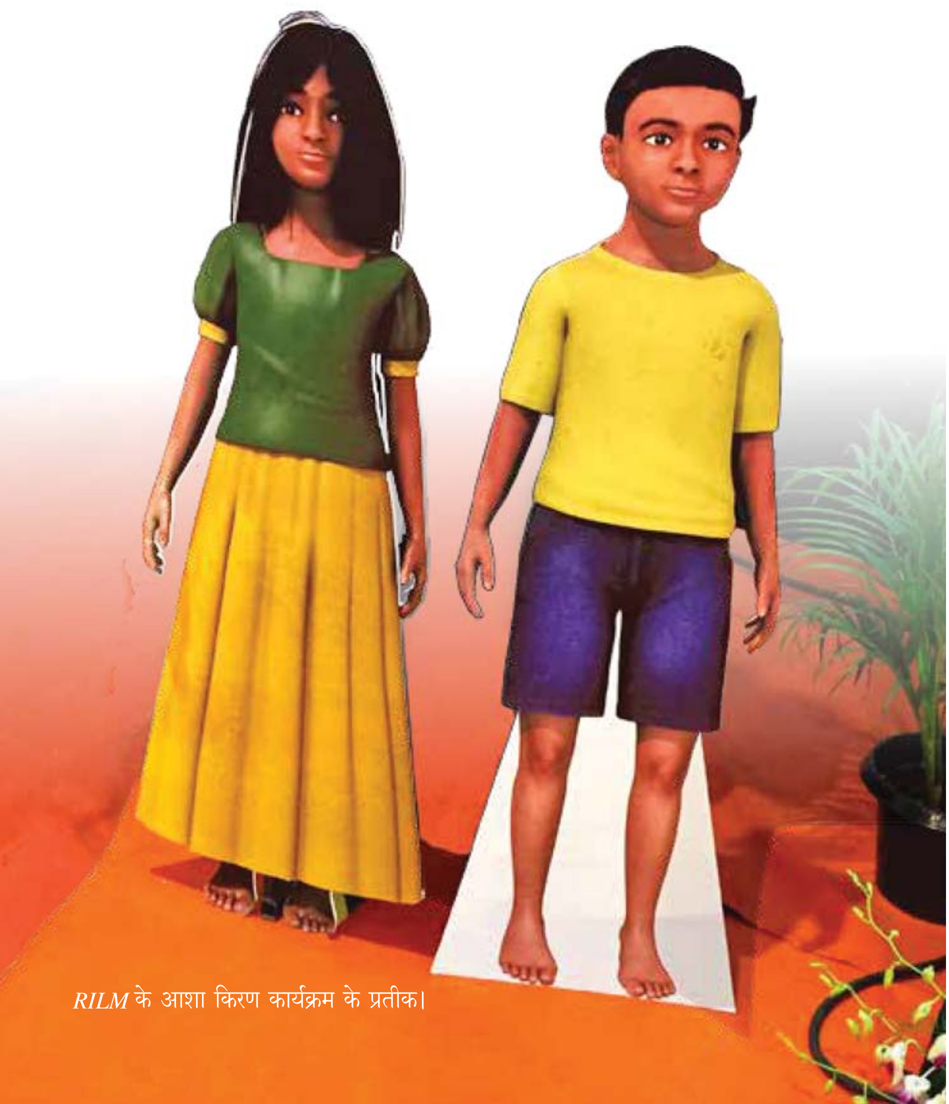

RILM के आशा किरण कार्यक्रम के प्रतीक।

आशा किरण गुड़िया

आशा और किरण भारतीय अहसास और भिन्नता में रूपान्तरित, गुयियें हैं, जिस तरह के आधुनिक खिलौनों को आज पूरी दुनिया के बच्चे बहुत पसन्द और प्यार करते हैं। आठ वर्षीय जुवां आशा और किरण आज स्कूल से बाहर है, और शायद किसी सड़क पर किसी भोजनालय में मजदूरी कर रहें है, उन्हें वापिस स्कूल भेजकर परिवर्तित किया जाना है। इन्हें वह बालक परिवर्तित कर सकेगा, जो इन्हें अपनायेगा। दोनों खिलौने धोने योग्य कपड़ों द्वारा निर्मित है।

चित्र : के विश्वनाथन

डीजी के लिये कुछ हिदायतें

रशीदा भगत

हमारे अंचल में रोटरी के तीन अनुभवी परामर्शदाताओं ने... सभी रो इं के भूतपूर्व अध्यक्ष हैं... आगंता डीजी यों को नेतृत्व, भला करने के उनके अधिकार, आदि के बारे में स्फूर्तियुक्त वक्तव्य पेश किया।

रोटरी में उत्कृष्ट नेतृत्व का स्वर्णीम मानक सरल था, ''एक ऐसा नेता बनना जिसके बारे में आपके मंडल का प्रत्येक रोटेरियन यूँ कहता हो, 'यदि मैं कभी मंडलाध्यक्ष बनता तो, मैं ठीक उन्ही जैसा बनना चाहूँगा,' मुंबई में RIDE सी भास्कर द्वारा आयोजित सर्व-सम्मिलित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिशा में आगंता मंडलाध्यक्षों का संबोधन करते हुये टीआरएफ के ट्रस्टी चैयर कल्याण बेनर्जी ने कहा।

रोटरी में नेता बनने का एक अनोखा पहलू यह है कि ''आप समान काबीलीयत रखने वालों की अगुआई करते हैं, कभी कभी आपसे बेहतर काबिलियत रखने वालों की भी। आप वहाँ आदेश देने के लिये नहीं बल्कि सहायता प्रदान करने के लिये होते हैं। और ना भूलें कि यह भी केवल एक साल के लिये, सो घमंड दिखलाने के लिये खास वक्त नहीं मिलता और काम पूरा करने के लिये भी समय कम ही होता है। सो अपना काम जारी रखें।''

एक साल की कम अवधि के भीतर, यह स्वाभाविक ही था कि हर कोई अपनी छाप छोडकर जाना चाह रहा था। लेकिन ''किसी बृहत् काम को काम चलाऊ तौर पर शुरू करके पूरा करने की कोई भी कोशिश, वह भी केवल एक ही साल में उस पर आपका नाम लिखा गया हो तो, नाकामयाब ही रहेगी। ''वाकई कामयाब होने के लिये, आपको अपने क्लबों के स्वास्थ्य, उनके समुदायों, और हमारी इस संस्था की ओर अपने से परे, अपने कार्य वर्ष से परे, एक दीर्घकालीन नजरीये से देखना होगा,'' उन्होने कहा।

सभी डीजीओं को शुरू से ही अपने मंडल को पहले से ज्यादा सशक्त बनाने की दिशा में प्रयास करना होगा और क्लबों के लिये ऐसा कुछ करना होगा जो ''आपके कार्यकाल के बाद भी बिना इस बात की चिंता किये कि किसको श्रेय जायेगा, लोगों की जिंदगियों को बदलना जारी रख पायेगा!''

प्रधान नेतृत्व मूल्यों की बात पर, बेनर्जी ने कहा कि आगामी साल में उन्हे विश्वास के आधार पर नेतृत्व करना होगा। ''एक उत्कृष्ट नेता के गुणों को एक ही शब्द में समेटा जा सकता है।'' और उत्कृष्ट नेतागण

TRF ट्रस्टी चैयर कल्याण बेनर्जी

PRIP राजेंद्र कुमार साबू

अपने हिस्से से ज्यादा श्रेय या अपने हिस्से से कम उत्तरदायित्व को स्वीकार नहीं करते। ''यदि आप किसी समस्या के साथ उनके पास जायें, तो वें मदद करने के लिये तैयार रहते हैं; वें आपकी परख या आलोचना नहीं करते।'' जरुरी नहीं कि एक उत्कृष्ट नेता के पास सभी सवालों के जवाब हो, लेकिन उन जवाबों को ढूँढने में वे आपकी मदद कर सकते हैं। वें ऐसे व्यक्ति हैं जो आपकी बातों को ध्यान से सुनेंगे।

आजकल के भ्रष्ट कारोबारी तथा व्यावसायिक माहौल में, गाँधीजी के शब्द: ''औरत हो या मर्द, हर कोई अपनी करनी का साराँश ही होता हैं'' एक नयी अहमीयत पा गये है और दुनिया ऐसे लोगों की तलाश में है जो नैतिक तौर पर सशक्त है और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति वचनबध्द है।

भारत में हमारे गुरू हमें आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते हैं और हमे परामर्श देते हैं। बेनर्जी ने याद किया कि जब एक बार उन्होने अपने आध्यात्मिक गुरू से पूछा कि अपने कारोबार की कीमत पर रोटरी में वे जो वक्त बिताते हैं क्या वह सही है, तो स्वामीजी ने जवाब दिया, ''हाँ, है यदि इससे आप एक बेहतर इंसान बन गये हो तो।''

रोटरी पहले ही सामुदायिक तथा अंतर्राष्ट्रीय सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर चुका है, क्या वह व्यावसायिक सेवा में भी उतनी ही उत्कृष्टता हासिल कर पायेगा? ''क्या हम रोटरी के नैतिक मानकों में नयी स्फूर्ति भरने की प्रक्रिया को शुरू कर सकते हैं?'' यदि जवाब हाँ में है तो ''रोटरी पुन:स्फूर्तियुक्त बन जायेगा; 21वी सदी की जरुरतों के अनुरूप तैयार और तैनात रहेगा और लोग हमारे साथ शरीक होने कतारों में आयेंगे।''

बेनर्जी ने कहा उन्हे हमेशा ''आगंता नेताओं के साथ रहना अच्छा लगता था, क्यों कि वें नयी उम्मीदों, नये विचारों, नये नजरीयों और एक उत्साहपूर्ण भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।'' उन्होने कहा उनसे Road Ahead (आगे का रास्ता) विषय पर बात करने के लिये कहा गया था, लेकिन मैं कोई खास भविष्यवादी किस्म का आदमी नहीं हूँ, हालाँकि भविष्य के बारे में जानने के लिये उत्सुक हूँ!'' गूगल पर खोजने के बाद आपको भविष्य के बारे में कुछ अंदाजा लग जाता है – भावी शहर, कारें, दुकान वगैरह। ''वें सभी मेरे लिये भिन्न, समझने में और अनुसरण करने में मुश्किल दिखायी देते हैं, कम से कम मेरी उम्र वालों के लिये। लेकिन फिर मुझे वह पुराना डोरीस डै वाला गाना Que Sera Sera, whatever will be, will be, the future's not ours to see, que sera sera याद आता है।''

जब कि भविष्य जरुरी था, ''इन दिनों हम रोटरी के अतीत की ओर कम ही देखते हैं: हम कहाँ से आये और हम यहाँ कैसे आये। वह कौन सी बात है जिसकी बदौलत हम 110 सालों की हमारी मौजूदगी के दौरान टिके रहे हैं, सक्रिय रहे हैं और पनप रहे हैं? ऐसा कुछ खास रहा होगा, कुछ ठोस और अटूट सी बात, जिसकी बदौलत हम दो विश्व महायुध्दों, अनेक छोटी जंगों, आतंकवादिता, विप्लव और जिस किसी में दुनिया सफलता हासिल करती हो उन सब से गुजरकर आ पा रहे हैं। अपना काम जारी रखते हुये, हम वृध्दि करते जा रहे हैं।''

बेनर्जी ने कहा रोटेरियनों को आगे बढ़ते रहने के लिये प्रेरित करने वाली बात थी, ''सशक्त घनिष्ठता, एक दूसरे के वक्त, एक दूजे की खुशियों, सुख-दु:ख, विपदाओं में शरीक होना। सो हमारा भविष्य भी मिल जुलकर रहने और मिलकर काम करने पर निर्भर है।''

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, ''असल में केवल वें ही जीवंत रहते है जो दूसरों के लिये जीते है। और मुझे लगता है अपनी घनिष्ठता और दोस्तीयों के साथ रोटरी उस घनिष्ठता को प्रोत्साहित करते हुये उसे और भी नजदीक, और पास ले आता है।

रोटरी में नेता होने का एक अनोखा पहलु यही है कि आप समान काबिलियत रखने वाले या अपने से ज्यादा काबिलीयत रखने वाले की अगुआई करते हैं। आप वहाँ आदेश देने के लिये नहीं बल्कि सहायता प्रदान करने के लिये आये हैं।

टीआरएफ ट्रस्टी चैयर कल्याण बेनर्जी

डीजी के रूप में आपका कार्य वर्ष आप में से हर एक पर एक अमिट और अपरिवर्तनीय छाप छोड जायेगा। सो इस काम को जी जान लगाकर करना जायज है, क्यों कि यह पद आपको भले काम करने का अधिकार देता है।

PRIP के आर रविंद्रन

रशीदा भगत

उम्मीद करता हूँ कि भविष्य में लोग देशों, संस्कृतियों और रंग भेद को भूल जायेंगे। वें मिलकर आयेंगे और मिलकर काम करेंगे – एक दूसरे को आगे बढने देना और शिक्षित करना।''

रोटरी ने न्यायपूर्ण, सच्चा और ईमानदार होने को बेहद बडी अहमीयत दी... साथ ही साथ सत्यनिष्ठा, शराफत, हमदर्दी और मदद करने का गुण आदि। अनेक लोगों ने सोचा अब इस तरह के मूल्य मौजूद ही नहीं है सो वें 'गलत रास्ते' अपनाते हैं या इस तरह के मूल्यों से हटकर काम करते हैं। लेकिन दीर्घकाल में ''सच्चाई ही आखिर में जीतती है। आप ईमानदार रह सकते हैं या बेईमान, लेकिन सच्चाई ही चरम वास्तविकता है।''

चार-मार्ग परीक्षण आज भी उपयुक्त है, लेकिन दीवार पर लटकते फलक से आगे जा चुका है; उसका असली परीक्षण था: ''मैं इसे खुद के लिये कितना लागू कर पा रहा/रही हूँ।''

टीआरएफ, उन्होने कहा, ''शायद दुनिया की सबसे बडी गै.स.सं. बनकर उभरेगी, जो रोग नियंत्रण, साक्षरता का प्रचार, बेहतर आवास निर्माण, साफ पेयजल के प्रावधान, अधिक खाद्यान्न आपूर्ति के प्रति सहायता आदि के लिये जाना जाता है; और हाँ, हम ना केवल छात्रवृत्तियों के जरिये बल्कि संयुक्त राष्ट्र के सदस्य की हैसीयत से भी शाँति ले आने की दिशा में काम करेंगे। यें सभी बडी बातें हैं और मेरा मानना है कि वे और भी बडे होते जायेंगे।''

पीआरआईपी राजेंद्र कुमार साबू ने क्लब अध्यक्ष की नियमावली को भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने के लिये ठखऊए भास्कर को बधाई दी। ''लेकिन खेद की बात यह है कि हम हिंदी को रो इं की मान्यता प्राप्त भाषा बनाने में नाकामयाब रहे हैं जिनका, इंटरनैशनल असेंब्ली और इतर कार्यक्रमों में अनुवादन किया जा सकता है। कम से कम हमें हर एक अध्यक्ष की विषयवस्तु को हिंदी में अनुवाद कराना चाहिये।''

वें खास इस बात से खुश थें कि भास्कर ने इतने सारे भिन्न प्रशिक्षणों को एक ही सभा में समा लिया। ''मैं जानता हूँ कि यह कुछ ऐसी बात है जिसे हमारे परिवार पसंद करेंगे।''

इस बात की पुष्टि करते हुये कि रोटरी अपने सदस्यों को इस दुनिया में भले काम करने के अनेक अवसर देता है, उन्होने कुछ मिसालें देते हुये कहा कि किस तरह हमारे दाताओं ने भारत तथा अफ्रीका में भिन्न चिकित्सीय मिशनों में अनेकों बार ''परिपूर्ण

जादू'' कर दिखलाया। निर्वाचित मंडलाध्यक्षों से अपनी प्रत्याशाओं के बारे में बतलाते हुये साबू ने मिशेल ओबामा को दोहराया जिन्होने कहा था: ''मैंने सीखा है कि जब तक मैं अपनी धारणाओं और अपने मूल्यों को मानकर चलती हूँ, मेरे अपने नैतिक विस्तार का अनुसरण करती हूँ, तब तक मुझे केवल अपनी प्रत्याशाओं के अनुरूप ही चलना पडेगा।''

उनका अपना अनुभव यही था कि आपकी प्रत्याश वास्तविकता के पास हो, ''सबसे पहले, प्रत्याशा कीजिये कि आज कुछ अच्छी या शुभ घटना घटेगी, कल आपके साथ चाहे जो कुछ भी हुआ हो। कल के कडुवेपन को ही मन में रखे ना रहें; अतीत को जाने दीजिये। हमेशा आगे की ओर देखें क्यों कि अवसरों की एक समूची दुनिया आपका इंतजार कर रही है।''

और फिर जिंदगी ने उन्हे सिखलाया था कि यदि आपकी प्रत्याशा, वास्तविकता के अनुरूप हो, ''तो आपको कभी निराश नहीं होना पडेगा।'' उसी तरह यदि आप खुद के प्रति प्रेम, वचनबध्दता और आदर व्यक्त नहीं कर पाते हो दूसरों से इनकी उम्मीद ना रखें। यदि आप खुद का आदर नहीं कर सकते तो दूसरे कैसे आपका आदर करेंगे?

आगंता डीजीओं के लिये साबू के मूल्यवान सुझाव

- अपने आप से ज्यादा उम्मीद करें और दूसरों से कम
- अहंकार एक अनिष्ट शैतान है जो हर किसी पर वार करता है; प्रभावशाली नेता बनना हो तो पहले उसे दूर करें। हमेशा अपने ही बारे में सोचते नहीं रहें।
- प्रत्याशायें दक्ष कुम्हारी के समान है; आप मिट्टी को जितना दबाकर पकडेंगे, उतनी ही उसके टूटने की संभावना है।
- साहस और हिम्मत रखिये। नेतृत्व की भूमिका निभाना कोई मजेदार खेल नहीं है ना ही जंग है; बस इसमें एक ही बात सुहानी है – उसके उद्देश्य और मूल्य।
- अपने कार्य वर्ष के दौरान अपनी जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करे; यह सोचना ना शुरू कर दें कि आपकी अगली जिम्मेदारी क्या होगी!
- कुछ मंडलाध्यक्ष महज कार्यसूची फलक को भरने के इरादे से काय वर्ष के आखिरी महीनों में यानि मई या जून में ही अपने मंडल को भेंट देते हैं। इस गलत कार्यविधि को ना अपनायें।
- जिंदगी आसान नहीं है; अपने इस सफर में आसान पथ को नहीं बल्कि सही पथ को अपनाये।

समापन करते हुये साबू ने कहा:''एक ऐसा मूर्तितल बना ले, जिस पर केवल आप की मूर्ति ही नहीं बल्कि आपका समूचा मंडल भी आपके साथ खडा हो सके। जब आप यह सब करेंगे, तो आपकी और मेरी, दोनों की प्रत्याशाओं को आप पूरा करेंगे।''

एक ऐसा मूर्तितल बना ले, जिस पर केवल आप की मूर्ति ही नहीं बल्कि आपका समूचा मंडल भी आपके साथ खडा हो सके।

PRIP राजेंद्र कुमार साबू

सभा का संबोधन करते हुये झठखझ के आर रविंद्रन ने ताज्जुब के साथ कहा कि 25 साल पहले जब वें निर्वाचित अध्यक्ष थे तब और अब के बीच काफी बदलाव आ गया है। ''उस वक्त एक ख़त को पहुँचने में एक माह लग जाता था। हम फॅक्स् का भी इस्तेमाल नहीं करते थे; टेलेक्स को काम में ले आते थे। ई-मेल वगैरह तो काफी बाद में आया।''

वह कौन सी बात है जिसकी बदौलत हम 110 सालों की हमारी मौजूदगी के दौरान टिके रहे हैं, सक्रिय रहे हैं और पनप रहे हैं? जिसकी बदौलत हम दो विश्व महायुध्दों, अनेक छोटी जंगों, आतंकवादिता उन सब से गुजरकर आ पा रहे हैं।।

टीआरएफ ट्रस्टी चैयर कल्याण बेनर्जी

टैक्नोलोजी के क्षेत्र में तेज प्रगति ने दुनिया को इस तरह से अपने नियंत्रण में लाकर रख लिया था कि पिछले साल ट्विटर पर एक घंटे के 'चैट' के दौरान मैंने देखा कि 30 देशों से 1,400 ट्वीटस् भेजे गये। ''और मैं इसे इंटरनेट कनेक्शन के साथ अपने लैपटॉप पर, दुनिया के किसी भी हिस्से में बैठकर कर सकता था।'' जब हमारे आसपास इतना 'नुमाईशी विकास' हो रहा हो तो आजकल के डीजीओं को कुछ नये कौशल हासिल करने ही होंगे। रो इं के आगंता निदेशक सी भास्कर इन बदलावों का सामना करने खुद को सुसज्जित कर रहे हैं। और ''हमारे आगामी अध्यक्ष ईयान रैसली एक उल्लेखनीय व्यक्ति हैं; अक्लमंद, हाजिरजवाब, प्रभावशाली और अपने दिमाग से सोचने वाले। प्रादेशक तथा विश्व स्तर पर यें दोनों हमें इस नये युग में आगे ले जाने के लिये पूरी तरह से तैनात हैं।''

जब वें यह उल्लेखनीय सफर शुरू कर रहे हो, तो निर्वाचित डीजीयों को याद रखना होगा कि जब कि रोटरी उन्हे इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का मौका दे रहा है, वह इस दुनिया को ''हमारे और हमारे परिवारों के लिये भी बेहतर जगह बना रहा है और हमारी अपनी जिंदगी को भी समृध्द बना रहा है।'' क्यों कि डीजी के रूप में उनकी कार्याविधि ''आप में से हर एक पर एक अमिट और अपरिवर्तनीय छाप छोड जायेगी; इस काम के लिये आप जी जान लगाकर काम करें तो भी जायज ही होगा क्यों कि इस पद का जादु और उसकी अधिकार शक्ति ही ऐसी होती है... भला करने की शक्ति।''

यह सामूहिक शक्ति, रविंद्रन् ने कहा, तब जाहिर की गयी जब 11 बिलियन डॉलरों की कीमत पर, 2.5 बिलियन बच्चों को पोलियो उन्मूलन अभियान के जरिये दुनिया के कोने कोने के बच्चों को प्रतिरक्षित किया गया। लेकिन इसमें इससे भी ज्यादा कुछ और बात भी है; अनेक रोटेरियन नहीं जानते थे कि इस तरह के काम की वजह से, ''30 साल में, वैश्विक स्वास्थ्य के बजट में 50 मिलियन डॉलरों की बचत हो पायेगी शुक्रिया पोलियो उन्मूलन के बाद हुयी बचत का।'' और यह 50 मिलियन डॉलरों की बचत मलेरीया, टीबी, कैंसर आदि का सामना करने के लिये उपलब्ध करा दी जायेगी – क्यों कि अब पोलियो का भार उतार दिया गया है।''

इसी तरह, पिछली गर्मियों में, पोलियो का सामना करने के लिये नाईजीरीया में रोटरी ने जिन संसाधनों तथा स्वास्थ्य संबंधित आधारिक संरचना को तैयार रखा था उन्ही की वजह से एबोला नाईजीरीया से आगे फैल नहीं पाया। ''यही है रोटरी की शक्ति।''

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

फौजी क्लब ने किया WinS का फौजी कार्यान्वयन

रशीदा भगत

रो इं निदेशक मनोज देसाई के हाथों एक हाथ धोने की सुविधा का उदघाटन।

(बाएं से) EMGA अशोक पंजवानी, मंडल 3262 के डीजी नारायण नायक, आरआईडी मनोज देसाई, सुनंदा नायक और शर्मिष्ठा देसाई स्कूली छात्राओं के साथ।

उडिशा के इस राजधानी शहर में, सैनिक स्कूल के पास के शासकीय विद्यालय को साफ सुथरा और चमकदार बना देने की परियोजना को ''महज तीन दिन के भीतर ही'' कार्यान्वित कर देने के बारे में रोटरी क्लब भुबनेश्वर के अध्यक्ष ब्रिगेडियर हरीहर त्रिपाठी ने बेहद नाज़ के साथ बयान किया की यह एक फौजी परियोजना है।

मेरी हैरानी के जवाब में उन्होने कहा, ''भुबनेश्वर में, हमारा क्लब फौजी क्लब कहलाया जाता है। हमारे डीजी ब्रिगेडियर नारायण नायक ने अनेक सेवानिवृत्त फौजी अफसरों को क्लब का सदस्य बनने पर राजी किया, जिसके वें भी सदस्य हैं!'' डीजी की पत्नी सुनंदा नायक ने सहमति में सिर हिलाते हुये कहा, ''उनके क्लब में दो जनरलों (सेनाध्यक्ष), नौ ब्रिगेडियर, चंद कर्नल, एक भूतपूर्व राजदूत, दो सेवानिवृत्त पुलिस महा निदेशक तथा कुछ महा निरिक्षकों सहित 45 सदस्य हैं; यहाँ यह फौजी क्लब के नाम से मशहूर हैं!''

ब्रिगेडियर त्रिपाठी, जो इस बेहद विस्तृत स्कूल के विशाल प्राँगण में यहाँ-वहाँ दौड़ धूप करते हुये अचंभित कर देने वाले जोश का इजहार करते हैं जहाँ एक WinS परियोजना – दो चमचमाते नये जैव शौचालयों, कुछ इतर, नये सिरे से बनवाये गये शौचालयों तथा गेंदे के फूलों की पंक्तियों से सजाये गये 16 हाथ धोने की सुविधाओं का उदघाटन, रो इं निदेशक मनोज देसाई के हाथों किया जा रहा हैं।

वह एक तपती, गरम, रविवार की दोपहर थी, लेकिन इस स्कूल में पढ़ने वाले कई बच्चे – लडके और लडकियाँ दोनों – साफ सुथरे कपडों में उत्साह के साथ अपने स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम के लिये आये हुये थे। जब उदघाटन के बाद दे साई हाथ धोने के चबूतरे की ओर बढ़े, तो बच्चे भी उनके साथ सही तरीके में हाथ धोने के लिये आये जैसा कि उन्हे सिखाया गया था।

उनमे से ज्यादातर बच्चे गरीब परिवारों से आते है और नल के पानी के साथ साफ सुथरे शौचालयों का प्रावधान उनके लिये कितना मायने रखता है यह उनके प्रसन्नचित्त चेहरों और उनकी चमचमाती आँखों में जाहिर होता है।

त्रिपाठी का कहना है, ''हमने यह सुनिश्चित करने बेहद बडे पाईपलाईन लगवाये और ऊपरी टंकी बनवायी है ताकि शौचालयों में भी नल का पानी मिल जाये। आप यूँ कह सकते हैं हमने WinS के सभी घटकों के लिये 360-डिग्री पर हस्तक्षेप किया है। शौचालयों, हाथ धोने के लिये सामूहिक सुविधाओं और सुरक्षित पेयजल सुविधाओं के अलावा हमने इस स्कूल को फर्नीचर दिये है, नया पैन्ट लगवाया और शिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया है। जल्द ही यह एक 'हैप्पी स्कूल' बन जायेगा जब सभी जरुरी घटकों को पूरा कर दिया जायेगा।''

चार दिनों के भीतर परियोजना को पूरा करने की जरुरत पर मंडल 3262 के डीजी नायक ने कहा, ''मेरा लक्ष्य है इस साल 222 स्कूलों को पूरा करना। हमे स्कूलों के लिये पाँच वैश्विक अनुदान मिलें है, लेकिन इस रकम को पाने में कुछ विलंब हुआ, जो सिर्फ पिछले हफ्ते पहले ही मिला; सो हमे स्कूल को पूरा करने के लिये दिन रात काम करना पडा।'' वें उडिशा भर में मई के अंत तक या बीच जून में सभी स्कूलों को पूरा करने की उम्मीद करते हैं।

हैप्पी स्कूल की कसौटी

रो इं निदेशक देसाई ने रोटेरियनों से यह सुनिश्चित करने के लिये कहा कि हैप्पी स्कूल की आठों कसौटियों को पूरा किया जा रहा है। उनका कहना है कि इनमे पैन्ट की एक पुताई, डेस्क/बेंच जैसे साज सामान, पुस्तकालय, अध्यापक कक्ष, खेल मैदान, छाना गया, सुरक्षित पेयजल, लड़के-लड़कियों के लिये अलग शौचालय, हाथ धोने की सामुहिक सुविधायें जहाँ

शिक्षक तथा बच्चों को साबून और पानी से अच्छी तरह से हाथ धोने की तकनीकियाँ सिखायी जाती है और अच्छी कक्षायें आदि शामिल है।

''इन सभी कसौटियों को पूरा कर देने के बाद ही आप उसे हैप्पी स्कूल कह सकते हैं,'' उन्होने आगे कहा, ''ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने WinS परियोजनाओं को देखा है जिसे आप मंडल 3262 में कार्यांवित कर रहे हैं और इस काम की उत्कृष्टता और मंडल 3262 में उसके कार्यान्वयन के तरीके से वें बेहद खुश हैं।''

इस स्कूल को चुनने के बारे में ब्रिगेडियर त्रिपाठी ने कहा कि क्यों कि रोटरी क्लब भुबनेश्वर ने शहर में एक WinS परियोजना को कार्यांवित करना चाहा, ''मैंने पिछले मई में एक सर्वेक्षण के बाद इस स्कूल को चुना। इसे 1936 में बनवाया गया था और बिना किसी सुविधा के वह बुरी हालत में था। क्यों कि दान राशि देर से मिली, हमें युध्द स्तर पर काम को पूरा करना पड़ा, सो मैंने फौजी कार्यशैली को अपनाना शुरू किया... चौबीसों घंटे, दिन और रात काम करना। और वें बच्चे इतने जोश में थे कि उस जगह को साफ करने के लिये रात को भी हमारी मदद करने के लिये आ जाया करते थे।''

पायलट और डॉक्टर

जब देसाई की अगुआई में रोटेरियनों का एक समूह भीतर आया और फूलों की पंखुडियों की बाल्टीयाँ लिये स्कूल की छात्रायें उनके स्वागत में कतारों में खडी थी, तो जिस खुशी का वें जिक्र कर रहे थें उसे महसूस किया जा सका। कुछ मिनटों के बाद, भाव विभोर होकर देसाई ने एक बाल्टी उठाकर उन बच्चों पर पंखुडियों से बौछार कर दी, जो खुशी के मारे खिलखिलाकर हँस पडे।

ना इन लड़कियों और ना ही लड़कों को भविष्य के बारे में अपने सपनों को बतलाने में संकोच हुआ। जब कि आरती कंप्युटर इंजीनियर बनना चाहती है और कुछ इतर लड़कियाँ शिक्षक बनने के बारे में बतलाती है, पूजा निश्चितता से कहती है, ''मैं एक डॉक्टर बनना चाहती हूँ।'' इन बच्चों के पिता रोजाना मजदूरी कमाने वाले, छोटी मोटी दुकानों के मालिक या खेतों में काम करने वाले मजदूर हैं। एक बढ़ई का बेटा साहु पायलट बनना चाहता है और आयुष कंप्युटर निपुणक!

फूलों से सुसज्जित स्कूल से बाहर यह सोचते हुये निकलना सुहाना लगता है कि उनका सपना वाकई सच में बदलने वाला है क्यों कि दो प्रमाण्य फौजियों ने इसकी नींव डाल दी है – ब्रिगेडियर नायक और त्रिपाठी।

स्कूली बच्चों के साथ RRFC कमल संघवी।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

एक साक्षर भारत के लिए अपने जूनून को जगाइए

वी मुथुकुमारन

बाएं से : पीडीजी गण रजनी मुकर्जी, अनिरुधा रॉय चौधुरी, RILM अध्यक्ष शेखर मेहता, उपाध्यक्ष कमल संघवी, इनर व्हील क्लुबों के एसोसिएशन की वाईस प्रेजिडेंट पटरीशिया हिल्टन, RILM संयुक्त सचिव ए एस वेंकटेश और इन्नाइट के अध्यक्ष राजा सीनिवासन।

दक्षिण एशिया साक्षरता सम्मेलन में RILM के इन्नाइट सत्र को संबोधित करते हुए, पीआरआईपी और टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी ने घोषणा की, चलिए हम सभी जोश के साथ भारत को पूर्णतः साक्षर बनाने के लिए काम करें, यदि वर्ष 2018 तक नहीं तो वर्ष 2020 तक कैसे भी।

37 नवनिर्वाचित डीजीयों, मंडल साक्षरता प्रमुखों, क्षेत्रीय साक्षरता समन्वयकों और राष्ट्रीय आयोग के सदस्यों को सिखाने के अलावा, उन्मुखीकरण सत्रों ने इनर व्हील सदस्यों की जरूरतों एवं शिकायतों का समाधान किया जिन्होंने इस अवसर का इस्तेमाल सवाल पूछने एवं आरआईएलएम पदाधिकारियों से बातचीत करने के लिए किया।

अब तक की गयी RILM पहलों का संक्षिप्त विवरण देते हुए, बैनर्जी ने कहा कि स्कूली बच्चे ग्रामीण भारत का चेहरा बदल रहे है क्योंकि स्कूलों में WASH कार्यक्रम से प्रशिक्षित होकर अब वे अपने माता-पिता को सर्वोत्तम स्वच्छ आदतों को अपनाने के लिए ज़ोर दे रहे है। साक्षरता मिशन एक "अतुलनीय परियोजना" है जो हमेशा के लिए ज़िंदगियाँ बदल देगी, और भारत को विश्व के महान देशों में से एक बनाएगी। "मिशन ताकत एवं संख्या में वृद्धि कर रहा है और नयी पहलों को जोड़ रहा है। हमें इनर व्हील सदस्यों के सतत समर्थन एवं सहभागिता की आवश्यकता है क्योंकि वह महिलाएं ही होती है जो बच्चों को बड़ा करती है, उनके साथ रहती है और उन्हें वो बनाती है जो वे बनना चाहते है," उन्होंने कहा।

आरआईडी मनोज देसाई ने कहा, "सामाजिक मीडिया में हैप्पी स्कूलों के बच्चों के साथ ली गयी सेल्फियों की बाढ़ ले आओ ताकि दुनिया को पता चल सके कि हम ज़िंदगियाँ बदल रहे है।" भुवनेश्वर के निकट एक गाँव पितागरिया में एक जीप सवारी के दौरान, वह महिलाओं को मोबाइल फ़ोन का इस्तेमाल करते देख, बच्चों को स्कूल जाते देख एवं सड़क किनारों पर पाइप से पानी की सुविधाएं देखकर खुश हुए - सब कुछ रोटरियनों एवं इनर व्हील क्लबों की सहायता से किया गया था। भारत में साक्षरता एवं WinS दोनों अच्छा कर रहे है। कुछ मंडलों में गति धीमी है; हमें इस पर काम करने की आवश्यकता है क्योंकि इन परियोजनाओं के लिए धन एक अवरोध नहीं है।

अपने भाषण जिसका विषय था *आप ही कुंजी है* में, आरआईडीइ सी भास्कर ने यह कहा कि भारत में असाक्षरता का बुनियादी कारण महिला सशक्तिकरण की कमी है। उन्होंने ज़ोर दिया, "वर्तमान परिदृश्य को कौन परिवर्तित करेगा? हम ही कुंजी है।" वहीं दूसरी ओर, उन्होंने कहा कि इस बात पर कोई स्पष्टता नहीं है कि कैसे शिक्षा उपकर का इस्तेमाल किया जाता है और "हमें इस मुद्दे को लेकर सरकार के पास जाना चाहिए और उपकर को कुशलतापूर्वक खर्च करने में उनकी मदद करनी चाहिए।"

RILM प्रमुख शेखर मेहता ने कहा, "सरल रूप से कहे तो, इन्नाइट TEACH कार्यक्रम का सूक्ष्म रूप है जबकि दक्षिण एशिया शिखर सम्मेलन RILM के मिशन, उद्देश्य और आगामी पहलों का वृहत् परिदृश्य को प्रस्तुत करता है।" RILM उपाध्यक्ष कमल संघवी ने कहा कि साक्षरता परियोजना निरंतर नए विचारों की तलाश में है ताकि यह बदलते वक्त के अनुरूप रहकर बेहतर परिणाम दे सके।

संवादात्मक, उत्साहपूर्ण सत्र

इनर व्हील सदस्यों के एक दल ने उनके सर्वेक्षण दलों द्वारा उठाई गयी परेशानियों को बताया क्योंकि सरकारी स्कूलों ने सहयोग नहीं किया। साथ ही, ग्रामीण शिक्षक अधिक प्रोत्साहन के अधिकारी है क्योंकि वे अनेक रुकावटों को झेलते है और उनका मूल्यांकन उनके शहरी जोड़ीदार के साथ मिलाकर नहीं किया जाना चाहिए।

मंडल 325 इनर व्हील की साक्षरता प्रमुख अरुणा तनेजा, जिन्हें शिखर सम्मेलन में एक पुरस्कार मिला, ने कहा, "इस वर्ष मंडल ने 300 के लक्ष्य के मुकाबले 600 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है। अगले वर्ष, हमारा लक्ष्य 1000 शिक्षकों का है जिन्हें हमारे 38 क्लबों के स्वयंसेवकों द्वारा प्रशिक्षित किया जायेगा।"

सत्र प्रमुखों पीडीजी भारत पंड्या, पीडीजी जवाहर वाडलमानी, और कमल संघवी ने दृश्य प्रस्तुतीकरण एवं मजेदार छोटे किस्सों के माध्यम से सभा में जान डाल दी।

इन्नाइट प्रमुख राजा सीनिवासन ने प्रतिनिधियों को साक्षरता योद्धा बनने के लिए उन्मुखीकरण सत्रों का पूरा इस्तेमाल करने के लिए उत्तेजित किया ताकि निरक्षरता मिटाने के लिए इस आन्दोलन में प्रत्येक भारतीय शामिल हो। "26 प्रतिशत निरक्षर जनसंख्या के साथ, भारत में दुनिया के सबसे अधिक निरक्षर लोग है, जिनकी संख्या लगभग 30 करोड़ है।" ■

दक्षिण एशिया साक्षरता
आगे की ओर एक मार्ग

वी मुथुकुमारन और के टी पी राधिका

तीन-दिवसीय रोटरी दक्षिण एशिया शिखर सम्मेलन, जिसके सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे पूर्ण साक्षरता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा थे, में प्रतिष्ठित लोग भारत को निरंतर प्रयासों के माध्यम से निरक्षरता की बेयिों से मुक्ति दिलाने के तरीकों एवं माध्यमों पर चर्चा करते देखे गए।

2,500 से अधिक प्रतिनिधियों ने अपने विचार साझा किये, उन परियोजनाओं की गतिविधियों एवं मिशनों पर बात की जिन्हें अभी संपन्न किया जाना है, और साथ ही देश को पूर्णतः साक्षर बनाने की प्रक्रिया की रफ़्तार को बाने के लिए कई समझौता ज्ञापन भी हस्ताक्षरित किये गए। जानने योग्य कुछ बातें:

शिक्षक समर्थन

भारत का भविष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर निर्भर है और शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक सभी परिवर्तनों के केंद्र-बिंदु है। वर्तमान में, भारत में एक मिलियन शिक्षकों की कमी है एवं 6.5 लाख शिक्षक अनौपचारिक तौर पर कार्यरत है जिन्हें उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए, पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर ने कहा, "हम शिक्षक समर्थन पर ज़ोर देते है क्योंकि वे शिक्षा की सींी थामे हुए है और ये उस सींी पर चने वालो से भी अधिक महत्वपूर्ण है। रोटरी ने पिछले वर्ष 15,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है।"

डॉक्टर अंजली प्रकाश, लर्निंग लिंक फाउंडेशन की सीइओ ने कहा, "प्राथमिक स्कूलों की अनेक कक्षाओं में विविध पृष्ठभूमियों से आए बच्चों की संख्या 70 के आस-पास है। यह शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है; उन्हें तकनीक से लैस होने की आवश्यकता है और उनके पास एक परामर्श प्रणाली होना चाहिए।" इस वर्ष रोटरी एक लाख शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए लर्निंग लिंक के साथ साझेदारी कर रही है।

ग्रामीण इलाकों में, शिक्षक अंग्रेजी में प्रवीण नहीं है। ब्रिटिश काउंसिल के निदेशक एलन गेमेल ने कहा कि काउंसिल ने शिक्षकों को निपुण बनाने के लिए 12 राज्य सरकारों के साथ साझेदारी की है। पिछली सितंबर, चेन्नई एवं कांचीपुरम मंडल के स्कूलों में अंग्रेजी की प्रवीणता को उन्नत करने के लिए इसने मंडल 3230 के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। "वर्ष 2020 तक, काउंसिल अंग्रेजी भाषा की प्रवीणता में 1 मिलियन शिक्षकों को प्रशिक्षित करेगी जिससे वर्ष 2026 तक 50 मिलियन युवाओं को रोजगार मिल सकता है।"

ग्लोबल एजुकेशन के सीइओ रेकेल श्रॉफ ने कहा कि पिछले 15 वर्षों में शिक्षक प्रवीणता की अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में एशियाई देश ऊपर आये है। उन्होंने कहा, "सिंगापुर जैसे देशों में शिक्षण एक

रशीदा भगत

बायें से : पीडीजी सलीम रेज़ा , इंटरनेशनल इनर व्हील की निर्वाची अध्यक्ष डॉ कपिला गुप्ता, नेपाल शिक्षा सचिव शांता कुमार श्रेष्ठा, पूर्व बांग्लादेश शिक्षा सचिव नज़रुल इस्लाम खान, पीडीजी अज़ीज़ मेमन, पाकिस्तान और पीआरआईडी सुशिल गुप्ता।

सम्माननीय पेशा है, जहाँ सरकार ने शिक्षकों के प्रशिक्षण में बहुत अधिक निवेश किया है और सुनिश्चित किया है कि यह पेशा लाभदायक हो। वहाँ पर एक शिक्षक एक इंजीनियर के बराबर कमाता है।"

वयस्क साक्षरता

लूम्बा संस्थान के संस्थापक-अध्यक्ष लार्ड राज लूम्बा ने एक वीडियो संबोधन में याद किया कि कैसे एक विधवा के रूप में उनकी स्वर्गवासी माँ की तकलीफों ने उन्हें वयस्क साक्षरता का समर्थन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, "जब मेरे पिता की मृत्यु हुई, मेरी दादी, जो एक विधवा थी, ने मेरी माँ को उनके गहने उतारने के लिए कहा। मेरी माँ जिन्होंने मुझे अच्छी शिक्षा के साथ बा किया को मेरी शादी के दौरान मंडप से दूर रहने के लिए कहा गया।"

स्टार स्पोर्ट्स के दीप मुख़र्जी, जो सीआईआई की खेलों पर राष्ट्रीय समिति के महासचिव भी है, ने खेलों को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने का सुझाव दिया।

के विश्वनाथन

बायें से : रैकेल श्रॉफ, CEO, ग्लोबल एजुकेशन, ब्रिटिश कौंसिल डायरेक्टर एलन गेम्मेल और डॉ अंजली प्रकाश, CEO, लर्निंग लिंक।

बाल विकास

आरआईएलएम की TEACH एप, जिसका सभा में लोकार्पण हुआ, कुपोषित बच्चों के लिए भोजन को प्रायोजित करने की सुविधा देती है। "खाद्य सुरक्षा संस्थान, भारतीय खाद्य बैंकिंग तंत्र की एक इकाई, की सीईओ वंदना सिंह ने कहा कि, देश में 200 मिलियन लोग गंभीर कुपोषण से ग्रस्त है और स्कूली बच्चों पर पने वाले इसके प्रतिकूल प्रभावों को अभी भी नीति निर्माताओं एवं सरकार द्वारा समझना बाकि है। मिलियनों बच्चों को वह पोषित आहार नहीं मिलता है जिसे होटलों, पार्टियों, शादियों एवं सामाजिक कार्यक्रमों में बर्बाद किया जा रहा है। अच्छा पोषण उनकी ज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करेगा जिससे कि शिक्षण के बेहतर परिणाम मिलेंगे।"

संस्थापन कलाकार लीना केजरीवाल ने कहा कि बच्चों की खरीद-फरोख्त में एक उछाल देखा गया है और प्रति वर्ष 3 मिलियन लड़कियों को पूरी दुनिया में बेचा जाता है। एक भयानक आंके को बताते हुए, उन्होंने कहा, "प्रति वर्ष विश्व भर में यौन शोषण से पीति 16 मिलियन महिलाओं में से, 40 प्रतिशत बच्चियाँ होती है। भारत में स्थिति खौफनाक है क्योंकि 9 से 12 वर्ष की उम्र की लकियों का अपहरण करके उन्हें वैश्यावृत्ति एवं गुलामी में धकेला जाता है।"

हैप्पी स्कूल

भारत में इनर व्हील क्लबों, जिन्होंने 700 सरकारी स्कूलों का नवीनीकरण किया है और इस वर्ष ऐसी ही 250 परियोजनायें प्रक्रिया में है, की स्कूल पहुँच गतिविधियों के पीछे मित्रता एवं सेवा प्रेरक शक्तियां है। इनर व्हील क्लबों की एसोसिएशन की अध्यक्ष प्रभा रघुनन्दन ने कहा, "एक जर्जर भवन का पुनर्निर्माण एवं मरम्मत करने में रु 1-5 लाख का खर्च आता है।"

इनर व्हील ने साक्षरता मुहिम की गति को बाने के लिए 200 ई-शिक्षण केन्द्रों एवं 300 स्वाभिमान केन्द्रों की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त, इनर व्हील क्लब द्वारा चलाये जा रहे आशा किरण निवासों में 3,500 गरीब बच्चों को आश्रय दिया गया है और इसके कारण स्कूलों में नामांकन का अनुपात सुधरा है। वर्तमान वर्ष में, इनर व्हील सदस्यों ने लगभग 9,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है और 2,670 शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता पुरस्कार से सम्मानित किया है।

पीडीजी रवि वाडलामानी ने कहा कि रोटरी ने एक वर्ष में 1,500 हैप्पी स्कूलों की स्थापना की है, सभी आवश्यक सुविधाओं के साथ। रोटरी क्लब बैंगलोर, मंडल 3190, इस वर्ष रु5 करोड़ की लागत से 100 हैप्पी स्कूलों की स्थापना करेगा।

दक्षिण एशिया अपडेट

पाकिस्तान में साक्षरता दर 60 प्रतिशत है। फिर भी, उत्तर पाकिस्तान में, जहाँ बहुत सारे पोलियो के मामले है, महिलाओं की साक्षरता दर 2 प्रतिशत से भी कम है। दक्षिण एशिया अपडेट सत्र में पाकिस्तान के राष्ट्रीय पोलियो प्रमुख पीडीजी अज़ीज़ मेमन ने कहा, "यह हमारे लिए एक बी चुनौती है। एक महिला एक टीकाकरण कार्यकर्ता पर दरवाजा बंद करते वक्त नहीं जानती कि वह क्या कर रही है। अगर ज्यादा लोग साक्षर होंगे, तो पाकिस्तान पोलियो मुक्त बन सकता है।"

नेपाल के शिक्षा मंत्रालय के सचिव शांता कुमार श्रेष्ठ ने कहा कि उनकी सरकार 110 ई-शिक्षण केन्द्रों की स्थापना करेगी और 10,000 बच्चों को वापस स्कूल भेजेगी। 100 स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने एवं 500 शिक्षक सहायता कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान करने के लिए मंडल 3292 के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया है।

बांग्लादेश के पूर्व शिक्षा सचिव नज़रुल इस्लाम खान ने कहा कि सरकार, मुफ्त किताबें, मध्याह्न भोजन एवं वज़ीफा जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों को स्कूलों में वापस लाने के लिए लुभा रही है। वर्तमान में, 78 लाख बच्चों को वज़ीफा मिल रहा है।■

RIPE इयान राय्सली की भारत यात्रा

सबसे ऊपर: बीना देसाई (पीडीजी आशीष देसाई की धर्मपत्नी), आरआईडी मनोज देसाई, शर्मिष्ठा देसाई, जूलियट राय्सली, इयान राय्सली, पीडीजी अशोक गुप्ता और कॉलेज ऑफ़ गवर्नर्स और उनकी पत्नियाँ जयपुर में; दाएं ओर: जूलियट, इयान रिसेली, पीआरआईडी अशोक महाजन, डीजी गोपाल मंधानिया और अन्य रोटरी के नेता अपनी-अपनी पत्नियों के साथ मुंबई में कोकिलाबेन अस्पताल की अध्यक्ष टीना अंबानी के साथ; नीचे: इयान राय्सली और जूलियट का जयपुर MDPETS में पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया।

नीचे: इयान राय्सली और जूलियट के साथ पीडीजी एस आर योगानंद, डीजी एच आर अनंत, राजश्री योगानंद और डीजीई आशा प्रसन्ना कुमार बेंगलुरु में। दाएं: खोपोलि में शर्मिष्ठा और आरआईडी मनोज देसाई के साथ इयान राय्सली और जूलियट।

दाएं से: आरआईडीई सी बास्कर, जूलियट राय्सली, डीजी गोपाल मंधानिया, इयान राय्सली, पीआरआईडी अशोक महाजन और पीडीजी चंद्रशेखर कोलवेकर मुंबई में।

इयान राय्सली और जूलियट (बाएं से) डीजीई जवारीलाल जैन, डीजी नटराजन नागोजी, डीजीई श्रीनिवासन और नंदिनी नागोजी के साथ चेन्नई में।

जयपुर में MDPETS में शर्मिष्ठा देसाई, इयान राय्सली और जूलियट।

इयान राय्सली और जूलियट का मदुरै में (बाएं से) डीजीई पी गोपालकृष्णन, डीजी एम मुरुगानंदम और पीडीजी आर तीनचंद्रन द्वारा स्वागत किया गया।

उत्कृष्ट माता एवं बाल स्वास्थ्य रक्षा को वहनीय बनाना

रशीदा भगत

रोटरी क्लब मद्रास मेट्रो ने, 150,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान के जरिये चेन्नै के VHS (स्वैच्छिक स्वास्थ्य सेवा)में एक बढ़िया, नया भवन समूह बनवाकर दिया।

''पिछले 35 सालों से गुजरात के वापी में 200-बिस्तरों वाले अस्पताल के संचालक की हैसीयत से, रोटरी क्लब मद्रास मेट्रो की इस उत्कृष्ट परियोजना तथा चेन्नइ के VHS की "चिकित्सीय सेवा और दूरदर्शिता से' बेहद प्रभावित हुआ हूँ। जिस तरह से आप गरीब व मध्यम वर्ग के लोगों तक वाजबी दाम पर चिकित्सीय सेवायें पहुँचा रहे हैं वह तारीफ के काबिल है,'' टीआरएफ के ट्रस्टी चैयर कल्याण बेनर्जी ने, VHS में, अभिमन्यू मैटर्नीटी एंड चाईल्ड हेल्थ केअर (माता एवं बाल स्वास्थ्य रक्षा) सुविधा का उदघाटन करते हुये यूँ कहा।

रो इं मंडल 3230 के अंतर्गत रोटरी क्लब मद्रास मेट्रो द्वारा मलेशीया के रो इं मंडल 3300 के अंतर्गत रोटरी क्लब कजाँग की सहकार्यता में की गयी 150,000 डॉलर की ग्लोबल ग्राँट परियोजना का एक हिस्सा, इस परियोजना का निधिकरण किया था रोटेरियन रमणा शेट्टी के 'जी के चैरीटेबल ट्रस्ट' ने तथा इस बढ़िया सुविधा के लिये चिकित्सीय उपकरण दी 'उषा के. जॉली चैरीटेबल ट्रस्ट' व 'युनाईटेड वे ऑफ चेन्नइ' ने की।

मध्यम और गरीब वर्ग को वहनीय स्वास्थ्य रक्षा प्रदान करने की दूरदर्शिता और सेवा भावना के लिये VHS को तथा उत्कृष्ट परियोजनायें कार्यान्वित करने के लिये रोटरी क्लब मद्रास मेट्रो की सराहना करते हुये बेनर्जी ने कहा, ''क्यों कि मैं दुनिया भर की यात्रा करता हूँ, पहले 2011-12 में रो इं अध्यक्ष की हैसीयत से और अब रोटरी फाऊँडेशन के चैयर के रूप में, जिसका शुमार भारत की चोटी की 6 धर्मार्थ संस्थाओं में किया जा सकता है, मैं आप

बाएं से: रोटेरियन के वी रमाना शेट्टी, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर कल्याण बेनर्जी ,रोटेरियन दिलीप बजाज,वीएचएस सचिव डॉ एस सुरेश, उद्योगपति ए सी मुथैया, कॉग्निजेंट वाइस चेयर एन लक्ष्मी नारायणन, ध हिंदू के पूर्व संपादक एन राम और वीएचएस अध्यक्ष डॉ एम एस स्वामीनाथन।

जैसे भारतीय रोटरी क्लबों द्वारा बिना शोरगुल के, अगोचक तथा अघोषित तरीके से किये गये उत्कृष्ट दर्जे के काम को देखकर प्रभावित होते रहा हूँ; इसमें जो सेवा भावना छलकती है वह लोगों की जिंदगियों में बेहद बडा परिवर्तन ले आती है।"

उन्होने भूतपूर्व अध्यक्ष स्व.जे जयराजु, जिन्होने इस परियोजना के लिये कडी मेहनत की थी तथा उसके लिये 150,000 डॉलर का वैश्विक अनुदान दिलाने पर क्लब के अध्यक्ष एस पी एम शिवकुमार की भी सराहना की ''जो इस साल फाऊँडेशन के एक प्रधान संकेंद्रण क्षेत्र, मातृ एवं बाल स्वास्थ्य रक्षा सुविधा सेवाओं को निश्चित ही बेहतर बनायेगा।''

बेनर्जी ने कहा कि जब कि टीआरएफ दुनिया भर में 100 साल की सेवा का उत्सव मना रहा है, ''मुझे दुनिया की एक पुरानी और उत्कृष्ट धर्मार्थ संस्था की अगुआई करने का विशेषाधिकार मिला है जो पोलियो नामक खतरनाक बीमारी से इस दुनिया को छुडवाने के लिये कठिन प्रयास कर रहा है और पाकीस्तान और अफगानीस्तान को छोडकर, जहाँ सालाना 50 से कम मामले दर्ज कराये जाते है, हम शेष जगहों में लगभग इस

लक्ष्य को हासिल कर चुके हैं। नाईजीरीया भी अब सुरक्षित है।''

ट्रस्टी चैयर ने कहा कि टीआरएफ ''रोग नियंत्रण, साक्षरता, मातृ एवं बाल स्वास्थ्य रक्षा, आर्थिक विकास, सुरक्षित पेयजल का प्रावधान और हमारे शाँति छात्र कार्यक्रमों के जरिये दुनिया भर में शाँति स्थापित करना आदि क्षेत्रों में सालाना लगभग आधा मिलियन डॉलर'' खर्च करता है। ''आप जैसे रोटेरियन, अपने वैयक्तिक अंशदानों के जरिये, हमारे फाऊँडेशन को सक्रिय रख रहे हैं। जब मैं इस खूबसूरत सुविधा जैसी परियोजनाओं को देखता हूँ तो मैं लोगों में निरंतर देखी जा रही अच्छाई, उदारता, दरियादिली और भारत में हमारे रोटेरियनों द्वारा किये गये उत्कृष्ट काम को देखकर चकित रह जाता हूँ।''

सभा का संबोधन करते हुये, प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक तथा VHS के अध्यक्ष डॉ एम एस स्वामीनाथन ने कहा VHS के संस्थापक स्व.डॉ के एस संजीवी इस सुविधा को देखकर बेहद खुश हुये होंगे क्यों कि उनकी एक प्राथमिक चिंता थी मातृ एवं बाल स्वास्थ्य सुविधा (MCH)। ''यदि हम चउक पर आर्थिक तथा तकनीकी संसाधनों की लागत लगा सकते हैं तो शिशु मृत्यु दर, जन्म के समय कम वजन, आदि को घटाया जा सकता है। थकज्ञ द्वारा 'सब के लिये स्वास्थ्य' की संकल्पना लाये जाने से काफी पहले, डॉ संजीवी ने उसके बारे में सोचा था। लेकिन महज संकल्पना का होना ही काफी नहीं है, उसे हासिल करने एक कार्यप्रणाली की जरुरत है।''

VHS के सचिव डॉ एस संजीवनी ने कहा कि जब कि पिछले दशक में उच्च श्रेणी की चिकित्सीय रक्षा में एक उदाहरणीय बदलाव देखा जा रहा है, इस पर होने वाली कीमत ज्यादातर लोगों की पहुँच से बाहर है। तक्ह में, चुनौति इस बात की है कि चिकित्सीय कीमत को किस तरह कम कराया जाये और आम जनता के लिये स्वास्थ्य रक्षा को वहनीय बनाया जाये।, जो डॉ संजीवी का सपना था। इस सपने को चिकित्सीय पेशे के अनेक श्रेष्ठ व्यावसायिकों द्वारा कई सालों से आगे बढाया गया और ''हम ने खुद से कहा कि हम उस पथ से नहीं हटेंगे।''

जब इस परियोजना पर विचार किया गया था, ''हम समझ पाये कि यह तब ही संभव हो पायेगा जब समुदाय हमारे हाथ थामकर चलेगा।'' खुशकिस्मती से रोटेरियन रमणा शेट्टी इस नये भवन को निधिकृत करने आगे आये। 'युनाईटेड वे ऑफ इंडिया' जिसका प्रतिनिधित्व किया 'कॉग्नीजंट' के उपाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण और शामला अशोक ने तथा रोटेरियन दिलीप बजाज के प्रतिनिधित्व में, 'के.जॉली चैरीटेबल ट्रस्ट ने प्रसव-उपरांत रक्षा उपकरण दिये; इन्नर वील क्लब, मद्रास मेट्रो ने बाल मरीज विभाग में, रंगों की छीटों से ताजगी भर दी और सुरक्षित पेय जल के लिये निशुल्क जल प्रशोधन यंत्र लगवाकर दी।

डॉ सुरेश ने कहा कि 18 साल से कम उम्र के लगभग 20 प्रतिशत बच्चों को खास स्वास्थ्य रक्षा की जरुरत है और यह नया भवन इस तरह के बच्चों के लिये वहनीय रक्षा प्रदान करने की दिशा में प्रयास करेगा और यहाँ के डॉक्टर निवारक रोगों पर शोध काम भी करेंगे।

अपने संबोधन में लक्ष्मी नारायणन् ने कहा कि भारत में परोपकारिता, स्वास्थ्य रक्षा मुकाबले शिक्षण से ज्यादा जुडा है और जब तीन साल पहले निगमित CSR का आदेश आया था, तब लगभग 70 प्रतिशत निधि, शिक्षण के लिये ही दी गयी और केवल 20 प्रतिशत ही स्वास्थ्य रक्षा के लिये दी गयी; शेष 10 प्रतिशत इतर गतिविधियों के लिये जाती है जैसे आजीविका के अवसर आदि। लेकिन यह सब बदलने लगा है।

जब कि भारत ने शिक्षण के क्षेत्र में त्वरित प्रगति की है, स्वास्थ्य रक्षा पीछे रह गयी है। लेकिन VHS जैसी संस्थाओं की बदौलत ऊँचे दर्जे की स्वास्थ्य रक्षा स्वीकरणीय और वहनीय बन गयी है। उसे वहनीय बनाने के लिये पूँजिगत व्यय तथा टैक्नोलोजी का और भी ज्यादा उपयोग करना जरुरी था।

एक बार उदार दान निधि दी जाने लगी, जैसा कि इस मौके पर देखा गया और पूँजिगत व्यय का जिम्मा ले लिया गया, चिकित्सीय रक्षा पर होने वाला व्यय आधा हो गया। ''मैं यह विवरण देते हुये खुश हूँ कि, भारत में उतने ही ऊँचे दर्जे की चिकित्सीय रक्षा के लिये, होने वाला व्यय अब कम होते जा रहा है; यह रफ्तार दुनिया के किसी भी हिस्से के मुकाबले तेज है। इसका श्रेय धमार्थ अंशदानों को जाता है; लेकिन इससे भी ज्यादा श्रेय टैक्नोलोजी को जाता है।''

एक सादी सी मिसाल थी विकिरण और एक्स-रे की चिन्हित संख्या को पढ़ना, जिसे अब कंप्युटर में की जा सकती है। ''भारत के दूरवर्ती हिस्सों में लिये गये एक्स-रे को 60 मिनिटों में एक विशेषज्ञ पढ़ सकता है और दो साल पहले के शुल्क के एक-दसवे शुल्क पर इसका विश्लेषण किया जा सकता है और कंप्यूटर इसे कृत्रिम बुध्दि के साथ पढ़ सकता

कॉग्निजेंट वाइस चेयर एन लक्ष्मी नारायणन और टीआरएफ ट्रस्टी चेयर कल्याण बेनर्जी।

है जिसका खरापन 99 प्रतिशत है जो सहज पठन में नहीं मिल पाता है।

जब कि टैक्नोलोजी से वहनीयता बेहतर हो सकती है, अच्छे डॉक्टर उपलब्ध हो सकते हैं और उन तक की पहुँच भी बेहतर हो जायेगी, नर्स और परा चिकित्सकों की समस्या अब भी मौजूद है। ''दुनिया भर में इन व्यावसायिकों की बडी कमीं है और प्रत्याशा की जाती है कि भारत की जनाँकिक पार्श्वभूमि को देखते हुये 2025 तक लगभग 30 प्रतिशत चिकित्सीय व्यावसायिकों को तैयार करने की जरुरत पड जायेगी क्यों कि हम शंकर नेत्रालय, अरविंद नेत्र रक्षा और फिर VHS जैसी हमारी उत्कृष्ट संस्थाओं में चिकित्सीय व्यावसायिकों को प्रशिक्षित करने की क्षमता रखते हैं,'' नारायणन् ने कहा।

अखबार *ध हिंदु* के पूर्व प्रधान संपादक एन राम ने ''VHS में इतने सालों में डॉ संजीवी ने जिस तरह सत्यनिष्ठा, मूल्य और उत्कृष्टता की नींव खडी की थी उसे जिस जोश के साथ आपने बनाये रखा है'' उसके लिये डॉ सुरेश तथा VHS दल को सलामी दी। उनका सपना था गरीब तथा मध्यम वर्ग की स्वास्थ्य रक्षा जरुरतों को पूरा करना, ''और यहीं पर लोकताँत्रिक भारत बुरी तरह से नाकामयाब रहा है, साथ ही साथ ऊँचे दर्जे का शिक्षण प्रदान करने में भी। लेकिन यह नाकामयाबी स्वास्थ्य रक्षा में अधिक जाहिर दिखायी देती है।''

क्लब के अध्यक्ष शिवकुमार ने उदार दान देने के लिये क्लब के सदस्य शेट्टी और बजाज का तथा उपयुक्त अंतर्राष्ट्रीय सहभागी के रूप में रोटरी क्लब कजांग को ले आकर, 150,000 डॉलर का ग्लोबल ग्राँट दिलाने में मदद करने के लिये पीडीजी पी टी राम कुमार का, शुक्रिया अदा किया।

चित्र: रशीदा भगत

सम्मेलन

बहुत जरूरी ऐप्स

अटलांटा में 2017 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में, 10-14 जून तक, आपका स्मार्टफोन आपके कार्यक्रम की पूरी जानकारी रखने, सामाजिक योजना बनाने और आपका मार्ग ढूंढने में आपकी सहायता कर सकता है। कुछ प्रमुख ऐप्स डाउनलोड करके अपने दैनिक जीवन से जुडे कार्यों को आसान बनाएं।

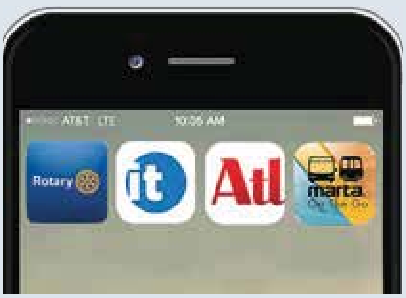

'राटरी ईवेंट एप्प' को डाउनलोड करते हुए शुरू करें: अपने एप्प स्टोर में 'रोटरी इवेंट्स' की खोज करते हुए इस एप्प को ढूंढें। यह एप्प आपको अपना दैनिक कार्यक्रम तैयार करने, विशेषज्ञ वक्ताओं के बारे में जानने, और सत्र का हैंडआउट डाउनलोड करने में मदद करेगा। इतना ही नहीं, यह एप्प आपको अन्य रोटरियनों से जुड़ने, उनके साथ तस्वीर साझा करने, सत्रों का मूल्यांकन करने, और सम्मेलन के आयोजकों को प्रतिक्रिया भेजने में मदद करेगा। यह एप्प 10 मई से डाउनलोड के लिए उपलब्ध होगा।

'अटलांटा प्लानइट एप्प' का उपयोग कर पता लगाएं कि शहर में संगीत, थियेटर, और कला के क्षेत्र में किन-किन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा हैं, जिसमें कार्यक्रमों की व्यापक सूचियाँ हैं। रेस्तरां और संगीत स्थलों के बारे में विशेषज्ञों की समीक्षाओं के लिए, अटलांटा मैगज़ीन एप्प डाउनलोड करें, जिसके माध्यम से आप *बेस्ट ऑफ अटलांटा* मैगज़ीन का दिसंबर 2016 का अंक $5.99 की भुगतान पर बिना सदस्य बने खरीद सकते हैं। उस अंक में लजीज भोजन करने, थियेटर और कला को देखने तथा संगीत सुनने के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थानों के बारे में बहुत सारे सुझावों को शामिल किया जाएगा।

जब आप जॉर्जिया विश्व कांग्रेस केंद्र के बाहर निकलते हैं, तो अटलांटा की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली, MARTA, की सवारी का आनंद उठाएं। नि:शुल्क MARTA On the Go एप्प, मार्गो के कार्यक्रमों, अनुमानित आगमन के समय, सिस्टम के मानचित्रों और आप के सबसे निकटतम स्टेशन या स्टॉप को खोजने की उपयोगी सुविधा प्रदान करता है।

- हंक सार्टिन

पंजीकरण कराने के लिए,
कृपया riconvention.org पर विजिट करें।

आपका उपहार: शुरुआत से अंत तक

आपके धन का सबसे अच्छा प्रबंधक रोटरी संस्थान है। यहाँ जाने क्यों

वर्ष 2016 में, रोटरी संस्थान को चैरिटी नेविगेटर' द्वारा उच्चतम संभावित अंक 100 में से 100 प्राप्त हुए - इसकी मजबूत वित्तीय स्थिति और पारदर्शिता एवं जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता के लिए। यह लगातार नौवां वर्ष है जब संस्थान ने, पूरे अमेरीका में स्थित परोपकारी-संस्थानों के एक स्वतंत्र मूल्यांकनकर्ता द्वारा, चार सितारा रेटिंग अर्जित की है, एक गौरव जो केवल 1 प्रतिशत परोपकारी-संस्थानों को प्राप्त हुआ है। इसी तरह एसोसिएशन ऑफ़ फण्डरेज़िंग प्रोफेशनल्स' ने वर्ष 2016 के लिए संस्थान को दुनिया का उत्कृष्ट संस्थान', एक पुरस्कार जो पूर्व में अनेक परिचित नामों जैसे केल्लोग्ग और मेकआर्थर को मिला है, के रूप में नामित किया। ये संगठन सहमत हुए है कि: **जब आप रोटरी संस्थान को दान देते है, आप समझदारी से निवेश करते है।** हमनें यह जानने के लिए आपके पैसे का शुरुआत से लेकर अंत तक पीछा किया कि कैसे संस्थान सुनिश्चित करता है क आपके उपहार आने वाले वर्षों में एक गहन प्रभाव को जन्म दे सकें।

आपके अनुदान का निर्देशन

एक कारण है जिसके लिए रोटरियन रोटरी संस्थान को दान देते है: यह आपके लोक-हितैषी लक्ष्यों को हासिल करने का एक आसान तरीका है - चाहे यह स्वच्छ पानी को समर्थन करने का हो, पोलियो उन्मूलन का, या एक विशेष वैश्विक अनुदान का। एप्रिल जेन्सेन, इवेंसटन इलिनोइस के रोटरी क्लब की एक सदस्य जो संस्थान के लिए कोष-विकास में कार्य करती है, कहती है, "सबसे छोटे उपहार को भी एक विशेष कोष - एक वैश्विक अनुदान, पोलियो, या विश्व कोष के एक ध्यानाकर्षण क्षेत्र - में दान दिया जा सकता है।"आप आपके उपहार को अप्रतिबंधित भी रहने दे सकते है ताकि संस्थान को उस पैसे का उन जगहों पर इस्तेमाल करने की आज़ादी प्राप्त हो सके जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता हो।

क्या आपने कभी एक छात्रवृत्ति या अपने परिवार का स्वयं का संस्थान स्थापित करने की इच्छा की है परन्तु आप इसके प्रशासन का सिरदर्द झेलना नहीं चाहते? रोटरी संस्थान को इसे संभालने दीजिये। जब आप 25,000 डॉलर से ऊपर का उपहार देते है, तो आपको एक व्यक्तिगत रिपोर्ट मिलती है जिसमें उस परियोजना का ब्यौरा होता है जिसका आप समर्थन करते है। आप अपने उपहार को आपकी वित्तीय स्थिति के अनुकूल तरीके से दे सकते है - जैसे नकदी, शेयर, या वसीयत।

आपके पैसे का निवेश

वर्ष 2015-16 में, संस्थान द्वारा खर्च किये गए पैसे का ९१ प्रतिशत कार्यक्रमों एवं अनुदानों में गया, केवल ९ प्रतिशत पैसा प्रशासन के लिए खर्च हुआ। कैसे संस्थान इस बात को सुनिश्चित करता है कि आपके द्वारा दिए गए दान का अधिकांश हिस्सा आपकी इच्छा के संवहनीय कार्यक्रमों की सहायता करे? रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के पूर्व अध्यक्ष रॉन डी. बर्टन, संस्थान की निवेश समिति के अध्यक्ष, कहते है, "इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि परियोजनाओं के लिए धन वहाँ उपलब्ध हो जब उसकी आवश्यकता हो, संस्थान के वार्षिक कोष के सभी दान का तीन वर्षो के लिए निवेश किया जाता है।" निवेश समिति में संस्थान के तीन ट्रस्टी एवं इस क्षेत्र में पेशेवर छह रोटरियन शामिल है, जो सुनिश्चित करते है कि इस अवधि में आपका पैसा जिम्मेदारी के साथ निवेश किया जाए। जब तीन वर्ष पूर्ण होते है, आपके उपहार से होने वाली निवेश की कमाई संस्थान के परिचालन खर्च के लिए इस्तेमाल की जाती है। जेन्सेन कहती है, "मैं हमारे संगठन की तरह किसी और संगठन को नहीं जानती जिसमें ऐसी व्यवस्था हो।" यह बहुत बढ़िया है। आपके मूलधन को 50/50 में बांटा जाता है, आधा हिस्सा आपके मंडल मनोनीत कोष में जाता है और शेष आधा विश्व कोष में, एक कुंड जिसे रोटरी संस्थान के ट्रस्टी उन अनुदानों की पूर्ती करने के लिए इस्तेमाल करते है जहाँ इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

कोई भी उपहार एक विशेष कोष – पोलियो उन्मूलन, एक विशेष वैश्विक अनुदान, या रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक – में दान दिया जा सकता है।

अनुदान प्रदान करना

जब संस्था एक परियोजना को धन प्रदान करने के लिए अनुदान देती है, तो यह कैसे सुनिश्चित करती है कि आपके पैसे का चिरस्थायी प्रभाव होगा? फिलिप जे. सिल्वर्स, पूर्व रोई निदेशक एवं संस्थान के तकनीकी सलाहकारों के कैडर के प्रमुख, समझाते है, "समुदाय के मूल्यांकन के साथ संवहनीयता शुरू होती है।" रोटरियन परियोजना बनाने से पूर्व, समुदाय में लोगों - पिताओं, माताओं, बच्चों, बुजुर्गों, राजनैतिक नेताओं - से बात करते है ताकि समुदाय की आवश्यकताओं के व्यापक संदर्भ को समझा जा सके। "फिर जो भी परियोजना उभरती है, समुदाय उसमें अपने चिन्ह देख सकता है, वह कहते है। यह आपको आपका वांछित सामान खरीदकर नहीं देती है। हम सभी खरीददार के पछतावे से परिचित है। वास्तव में हम शुरुआत से समुदाय का स्वामित्व चाहते है।"

एक वैश्विक परियोजना के निर्माण में संवहनीयता के छह तत्वों को शामिल किया जाना अनिवार्य है: समुदाय से शुरुआत, स्थानीय स्वामित्व को बावा, प्रशिक्षण देना, स्थानीय खरीददारी, स्थानीय निधीकरण ढूँढना, और अपनी सफलता को नापना। ये तत्व सुनिश्चित करते है कि परियोजना लंबी-अवधि के उपाय दे ताकि अनुदान की समाप्ति के पश्चात् समुदाय स्वयं सहायता कर सके।

परियोजना प्रायोजकों को यह सब स्वयं से समझने की जरुरत नहीं है। परियोजना के निर्माण

के लिए रोटरी संस्थान स्टाफ उपलब्ध करवाता है - अनुदान अधिकारियों को क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक मुद्दों की जानकारी होती है, और क्षेत्रीय ध्यानकेन्द्रण प्रबंधकों को उनकी विशेषज्ञता में उल्लेखनीय क्षेत्रीय अनुभव होता है।

संवहनीय एवं बे पैमाने के वैश्विक अनुदान को विकसित करने की नियोजन प्रक्रिया की शुरुआत में मार्गदर्शन करने के लिए क्लबों को स्थानीय एवं क्षेत्रीय विशेषज्ञों से जोकर, रोटरी ऐसी परियोजनाओं को धन देने के लिए प्रतिबद्ध है जिनका समुदाय पर स्थायी प्रभाव होगा। आपके मंडल का अंतर्राष्ट्रीय सेवा प्रमुख, एक रोटरियन जिसे आपके मंडल गवर्नर द्वारा नियुक्त किया जाता है, आपकी मदद स्थानीय रोटरियन विशेषज्ञों - जैसे कि रोटरियन कार्यवाही समूहों के सदस्यों, रोटरेक्टरों, और शांति दूतों एवं अन्य भूतपूर्व सदस्यों - के तंत्र से जुने में आपकी मदद कर सकता है जो परियोजनाओं एवं वैश्विक अनुदान नियोजन में मदद करने के लिए स्वेच्छा से सामने आए है।

मजबूत अनुदान परियोजनाओं को सुनिश्चित करना

रोटरी संस्थान के पास विशेषज्ञता एवं सलाह प्रदान करने के लिए रोटरियन स्वयंसेवकों का एक तंत्र उपलब्ध है, जो तकनीकी सलाहकारों का कैडर कहलाता है। रोटरी के छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों एवं

तीन वर्ष पश्चात्, आपके उपहार से होने वाली निवेश की कमाई संस्थान के परिचालन खर्च के लिए इस्तेमाल की जाती है।

अन्य विशेषताओं, उदाहरण के लिए - मध्यस्थता, राजनयिक, प्रसूति-विशेषज्ञ, इंजीनियर, बैंकर, और कृषि-विशेषज्ञ - में 700 विशेषज्ञों के डेटाबेस के साथ वहाँ निश्चित तौर पर कोई है जो कोई रूकावट आने पर मदद कर सकता है।

कैडर के सदस्य इस बात को सुनिश्चित करने में एक अहम् भूमिका निभाते है कि दानकर्ताओं का धन एक लंबी-अवधि का प्रभाव बनाये। रोटरी संस्थान की तरफ से, बे अनुदान को देने से पूर्व कैडर के सदस्य उसकी संभाव्यता का एक तकनीकी निरीक्षण करते है एवं साईट का दौरा करते है ताकि मूल्यांकन किया जा सके कि कैसे अनुदान का इस्तेमाल किया जा रहा है। फ्रांसिस "तुसु" तुसुबिरा, रोटरी क्लब कम्पाला-नार्थ, युगांडा से एक कैडर सदस्य कहते है, "रोटरियन जानना चाहते है कि क्या कोई कार्य नहीं हो पा रहा है या क्या वे कुछ बेहतर कर सकते है।" वहाँ कैडर हर संभव सहायता देने के लिए मौजूद है।

"कैडर के सदस्य आकस्मिक वित्तीय परीक्षण भी करते है संस्थान को यह सुनिश्चित करने में मदद के लिए कि जैसा स्वीकृत किया गया था वैसा अनुदान का उपयोग किया जा रहा है या नहीं।" सिल्वर्स कहते है, "आम तौर पर कैडर जवाबदेही एवं गुणवत्ता का आश्वासन प्रदान करता है, और हमारे निवेशकों - लोग जो दान देते है की - एवं लाभार्थियों की भी रक्षा करता है। ऐसा करके हम रोटरी के नाम की भी रक्षा करते है। हम हमारे लाभार्थियों को एक वचन देते है; हम सुनिश्चित करना चाहते है कि यह उच्च गुणवत्ता का हो। हमारा नाम और हमारे नाम से भी अधिक, हमारा वचन-दांव पर होता है।"

सफलता एवं संवहनीयता का निरीक्षण

परियोजना की बनावट के माध्यम से अनुदान का निरीक्षण एवं मूल्यांकन उसी में निहित होता है। सिल्वर्स कहते है, "समुदाय आंकलन से, हम सीखते है कि किस प्रकार के लंबी-अवधि के प्रभावों को हम साथ में जन्म दे सकते है। हम कैसे इसे नाप सकते है? कैसे हम यह जानते है कि बदलाव होता रहेगा? कैसे हम अपने दानकर्ताओं एवं लाभार्थियों को यह दिखा सकते है कि हमने वास्तव में एक बदलाव लाया है?" रोटरी फैमिली हेल्थ डेज़ को रोटरी संस्थान की एक विचारणीय वैश्विक अनुदान परियोजना के रूप में स्वीकृत किया गया है। उन्हें अफ्रीका के विभिन्न देशों में आयोजित किया गया जहाँ एचआईवी/एड्स के मामले और वायरस की जांच किये जाने का कलंक दोनों अधिक है। परियोजना में आगे की कार्यवाही का एक कदम निहित था जिसमें रोटरेक्टर एवं रोटरी समुदाय दल के सदस्यों ने उन मरीज़ों को बुलाया जिन्होंने इस परियोजना से स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त की थी। सिल्वर्स समझाते है: उन्होंने पूछा होगा, इस वर्ष आप रोटरी फॅमिली हेल्थ डेज़ में क्यों आये? कारण हो सकता है कि उन्हें एक दांत निकलवाना था। और कुछ? इन प्रश्नों के सिलसिलों में, 71 प्रतिशत उत्तर देने वालों ने कहा कि उनकी एचआईवी की जांच की गयी। यह एक बा सांस्कृतिक परिवर्तन है। परियोजना के प्रायोजक एक अंतिम रिपोर्ट लिखते है जब उनका अनुदान समाप्त होता है। इसमें प्रभाव के शुरूआती परिणाम शामिल होते है। चूंकि रोटरियन शुरुआत में ही परियोजना में संवहनीयता को निहित करते है, इसके फायदे होते रहते है।

जिस तरह संस्थान परियोजना प्रायोजको को उनके अनुदान के प्रभाव की निगरानी करने के लिए कहता है, उसी तरह संगठन भी उसके अनुदान प्रतिरूप का एक त्रैवार्षिक मूल्यांकन करता है। संस्थान के ट्रस्टी सबसे हाल ही में किये गए मूल्यांकन, वर्ष 2015-16 में संचालित, की प्रतिक्रिया का इस्तेमाल कर रहे है ताकि अनुदान प्रक्रिया के विभिन्न तौर-तरीकों को, जैसे क्लबों एवं मंडलों द्वारा साझेदार ढूँढने की प्रक्रिया में सुधार करके, समुदाय की जरूरतों के आंकलन के लिए आवश्यक तत्वों का निर्धारण करके, और कैडर एवं अन्य साझेदारों के सहयोग से परियोजना प्रायोजकों के प्रयासों में वृद्धि करके, समायोजित किया जा सके।

जोन 20ए के क्षेत्रीय रोटरी संस्थान समन्वयक और रोटरी क्लब नैरोबी-मुथैगा नार्थ, केन्या के एक सदस्य एरिक किमानी कहते है, उपहारों द्वारा लंबी-अवधि के प्रभावों को सुनिश्चित करने के लिए संस्थान द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों में से, सबसे बड़ा नियंत्रण एवं संतुलन रोटरियन स्वयं हो सकते है। वह कहते है, जब आपके पास अच्छे रोटरियन होते है, तो यह आपके प्रबंधन का सबसे अच्छा मापक होता है। जो कोई भी रोटरियन को जानता है यह देखता है कि कैसे हम अपना समय एवं संसाधन देते है। वे जानते है कि उनका पैसा अच्छे हाथों में है।

ग्वेन केरेवल द्वारा चित्रण
ध रोटेरियन से पुनः प्रकाशित

श्रवण शक्ति बाधित बच्चों के शिक्षण में क्राँति

आशा कृष्णकुमार

किसी स्कूल के लिये इतना सन्नाटा कुछ अजीब सी बात है। बरामदों में भी चहलपहल नहीं है। पिछले दरवाजे से कक्षा में प्रवेश करके देखे, एक भी बच्चा मुडकर आपको नहीं देखेगा। लेकिन कक्षा के आगे वाले हिस्से में उनके सामने जाकर खडे हो जाईये, जिज्ञासु नजर और हिचकिचाती मुस्कान के साथ आपका स्वागत किया जाता है। जब शिक्षिका आपकी मौजूदगी के बारे में उन्हे बतलाने अपनी उंगलियों को इधर उधर हिलाती है, तो उन बच्चों की मुस्कान और भी गहरी हो जाती है और कक्षा भर में उत्साह फैल जाता है। जल्द ही आप भूल जाते हैं कि ये बच्चे ना सुन सकते हैं और ना ही बोल सकते हैं।

संचारण मुद्दों के बावजूद, यें खास बच्चे सीखने के लिये उत्सुक है। उनके सबकों को रंगीन, चमकदार और तस्वीरों को उपभोक्ता मित्रवत बना दिये जाने के बाद वें अब और भी ज्यादा उत्सुक हो गये हैं।

देवासी मूक बधीर विद्यालय श्रवण शक्ति में अक्षम भोर स्कूल के प्रधानाचार्य शरद यादव का कहना है कि स्कूल की 33 सालों की मौजूदगी के दौरान बच्चों को कक्षा के लिये आने में इतनी खुशी नहीं हुयी होगी। और तो और, पुणे जिले में श्रवण शक्ति बाधित बच्चों के लिये चलाये जा रहे, सरकार से मान्यता प्राप्त 24 विद्यालयों में पढ़ने वाले 2,200 बच्चे, मुश्किल से एक दिन भी स्कूल से गैर हाजिर रहे होंगे।

नीरस, अंतहीन शब्दों को स्पष्ट, दमदार चाक्षुक दृश्यों में बदलना सक्षम का काम है जो अनोखे तरीके से डिजाईन की गयी रोटरी फाऊँडेशन की एक ई-पठन परियोजना है। यह उपभोक्ता मित्रवत सॉफ्टवेयर तैयार करने सूचना टैक्नोलोजी को उत्तोलित करती है जिसकी वजह से इन बच्चों के लिये

पठन सामग्रियों की गुँजाईश और उसका विस्तार बढ़ गया है। श्रवण-शक्ति प्रशिक्षिका रोहीणी के मुताबिक, क्यों कि इसके मापांक किंडरगार्टन-पूर्व स्तर से शुरू होते हैं, बच्चे आसानी से सीख लेते हैं और 2री कक्षा में आते आते काफी प्रवीण हो जाते हैं।

इस टैक्नोलोजी को ले आने वाली कंपनी 'समकाँसप्टस टैक्नोलोजी' ने, 2010-11 में, रोटरी के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के जरिये पहली बार उसका प्रयोग किया। बडे पैमाने पर, ई-पठन परियोजना की पहल तथा कामयाब तरीके से कार्यावित करने वाला भारत का पहला मंडल था रो इं मंडल 3131 और पहला क्लब रोटरी क्लब पुणे कतरज था। एक दर्जन कार्पर्रट दाताओं तथा रु 10 करोड़ से ज्यादा रकम के लगभग 25 वैश्विक अनुदानों की मदद से मंडल ने 3000 इकाईयाँ स्थापित करने का काम पूरा किया।

जब वें डीजी थे, तब दीपक शिकारपुर ने खास बच्चों तक इस परियोजना को पहुँचाना चाहा। मंडल में डॉ.कल्याणी माँडके के अधीन चलाये जा रहे एक खास स्कूल में 2013-14 के दौरान इस परियोजना को आजमाकर देखा गया। जल्द ही, इस प्रयोग को चार स्कूलों तक विस्तृत किया गया। प्रत्येक स्कूल को ई-पठन पैकेज की एक इकाई दी गयी। शुरू से

बच्चों के मन की बात

''मेरे 'एनीमेटड' पाठ में यह देखने के बाद कि किस तरह एक कार काम करता है मैं एक मकानिक बनना चाहता हूँ'' नरेंदर, 4थी कक्षा, मूक बधीर निवासी स्कूल, इंदापुर

''अब मेरी एक इच्छा है। मैं मानव शरीर से जुडे विषय को पढ़ना चाहता हूँ'' राहुल, 5वी कक्षा, अयोध्या चैरीटेबल ट्रस्ट बधीर निवासी विद्यालय

''मुझे इतिहास और कवितायें पसंद है। वानर से मानव तक का क्रमविकास कितना चमत्कारी मालुम होता है'' वैष्णवी, 5वी कक्षा, अयोध्या चैरीटेबल ट्रस्ट बधीर निवासी स्कूल

''मैं गणित से नफरत किया करता था। लेकिन अब मुझे अच्छा लगने लगा है। मैं गणित का शिक्षक बनना चाहता हूँ।''

पृथ्वीराज, 7वी कक्षा, मूक बधीर निवासी स्कूल, इंदापुर

''मुझे स्कूल आते हुये खुशी होती है। विज्ञान से संबंधित प्रयोग करना अच्छा लगता है। सूरज के ईर्द गिर्द धरती का आवर्तन और परिभ्रमण, चकित कर देता है। मैंने इसे एक ही दिन में सीख लिया।'' अमृता, 3री कक्षा, मूक बधीर निवासी स्कूल, इंदापुर

ही यह परियोजना बच्चों के बीच लोकप्रिय हो गयी। बच्चे चाक्षुक पठन से उत्साहित हुये और स्कूल के बाद भी उसका उपयोग करते थकते नहीं थे।

प्रारंभिक सफलता से प्रोत्साहित होकर डीजी विवेक अरान्हा (2014-15) ने मंडल के अंतर्गत श्रवण-शक्ति से बाधित सभी स्कूलों के डिजीटीकरण को निधिकृत करने उद्योगपति कृष्ण कुमार बी जिंदाल को राजी करा लिया। इस परियोजना के लिये 250,000 डॉलर की उनकी AKS निधि में से एक हिस्से का उपयोग किया गया था। परियोजना वर्तमान डीजी प्रशाँत देशमुख के अधीन जारी रही और क्लब अध्यक्ष अजित कुलकर्णी के नेतृत्व में रोटरी क्लब पुणे कतरज द्वारा कार्यांवित की गयी।

परियोजना प्रमुख मीना घलसासी ने श्रवण-शक्ति बाधित तथा दिमाग से अक्षम बच्चों के लिये आवासीय कार्यक्रमों के जरिये सुनिश्चित किया कि स्कूलों पर ध्यान संकेंद्रण किया जा रहा है। वें कहती है ई-पठन प्रक्रिया को कोरेगॉव भीम के सेवाधाम स्कूल के, 'दिमाग से अक्षम बच्चों' पर भी आज़माकर देख लिया गया और नतीजे प्रोत्साहक रहे क्यों कि बच्चों ने उसे आसानी से अपना लिया।

उनकी खास जरुरतों को समझने के लिये रोटेरियन मीना ने चौबीसों स्कूलों को भेंट दी। शिक्षकों को पहले चाक्षुक पठन की संकल्पना के प्रति संवेदनशील बनाया गया; आगे उन्हे टैक्नोलोजी और परियोजना के त्वरित कार्यान्वयन में प्रशिक्षित किया गया। श्रवण-शक्ति बाधित बच्चों के लिये चालित सभी 24 स्कूलों के डिजीटीकरण में पुणे ही देश भर में अव्वल स्थान पर है।

इन स्कूलों में अब ई-पठन की संपूर्ण इकाई उपलब्ध है जिसमें इंटरनेट का उपयोग करने तथा अपनी खुद की प्रस्तुतियाँ पेश करने शिक्षकों के लिये चंद 'टैबलेट' भी शामिल है।

जनवरी 1 के रोज, AKS सदस्य तथा परियोजना के दाता कृषणकुमार जिंदाल, डीजी प्रशाँत देशमुख, अध्यक्ष अजित कुलकर्णी, DRFC दीपक शिकारपुर तथा पीडीजी विवेक अरान्हा की मौजूदगी में प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. रघुनाथ माशेलकर द्वारा ई-पठन पैकीजों के 110 सेटों को 24 स्कूलों के प्रतिनिधियों को विधिवत सौंपा गया।

माशेलकर ने कहा, ''जरुरी नहीं कि अक्षमता, जिंदगी के अवसरों का गला घोंटकर रख देगी।'' अभावग्रस्त परिवारों से आने वाले बच्चों के फायदे के लिये टैक्नोलोजी का उपयोग करने के समर्थन में उन्होने जोर देकर कहा कि जो नवप्रवर्तन ''वहनीय उत्कृष्टता'' की कसौटी को पूरा करते हो वें ही भारत को अव्वल स्थान पर ले आ सकते हैं। परियोजना सक्षम निश्चित ही इस दिशा में रखा गया एक सही कदम था।

सामाजिक उद्यमी रोटेरियन बिरेन धरमसी ने, जो 'काँसेप्टस् टैक्नोलोजीस'' के प्रमुख हैं, जिसने इस ई-पठन परियोजना को विकसित किया था, कहा 2010 में अपनी पहली भेंट के दौरान टीआरएफ ट्रस्टी कल्याण बैनर्जी परियोजना से इतने प्रभावित हुये थें

येंं शानदार, अनुनादी विजुअल, बच्चों के ध्यान को बनाये रखते है। और असरदार तरीके से सीखने के लिये, हर एक पाठ एक पुन:लेखन के साथ खत्म हुआ है।

कि उन्होने इसे ''पोलियो उन्मूलन के बाद रोटरी की अगली बडी पहल'' बतलाया।

इस परियोजना के अंतर्गत, जब कि महाराष्ट्र राज्य के पाठ्यक्रम को ही आधार माना था विषयवस्तु उससे भी काफी आगे तक फैली हुयी थी। येंं शानदार, अनुनादी विजुअल, बच्चों के ध्यान को बनाये रखते है। और असरदार तरीके से सीखने के लिये, हर एक पाठ एक पुन:लेखन के साथ खत्म हुआ है। इसमें अनेक उत्तरों के विकल्पों के साथ सवालों का एक सेट तैयार किया गया है। येंं सभी आकर्षक तरीके से सजीवित किये गये हैं। इसके प्राप्ताँकों को रोचक बनाया गया है, जो सदैव-प्रसिध्द क्रिकेट के 'स्कोर' की संकल्पना के आधार पर तैयार किया गया है। हर एक सही जवाब का मतलब है आपने एक 'छक्का' मार दिया है (पर्दे पर एक अंपायर, अपने दोनों हाथों को ऊपर हिलाते हुये दिखायी देते हैं) और हर एक गलत जवाब का मतलब है 'डक' (पर्दे पर अंडे देने वाला एक पंछी दिखायी देता है)। इसी तरह सही जवाब देने वालों को पुरस्कार के रूप में 'लड्डू' प्रदान करने वाले गणेशजी है; जब कि गलत जवाब देने वालों को चूहा मिलेगा! बोल या सुन नहीं पाने वाले येंं बच्चे 'छक्का' मारने पर या 'लड्डू' पाने पर उत्साहित हो उठते हैं। और यह माहौल एकदम संक्रामक हो जाता है।

बधीर बच्चों के लिये चलाये जाने वाले अयोध्या चैरीटैबल ट्रस्ट के निवासी विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रशाँत का कहना है: ''पहले, छात्रों को न्यून गणीतीय तथा वैज्ञानिक संकल्पनाओं को समझाने में या उनके शब्दावली और ध्वन्यात्मक कौशल को विकसित करने में शिक्षकों को काफी चुनौतियों का सामना करना पडा। उनके ध्यान को बनाये रखना इससे भी मुश्किल काम था। वह सब अब बदल चुका है।''

और फिर, कक्षा के बाद अपने आप, सीखे हुये पाठ को दोहराने के अवसर ने उनके आत्म विश्वास को बढाया है।

इन बच्चों की कायापलट चमत्कारी मालूम होती है। ''कम समय में, वें संकोची स्वभाव के, अंर्तमुखी (अपने आप में खोये रहने वाले बच्चों से), बर्हिमुखी बच्चे बन गये,'' कहते हैं प्रदीप गरटकर, जो रोटरी क्लब इंदापुर के चार्टर सदस्य है।

परियोजना सक्षम शिक्षकों के लिये भी उतना ही हितकारी है जितना कि छात्रों के लिये। अयोध्या चैरीटैबल ट्रस्ट निवासी बधीर विद्यालय की शिक्षिका गौरी का कहना है, ''पहले परंपरागत सांकेतिक भाषा का उपयोग किया जाता है। ई-पठन मापांक के माध्यम से चाक्षुक सहायक सामग्रियों के जरिये उन्ही सबकों को पढ़ाया जाता है। एनीमेशन (सजीव चित्रण) इतना आकर्षक और रोचक है कि संकल्पनाओं को आसानी से समझा जा सकता है।''

इंदापुर के मूक बधीर निवासी स्कूल के शिक्षक गणेश जाधव के मुताबिक, सिखाने और सीखने का एक अधिक असरदार तथा आनंददायक तरीका होने के अलावा , इस ई-पठन उपकरण ने सिखाने के समय को एक तिहाई से कम करा दिया है और सीखने के समय को भी आधा कर दिया है। शिक्षकों पर दबाव भी काफी हद तक कम हो चुका है।

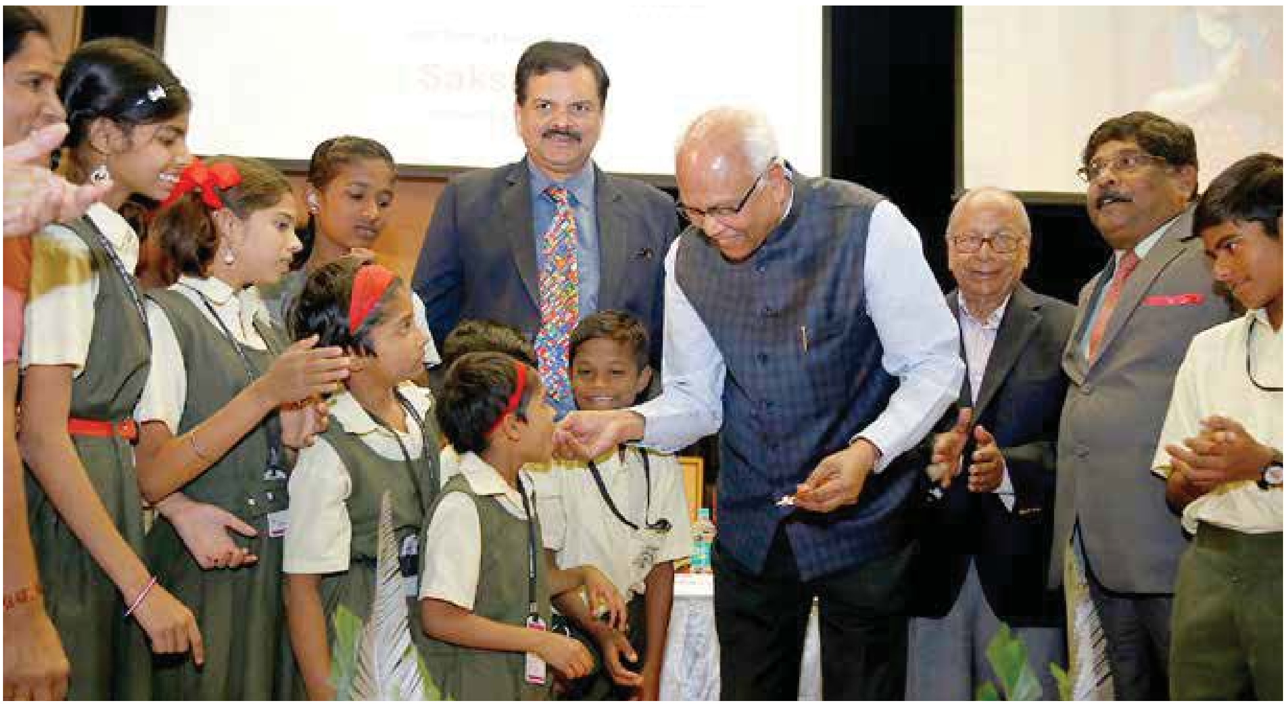

प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. रघुनाथ माशेलकर बच्चों के साथ, (दाएं) AKS सदस्य कृषणकुमार बी जिंदाल, डीजी प्रशाँत देशमुख और (बाएं)पीडीजी दीपक शिकारपुर।

प्रशिक्षण के लिए तैयार हो रहे शिक्षक।

परियोजना को स्थायी तौर पर धारणीय बनाने के लिये यह पठन कार्यक्रम धारणीयता पर जोर देता है। नियमित निगरानी तथा पांठ्यक्रम की जाँच के लिये एक सशक्त व्यवस्था है।

ऊँचे स्तर को सुनिश्चित करने, प्रत्येक स्कूल के लिये एक सलाहकार को नियुक्त किया गया है। और विशेष शिक्षण में अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन में, अगले तीन सालों के लिये इन बच्चों की प्रगति को आलेखित करने रोटरी क्लब पुणे कतरज उपकरण विकसित कर रहा है। शिक्षण, मनोविज्ञान, विज्ञान, गणित तथा बधीरों के लिये ऑडियो-विजुअल टैक्नोलोजी में, चुनींदा शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसें एक धारणीय, मापनीय और आदर्श मिसाल बनाने, समान-विचार रखने वाले रोटेरियनों और निगमित दाताओं के लिये तलाश जारी है।

इस तरह की परियोजनाओं में दाताओं की भूमिका अहम होती है। सक्षम का हिस्सा होने पर जिंदाल को नाज़ है और उनका कहना है, ''जब कि धन कमाना बढिया बात है, मानव सेवा करना इंसान को उससे भी ऊँची जगह पर ले जाता है। मुझे सबसे ज्यादा इसी बात का खेद है कि इससे पहले ही अघड सदस्य नहीं बना।''

एक ई-पठन किट् की कीमत है रु 40,000। हर एक स्कूल को छह किट्स मिल रहा है यानि प्रति स्कूल पर रु 2,40,000 खर्च किया जा रहा है। इसमें वार्षिक रखरखाव शुल्क और तीन सालों के लिये सॉफ्टवेयर का अद्यतन शुल्क भी शामिल है।

सक्षम ने हर कहीं खुशी के अनुपात को बढ़ा दिया है। शिक्षक खुश हैं क्यों कि अब उन्हे विजुअल की तैयारी करने में घंटों बिताने की जरुरत नहीं है। माता पिता खुश हैं कि उनके बच्चे 'खोली' से बाहर निकलकर आ रहे हैं और एक उजले भविष्य के इंतजार में है। सबसे बडी बात बच्चे आकर्षक, उपभोक्ता मित्रवत् विजुअल से इतने खुश हैं कि उनके लिये सीखना एक आनंददायक अनुभव बन गया है।

इस खुशी को आप तब महसूस कर पायेंगे जब आप किसी कक्षा में जाते हैं और अपनी खुशी का बयान ना कर पाते हुये ये बच्चे अपने हाथ उठाकर अपनी हथेलियों को थपथपाते हैं जिससे आपकी आँखों में आँसू छलक उठेंगे और गला इतना भर आयेगा कि आप बोल नहीं पायेंगे।■

पालरा में एक थ्री स्टार स्कूल

जयश्री

पालरा (हरियाणा) में एक सरकारी स्कूल, जो एक संकीर्ण, पतले सडक़ के अंतिम छोर पर स्थित था, वह तोरण से सजा-धजा और विभिन्न प्रकार के गतिविधियों से गुलजार है। छात्रगण रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म की आगवानी के लिए तैयार हैं जो स्कूल परिसर में उत्तम नए हैंड्वॉश स्टेशनों और शौचालय ब्लॉक का उद्घाटन करेंगे। WinS टारगेट चैलेंज कमेटी के अध्यक्ष सुशील गुप्ता, उपाध्यक्ष पी टी प्रभाकर, सदस्य सचिव रमेश अग्रवाल, जुडी जर्मेन और डी जी शरत जैन काफिले का भाग है।

रोटरी क्लब दिल्ली इंपीरियल, मंडल 3012, ने रोटरी क्लब कैनांड्गिुआ, USA, रो ई मंडल 7120 और TRF के सहयोग से, स्कूल में हाल ही में थ्री-स्टार WinS प्रोजेक्ट को पूरा किया है। स्कूल को अपग्रेड करने के लिए सोलर पैनल, कंप्यूटर, पुस्तकालय में पुस्तकें, और कक्षा में फर्नीचर उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ, स्कूल में लडकियों के लिए विशिष्ट शौचालय, चेंजिंग रूम, सैनिटरी नैपकिन डिस्पेंसर और इन्सिनरेटर, ग्रुप हैंड्वॉश स्टेशन, पर्याप्त पेयजल की आपूर्ति और RO उपचारित पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराया गया है।

परियोजना समन्वयक विशाल ज्योति जैन कहते हैं, "हमने कम लागत वाली परिस्थिति में पानी, साफ-सफाई और स्वच्छता प्रदान करने के लिए WHO द्वारा अनुशंसित वैश्विक दिशानिर्देशों का पालन किया हैं।" वॉटर फिल्टर को आसानी से स्थापित किया जा सकता है और इसका रखरखाव उच्च तकनीक सहयोग के बिना किया जा सकता है और सौर ऊर्जा संयंत्र के लिए किसी पुनरावर्ती व्यय की आवश्यकता नहीं होती है।

क्लब ने गाँव के पाँच अन्य स्कूलों का कायाकल्प किया हैं, इससे 2,500 से अधिक बच्चें लाभान्वित हो रहे हैं और "हम अगले दो वर्षो में गाँव में शेष तीन स्कूलों को कवर करने की योजना बना रहे हैं," क्लब के अध्यक्ष अश्विनी गुप्ता कहते है।

हैंड्वॉश स्टेशन का निरीक्षण करने के लिए रो ई अध्यक्ष और उनकी टीम के कुछ क्षण तक रूकने पर, छात्रों के एक समूह ने उत्साहपूर्वक प्रसिद्ध गीत, 'हम हाथ साफ करेंगे,' को गाते हुए साबुन और पानी से अपने हाथों को धोयां, और इससे प्रभावित होकर जर्म कहते हैं, "मुझे यह पसंद है और मैं बोर्ड को इसके बारे में सलाह दूंगा।"

अरावली पाथवेज वर्ल्ड स्कूल के इंटरैक्ट क्लब के सदस्यों, जिन्हें रोटरी क्लब दिल्ली इंपीरियल द्वारा प्रायोजित किया गया था, ने छात्रों, शिक्षकों और स्कूल मैनेजमेंट कमिटी (SMC) को सभी उपकरणों के उपयोग और रखरखाव के बारे में सलाह दी। उन्होंने गोंडा कला का उपयोग करते हुए निकटतम गयरातपुर बास और अकालीमपुर गांवों में स्कूलों में गंदी कक्षाओं को कायाकल्प कर दिया और छात्रों को भी अपनी गतिविधि में शामिल किया। जैन कहते है, "इंटरैक्टर्स, स्वच्छता शिक्षा के माध्यम से छात्रों और उनके परिवारों के बीच व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए कडी मेहनत करते हैं और

बाएं से: अंजली ढिंग्रा, WinS चेयर सुशील गुप्ता, जुडी जर्मेन, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, WinS वाइस चेयर पी टी प्रभाकर, रोटरी क्लब दिल्ली इंपीरियल के रोटरीयन प्रवीण जैन, डीजी शरत जैन, क्लब अध्यक्ष अश्वनी गुप्ता की पत्नी शैलजा गुप्ता, और डीजी शरत जैन की पत्नी रुचिका जैन।

रो ई अध्यक्ष जॉन जर्मे स्कूली बच्चों द्वारा एक हाथ धोने का डेमो देखते हुए।

बच्चे भी इस नए, स्वस्थ माहौल के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।"

"मैं यह जानकर शर्मिंदा था कि छात्रों के पास उचित शौचालय या सैनिटरी नैपकिन डिस्पेंसर की सुविधा नहीं थी। लेकिन मुझे खुशी है कि रोटरी ने ये सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई है, जिसे सरकार को उपलब्ध कराना चाहिए था। मैं विशेष रूप से उस वीडियो से प्रभावित हूँ जिसका निर्माण इंटरैक्टर्स ने इन ग्रामीण बच्चों को अपना हाथ धोने और शौचालय का इस्तेमाल करने की विधि सिखलाने के लिए किया है। मुझे विश्वास है कि अधिक से अधिक बच्चें स्कूलों में नामांकन कराने के लिए प्रेरित होंगे और इससे साक्षरता का बेहतर स्तर प्राप्त करने में मदद मिलेगा," अध्यक्ष जर्मे ने अपने दौरे के सम्मान में SMC द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में ये बाते कहीं।

चित्र: जयश्री

कटवा के बच्चों की पोलियो से सुरक्षा

जयश्री

रोटरी क्लब कटवा, मंडल 3240 के रोटरियनों, ने अंतिम NID में पश्चिम बंगाल के बर्धमान जिले में कटवा के 95 प्रतिशत बच्चों को सफलतापूर्वक प्रतिरक्षित किया है। क्लब के अध्यक्ष सुब्रता सैनी कहते है, "यह एक बडी चुनौती थीं हमें झुग्गी बस्तियों में लोगों के एक वर्ग के कडा विरोध का सामना करना पडा।" कुछ विवादों के कारण लोग कटवा नगर पालिका के कर्मचारियों के साथ सहयोग नहीं करना चाहते थे और उन्होंने रोटीनियों को इस क्षेत्र में एक भी पोलियो बूथ स्थापित नहीं करने दिया।

NID के पूर्वती महीने में, क्लब के सदस्यों ने स्थानीय स्कूल के 500 बच्चों को पोलियो प्रतिरक्षण के प्रचार के लिए एक रैली में शामिल किया। स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों से लबरेज इस रंगीन रैली का आयोजन स्थानीय समुदाय का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया था। रोटरियनों ने घर-घर जाकर भी इस अभियान का प्रचार किया और लोगों को उपहार के रूप में टी-शर्ट, खिलौने और स्टेशनरी प्रदान करते हुए वैक्सीन के बारे में लोगों की शंकाओं का समाधान किया।

"INPPC अध्यक्ष दीपक कपूर को सामग्रियों के साथ सहायता उपलब्ध कराने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद," सैन आगे कहते हैं।

PDG स्वपन चौधरी कहते हैं "पश्चिम बंगाल में अभी भी कुछ गांव हैं जैसे कि कटवा, जहां गैर-जिम्मेदार लोगों द्वारा ग्रामीणों की निरक्षरता का लाभ उठाते उन्हें इस अभियान के विरुद्ध भड़काने के कारण हमें स्थानीय लोगों के नकारात्मक प्रतिक्रियाओं और प्रतिरोध से निपटना होगा। हम सभी संभव तरीके से इस मिथक को तोड़ने का प्रयास करते हैं हम नहीं चाहते कि हमारी भविष्य की पीढ़ी अपंग हो।"■

टेक्स्टाइल ट्रैल

इक्कात...

पुट्टापक्का से एक इक्काट रेशम साड़ी।

रंगों की गुंथायी

सबिता राधाकृष्ण

एक आकर्षक इक्कात की यात्रा में, लेखिका ने आंध्र एवं उड़ीसा के सुन्दर इक्कातों और गुजरात के शानदार पटोलों की बुनावट की जटिल प्रक्रिया के बारे में जाना।

कपड़ों के मध्य हुई मेरी यात्रा में, मुझे इक्कात ने मोहित किया, रंगों का असमान संगठन जैसे की बाना ताने से किसी समान डिज़ाइन में बंध रहा हो, कपड़े पर कविता रचते हुए। इक्कातों की बुनाई केवल जापान, इंडोनेशिया और भारत में होती है।

मैंने इक्कात की यात्रा शुरू की, और मैं उड़ीसा, गुजरात और आंध्र की खोजों से अत्यंत पुरस्कृत हुई, जहाँ इसे विशेषरूप से बनाया जाता है।

जब मैंने और मेरे पति ने 1980 के दशक में हैदराबाद की यात्रा की, जहाँ मैंने मद्रास की बुनी हुई और हाथों से सजाई गयी साड़ियों का संग्रह दिखाया था, पुत्तापक्का की एक यात्रा से हम अत्यंत लाभान्वित हुए। एक साधारण से छोटे घर में, एक बुनकर ने हमें कहानियाँ सुनायी, कि कैसे उसके पूर्वज सौराष्ट्र से प्रवासन कर चिराला, आंध्र प्रदेश में बस गए, जहाँ पहले रुमालो के रूप में इक्कात का बेहतरीन ताना-बाना बनाया जाता था जिसे अमीर मुस्लिमों द्वारा उपयोग में लाया जाता था। मैं चकित रह गई जब मैंने एक मुलायम जालीनुमा कपड़े को हाथ में लिया जो चमकदार प्राकृतिक काले और लाल रंगों से रंगा हुआ था, मात्र 55 या 75 घन से.मी. का, स्पष्ट ज्यामितीय आकृतियों औरं चौड़ी सामान्य लाल रंग के पट्टे की बॉर्डर के साथ। मुझसे कहा गया कि 20वीं शताब्दी की शुरुआत

वाली, इस उत्तम बुनावट में आधुनिक आकृतियों जैसे हवाई जहाज और घड़ियों का रूपांकन प्रारंभ हुआ, और सामान्य तौर पर रंग काला, लाल, गहरा भूरा, सफ़ेद और गुलाबी होता था।

पुत्तापक्का दोहरे इक्कात बुनने और पारंपरिक पटोला डिज़ाइनों की नक़ल करने में माहिर है। वर्तमान में इस क्षेत्र का एक निष्क्रिय बाज़ार है जहां सूती और रेशम की उत्कृष्ट साड़ियाँ,और डिज़ाइनर दुपट्टे, विस्मयकारी अभिनव डिज़ाइनों में करघों से बाहर निकलते है। बुनकर पद्मसाली समुदाय से संबंधित है, और उन्होंने नयी डिज़ाइनों के आविष्कार में अपनी प्रतिभा साबित की है, उनकी बहुमुखी प्रतिभा अच्छा लाभ प्रदान कर रही है।

हमने नलगोंडा ज़िले के पोचमपल्ली की यात्रा की, एक गाँव जहाँ इक्कात की बुनाई प्रचुर मात्रा में

करघे पर इक्कात के तागे।

गुजरात का पाटन पटोला

तक इन्हें विशेषरूप से लुंगियों, गमछों और साफों (पगड़ी) के लिए बुना जाता था, जो अनेक इस्लामी देशों में प्रसिद्द आयात सामग्री थी।

बुनकर ने समझाया की धागे को बुनायी से पहले तेल में भिगोया जाता है, इसलिए इसका अन्य नाम तेलिया रुमाल है। तेल धागे को कोमल कर देता है, इससे तैयार हुआ कपा बादल की तरह नर्म होता है। मैंने अपने विचार को तुरंत प्रकट किया। क्यों ना इस तकनीक को भव्य सार्यों को बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाए? मैं मदद कर सकती हूँ, और हम फिर से प्राचीन तेलिया डिज़ाइनों का निर्माण कर सकते है।

उसने कहा, अम्मा, बिल्कुल हाल ही में, मैडम पुपुल जयकर और मार्तड सिंह द्वारा भारत उत्सव' के लिए ऐसा किया गया है। इस बात ने मुझे यह सोचने के लिए उत्तेजित कर दिया कि एक अपरंपरागत विकल्प सामने आ रहा है और हम बाज़ार में उत्कृष्ट साड़ियों की भरमार देखेंगे।

मूल रूप से, चिराला में सूती तेलिया रूमाल बनाये जाते थे। सबसे अच्छी डिज़ाइनों जिसपर हलकी ऊपरी सजावट होती थी, जैसे कि चमकदार कढ़ाई, को राजकुमारियों द्वारा नकाब के रूप में पहनने के लिए ले लिया जाता था। रुमाल के रूप में बिकने

होती है। जैसे ही आप गाँव के अन्दर प्रवेश करते है, आपकी इन्द्रियाँ इक्कात के कपड़ो के वस्त्रों और हर जगह पड़े साड़ियों के ढेरो की विलक्षणता देखकर आप पर धावा बोल देंगी। चिराला के अलावा इक्कात जालना और गोलकोंडा में बुना जाता है। उड़ीसा से भिन्न, यहाँ बुने जाने वाले इक्कात में आधुनिक विकास नज़र आता है, शायद 19वीं सदी के उत्तरार्ध का, जब मुख्य रूप से इक्कात की बुनाई अरब देशों में निर्यात किये जाने वाले रुमालों तक सीमित थी। लगभग 1950 के दशक के आसपास पोचमपल्ली में इक्कात की बुनाई का विकास हुआ, जहाँ के इक्कात में बाने का अतिरिक्त धागा नहीं होता है और यह अपने उड़ीसा के प्रतिरूप के मुकाबले साधारण होता है। डिज़ाइनें स्पष्ट होती है औरं चमकीले रंगों से बनती है, अक्सर ज्यामितीय या काल्पनिक डिज़ाइनों में। सामान्य तौर पर जाली-रुपी डिज़ाइन की बुनाई होती है, हालांकि ज्यामितीय पक्षियों या पशुओं के चित्र विस्तारपूर्वक बुने जाते है।

दूसरे राज्यों के मुकाबले आंध्र इक्कातों का सबसे बड़ा निर्यातक है। सही विकास के साथ, यहाँ के कुछ उस्ताद बुनकर उत्कृष्टता की पराकाष्ठा तक पहुँच गए है और उन्होंने अत्यंत प्रसिद्धि हासिल कर ली है, उनका व्यवसाय कई गुना बड़ रहा है। यह वह दर्जा है जिसकी कामना हमारे देश के हर बुनकर के लिए करते है।

सबसे अच्छी डिज़ाइनों जिसपर हलकी ऊपरी सजावट होती थी, जैसे कि चमकदार कढ़ाई, को राजकुमारियों द्वारा नकाब के रूप में पहनने के लिए ले लिया जाता था।

गुजरात के पाटन पटोले

किसी गुजराती की शादी में शामिल होइये और आप निश्चित तौर पर ऐसी अनेकों महिलाओं को देख पाएंगे जिन्होंने शानदार रंग-बिरंगे पाटन पटोले पहने हो, रंग एक दूसरे के साथ अचूक समानता में जुड़े हुए, साड़ियाँ इतनी खूबसूरत जितनी स्वर्ग के पंछी की कलँगी!

पटोला की उत्पत्ति अटकलों में धूमिल है, परन्तु प्राचीन ऐतिहासिक प्रमाण 6वीं औरं 7वीं शताब्दी के अजंता के भित्ति-चित्रों में निहित है, जिनमें

साधू-संतों औरं स्त्रियों की पोशार्के इक्कात जैसे कपड़े की बनी है। केरला के मत्तान्चेरी और पद्मनाभपुरम के महलों के भित्ति-चित्रों को देखकर ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि दोहरे इक्कात 17वीं औरं 18वीं शताब्दी में अस्तित्व में थे।

गुजरात में उत्पन्न हुए पटोले में दोहरा इक्कात तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है और यह एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है। पटोले में, आवश्यक आकृतियों के अनुसार ताने और बाने की पृथक बंधेज की रंगाई की जाती है, और यह जटिल प्रक्रिया बुनाई के हुनर की पराकाष्ठा को दर्शाती है। कुमारपाल, एक जैन राजा का बेटा, 700 साल्वी परिवारों को पाटन में बसाने के लिए लाया था ताकि वे केवल उसी के लिए पटोले बुन सके, और ऐसा माना जाता है की वे तब से वहीं रह रहे है।

पटोलों का उपयोग विशेषरूप से समारोहो के परिधान के रूप में किया जाता है। गुजरात में इसे पारंपरिक रूप से हिन्दुओं, जैनों और वोहरा मुस्लिमों द्वारा पहना जाता है, परन्तु महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में भी इसका उपयोग विशिष्ट समारोहो में किया जाता था। इसकी बुनाई की जटिलता के कारण यह बहुत महंगा होता है इसलिए सभी इसे नहीं खरीद पाते, एक साड़ी की कीमत लगभग रु1 लाख या उससे ज्यादा होती है। आज तक, इसे दुल्हन के लिये मांगलिक वस्त्र समझा जाता है।

इस कपड़े के लिए बर्मी शब्द था गासिंग जिसका मतलब है बिमारियों को दूर भगाने वाला। शायद इसी वजह से वोहरा समुदाय की गर्भवती औरते अपनी गर्भावस्था के कुछ चरणों में पटोलों का उपयोग करती थी। दक्षिण भारत में, कभी पहले इसे कपड़ों की लटकनो, और मंदिर के हाथियों के आवरण के रूप में उपयोग किया जाता था। केरला में, पटोलों का उपयोग प्रतिमाओं की सजावट और आवरण-वस्त्रों, औरं तांत्रिक विधि के लिए किया जाता था। ऐसा माना जाता था कि उसमें कोई औषधीय गुण है, खासतौर पर जले के घाव के लिए।

पाटन पटोलों की सबसे प्रसिद्द और पारंपरिक डिज़ाइन है पोप्पट कुंजर, जिसे शुभ माना जाता है और जिसमें पूरी सा़ी में हाथियों औरं तोतों की आकृतियों का जालीनुमा कार्य किया जाता है।

बुनाई की जटिलता के कारण यह बहुत महंगा होता है, एक साड़ी की कीमत लगभग रु1 लाख या उससे ज्यादा होती है।

उड़ीसा के इक्कात

खूबसूरत क्षेत्र, खूबसूरत लोग। कोणार्क का सूर्य मंदिर शायद बुनकरों के लिए अपनी अधिकतर बुनावट में चक्र औरं मछली के रूपांकन की प्रेरणा रहा है। बुनकर, खासतौर पर महिलाएं, निस्तेज जीवन को आनंदपूर्वक जीती थी, प्रकृति और जीवन का आनंद लेते हुए फिर भले ही वे गरीबी में क्यों ना जी रही हो। बहुत सी महिलाएं ब्लाउज नहीं पहनती थी लेकिन

तकनीक

इक्कात एक इण्डोनेशियायी शब्द है, जिसका मतलब है तार, धागा, गाँठ, और साथ ही साथ बांधना और जकना्। पूर्ण बुने हुए इक्कात की उत्पत्ति *ताली* (धागा, रस्सी) से इक्कात होने (बंधा हुआ, जका हुआ, गाँठदार) से होती है, इससे पहले इसे *सेलुपन* (डुबोकर रंगने का तरीका) में डाला जाता है, फिर *बेर्जीलिन* (बुना हुआ, एक दूसरे में गुंथा हुआ) किया जाता है, परिणामस्वरूप *बेर्जीलिन-इक्कात* मिलता है जिसे संक्षिप्त में इक्कात कहा जाता है।

बुनाई से पहले धागे की एक निश्चित क्रम में अवरोध-रंगाई की जाती है। जब बाने या ताने में से किसी एक की अवरोध-रंगाई की जाती है, तो इसे एकल इक्कात कहते है। जब बाने एवं ताने दोनों की अवरोध-रंगाई की जाती है, वह दोहरा इक्कात होता है। इसमें गहन निपुणता की आवश्यकता होती है क्योंकि रंगाई का निष्पादन और बुनावट बहुत सटीकता के साथ की जानी होती है ताकि डिज़ाइन एक-दूसरे से अच्छी तरह मेल खा सके।

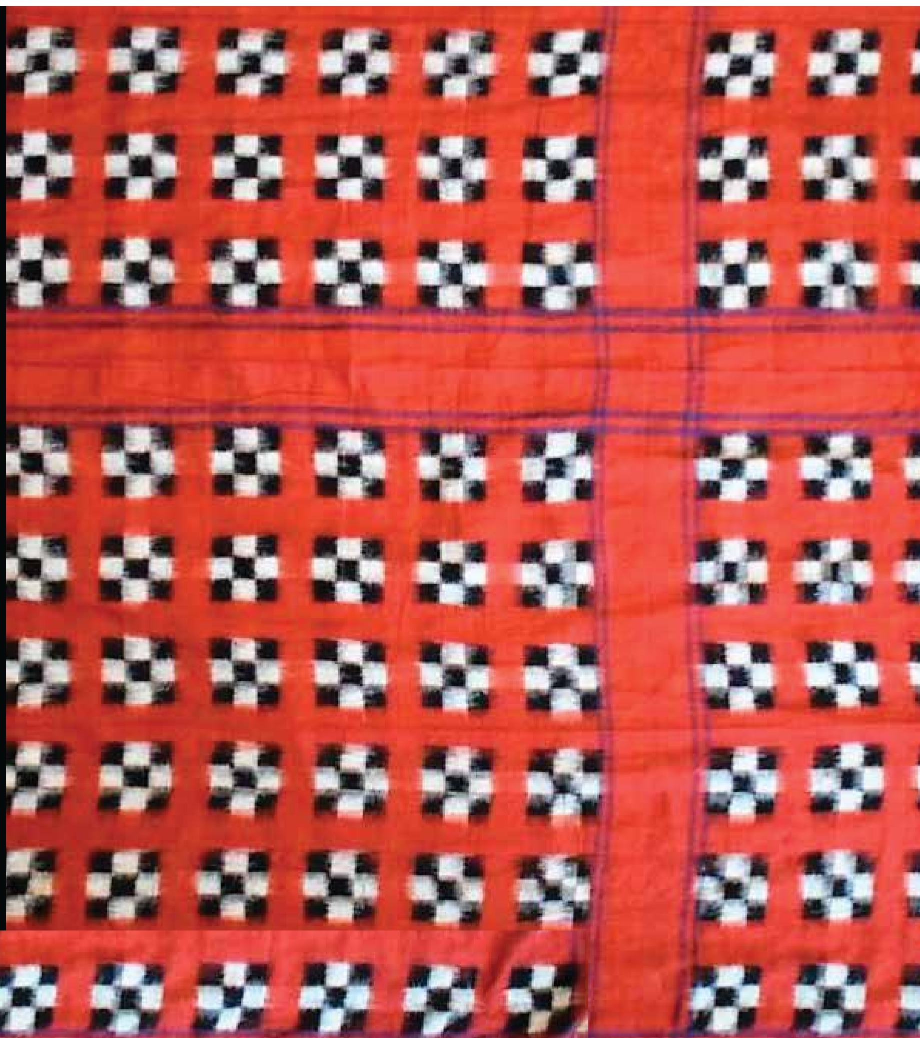

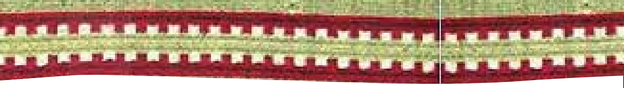

साड़ियों को इतने अच्छे तरीके से लपेटती थी कि वहाँ कोई बेहूदगी नज़र नहीं आती थी। हमनें उन्हें अक्सर नदी में नहाते हुए पाया और उन्हें अपने करघे की तरफ लौटने के लिए राज़ी करना पता था!

मैं घंटों उनके साथ बैठकर, अपनी पसंद के रंगों औरं डिज़ाइनों के बारे में समझाने का कष्ट उठाती थी। परन्तु अगले वर्ष जब हम उनसे मिले, उन्होंने शुरुआत तक नहीं की थी, और उन्होंने हमें बहुत ही मामूली डिज़ाइनों की सायिाँ दिखायी। उनसे नाराज़ होना असंभव था... क्योंकि वे अपने ढर्रेवादी जीवन के आदी थे और यही उनकी गरीबी का वास्तविक कारण था।

पाटन के पटोलों में स्पष्ट दानों से बनी डिज़ाइन, अवरोध-रंगाई से रंगे बाने औरं ताने में इस्तेमाल की जाने वाली आकृतियों के तत्वों के मिलान के कारण बनती है, वहीं उीसा के इक्कातों में, दाना अक्सर इतना स्पष्ट नहीं होता, बल्कि आंशिक रंग में होता है, क्योंकि ताना और बाना एक दूसरे में समाविष्ट नहीं हो पाते, हालाँकि उनमें भी अवरोध-रंगाई का

उड़ीसा से एक बोमकोई साड़ी।
बाएं : पुट्टापक्का से एक तेलिया रूमाल।

उपयोग किया जाता है। उड़ीसा के इक्कात केवल बंधेज की रंगाई के प्रभावों पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि इसमें सामान्य बुनावट को सम्मिलित करते है, अक्सर अधिक बाने के साथ, जैसा कि उनकी साड़ियों की बॉर्डर और पल्लुओं पर दिखता है। उीसा के कपड़ों की बॉर्डर पर चक्र या मंदिर के शिखर की आकृति होती है, और बारग, सोनेपुर और नौपटना में, अनेक किस्म की आकृतियाँ होती है जैसे मछली, पक्षी, शेर, हाथी, हिरण, फूल, बेलाएं और सितारे।

उड़ीसा की साड़ियाँ अविश्वसनीय रूप से सस्ती थी। बारग में उनके पास ऐसी सुन्दर साड़ियाँ थी जिनमें सफ़ेद पृष्ठभूमि में, दो बड़े पल्लुओं में धारियों के साथ पतली बॉर्डर और छोटे हीरें जड़े थे। बोमकोई की मेरी यात्रा इतनी यादगार रही क्योंकि साड़ी के पल्लुओं पर काई कशीदाकारी जैसी लग रही थी। चौड़ाई कम थी, और उस समय एक साड़ी की कीमत मात्र रु 60 थी! मुझे साड़ी पहनने के लिए उसमें लंबाई और चौड़ाई में अलग से कपड़ा जोड़ना पड़ा, परन्तु यह परेशानी उठाने योग्य था। साथ ही, सुन्दर पोशाकें बनाने के लिए वे स्वयं को किराय पर देते थे।

अगर मेरे पास ऊर्जा और कर्मशक्ति की एक और लहर होती, तो मैं इक्कात की यात्रा पर एक बार फिर जाती!

चित्र:सबिता राधाकृष्ण
एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

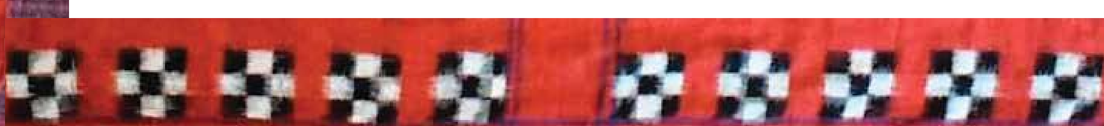

भारतीय वित्तीय व्यवस्था की एक झलक

आरती कृष्णन

क्यों भारतीय बैंकों को अपने ग्राहकों की ज़रा भी फ़िक्र नहीं है? क्यों सरकार बैंक जमाकर्ताओं को महत्व नहीं देती जबकि वह कृषि ऋण लेने वालों को उदारतापूर्वक माफ़ करती है? क्यों सुन्दर दिखने वाले और स्पष्ट बोलने वाले आरबीआई गवर्नरों का कार्यकाल इतना कम होता है?

इन सब मुद्दों को लेकर पिछले कुछ वर्षों में मीडिया में बहुत जोर-शोर की बहस देखी गई। परन्तु आधुनिक पत्रकार और समालोचक, इतिहास का सीमित ज्ञान होने की वजह से, इन अनोखी घटनाओं पर विश्वसनीय स्पष्टीकरण को आगे नहीं बड़ा पाए।

आपको सभी जवाब अत्यंत बेबाक एवं पने योग्य किताब *डायलॉग ऑफ़ द डेफ* में मिल जायेंगे जो टीसीए श्रीनिवास राघवन द्वारा लिखी गयी है, एक पत्रकार जिन्होंने भारतीय वित्तीय व्यवस्था को इसके सभी गतिमान हिस्सों के साथ, पिछले तीन दशकों से, बहुत मेहनत से कवर किया, और *रोटरी समाचार* के एक स्तम्भ-लेखक।

हालाँकि लेखक अपने बाद के वर्षों में आरबीआई के इतिहास के आधिकारिक अभिलेखक रह चुके है, फिर भी इस हाजिर जवाब किताब, और समय-समय पर, दुष्ट किताब जो सच को सच बोलने से हिचकिचाती नहीं है, में दूर-दूर तक कुछ भी आधिकारिक नहीं है।

लेखक ने आरबीआई के इतिहास के संदर्भ में विस्तारपूर्वक बताया है कि क्यों आरबीआई कभी भी सरकार के नियंत्रण एवं प्रभाव से आज़ाद नहीं रही, आरबीआई गवर्नरों और वित्त मंत्रालय के बीच हमेशा से रहे तनावपूर्ण रिश्ते और हर कुछ वर्षो में सार्वजनिक क्षेत्रों की बैंकों की ख़राब ऋण की गड़बड़ियों में उलझने की प्रवृत्ति। फ

यद्यपि यह जानना निराशाजनक है कि भारतीय अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता के पश्चात अभी तक उसी समान समस्या से जूझ रही है, फिर भी यह उत्साह की बात है कि उनका समाधान करने के लिए क्या किया जाना चाहिए (और क्या नहीं) पर अतीत में कल्याणकारी सबक मौजूद है।

इतिहास के प्रशंसक शुरूआत के कुछ अध्याय का आनंद ले सकते है जो इस बात का विस्तारपूर्वक वर्णन करते है कि कैसे असंतुष्ट अंग्रेजों, हालाँकि एम. कीन्स जैसे निष्ठावान समर्थकों द्वारा उकसाए हुए, ने भारत में अति-आवश्यक केन्द्रीय बैंक की स्थापना करने में विलंब किया। जब उन्होंने स्थापना की, तो उन्होंने इस बात को सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि बैंक साम्राज्य के आदेश पर चले, ताकि अंग्रेजी वित्तीय हितों की हमेशा सुरक्षा की जा सके। वास्तव में यह प्रारंभिक आरबीआई अधिनियम का आधार बना जो आज तक केंद्रीय बैंक की कार्य पद्धतियों को नियंत्रित करता है।

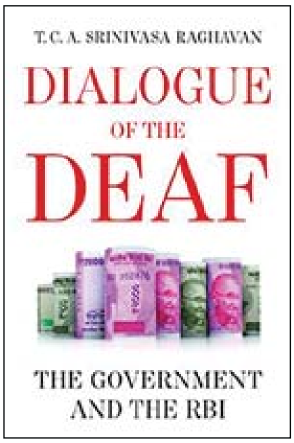

शैली: अकाल्पनिक
शीर्षक: डायलॉग ऑफ़ दी डेफ: दी गवर्नमेंट एंड दी आर बी आई
प्रकाशक: ट्रेंकेबार, Westlandbooks.in
पृष्ठ: 272
हार्डकवर: रु 599

इसलिए शायद ही कोई आश्चर्य हो, कि अत्यधिक बहस में रही आरबीआई की स्वायत्ता' अधिकांश तौर पर कागजों में ही है।

बन्दूक की नोंक पर सुधार

मुक्त बाज़ार के तरफदारों के लिए, किताब एक व्यावहारिक विवरण प्रदान करती है कि कैसे भारत, जो स्वतंत्रता के पहले संपूर्ण रूप से मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था था, बाद में समाजवादी प्रलोभन का शिकार बना। पूर्णतया राजनैतिक लोकलुभावन और सरकारी दखलअंदाजी के चलते, फिर यह सत्तर और अस्सी के दशक में आगे बड़कर व्यवस्थित ढंग से इसके उद्योग और बैंकिंग प्रणाली दोनों का विनाश करता गया। फिर इसने नब्बे के दशक में सुधारों के ज़रिये इन सब कार्यो को अनकिया करने के लिए संघर्ष किया।

किताब परदे-के-पीछे के दिलचस्प वृत्तान्त के बारे में बताती है कि कैसे भारत को नियमानुसार तब अपना सोना बैंक ऑफ़ इंग्लैंड के पास गिरवी रखना पड़ा जब विदेशी मुद्रा भंडार 1 बिलियन डॉलर के स्तर से नीचे आ गया था। इस बारे में मनोरंजक किस्से है कि कैसे सरकार के पास इंग्लैंड को सोना भिजवाने के लिए सही प्रकार के बक्सों की कमी थी (बक्सों को भी अंग्रेजी हुकूमत से उधर लिया गया था!) और कैसे वह ट्रक जिसमें सोना ले जाया जा रहा था टारडियो में खराब हो गया, जिससे मीडिया में खबर फ़ैल गयी। इन सब से, सरकार एवं आरबीआई को मजबूती के साथ अभिमुख होकर यह कहना पड़ा कि भुगतान संतुलन (बीओपी) संकट चिंता का कारण है, आतंकित होने का नहीं, जबकि सच ठीक इसके विपरीत था।

अपमानजनक झलक

उनके लिए जो गंभीर आर्थिक विषयों जैसे असंभव तीन या वित्तीय लोकलुभावन एवं मौद्रिक नीति के मध्य संघर्ष, के प्रति दिलचस्पी नहीं रखते, किताब उनके लिए 1930 के दशक की शुरुआत से लेकर अब तक के भारत के विविध प्रधानमंत्रियों, वित्त मंत्रियों और आरबीआई के गवर्नरों के व्यक्तित्व के विषय में मनोरंजक झलकियाँ प्रदान करती है।

उदाहरण के लिए, यह किताब बताती है कि कैसे भुगतान संतुलन का संकट दृता के साथ राजीव

गाँधी और वित्त मंत्रालय में उनके चापलूसों' के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। यह इस बात का ब्यौरा देती है कि कैसे राजीव की निर्णय लेने की दुर्बल क्षमता को, उस समय के वित्त सचिवों, जिन्होंने आरबीआई को सुनने से इनकार कर दिया था, ने मालिक-हमेशा-सही-होते-है वाले रवैये को अपनाकर बावा दिया।

किताब की उस समय की ताकतों तक बेअदब पहुँच और शब्दजाल से इसकी आनाकानी, के साथ बोलचाल की भाषा से जुड़ाव के कारण, इसका भारी विषय होने के बावजूद भी इसे पढ़ना उत्साहपूर्ण लगता है।

आरबीआई की स्वायत्ता को इस पंक्ति से परखिये - 1991 के बाद से, जैसा की उत्तर भारत में कहते है, झमूरा होने के बजाय आरबीआई पूर्ण रूप से, या थोड़ा छोटा, वित्त मंत्रालय का साझेदार बन गया।

सार्वजनिक क्षेत्र की बैंकों पर शुरुआत के एक अध्याय में यह अवलोकन है, जो वर्तमान समय में सत्य है - भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र की ऐसी बैंकें है जो वित्तीय प्रणाली में गोरिल्ला के गिरोह की तरह पाँव पसारी हुई है। शायद एसबीआई को छोड़कर, बाकि सब बैंकें पर्याप्त अच्छी नहीं है। उनकी मौद्रिक नीति का शायद एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक उनकी लागत संरचना है, क्योंकि ब्याज दरों को उच्च रखा जाता है ताकि ये उन्हें बड़े नुकसान से बचा सके।

कुल मिलाकर, यह किताब आपके ज्ञान और समझ को सहारा देने का एक बढ़िया संक्षिप्त मार्ग है अगर आप भारतीय वित्तीय व्यवस्था के एक विद्यार्थी है, या आपमें इस विषय की अकादमिक पुस्तकों को समझने का सामर्थ्य नहीं है।

इस किताब से मेरी एक शिकायत यह है कि यह एक संस्थान के रूप में आरबीआई के प्रति कम मेहरबान है। सच है, इसे कभी-कभी दुर्बल कहा जाता है और इसके कुछ गवर्नरों के प्रति संक्षिप्त आलोचनाएं आरक्षित है। परन्तु उस समय की सरकारों और आरबीआई के मध्य हुई अनेक लाड़ईयों के कालक्रमानुसार विवरण में, किताब जरूर यह बताती है कि भले ही हमेशा नहीं परन्तु अधिकतर आरबीआई ही नायक है।■

रोटरी के एक अस्पताल में सस्ती डायलिसिस

वी मुथुकुमारन

बायें से: जीएच इंडक्शन इंडिया के एम डी आर वी चारी, डीजी नटराजन नागोजी, जीएच इंडक्शन इंडिया के उपाध्यक्ष वी आर चारी, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और आरसीएमसी के अध्यक्ष मनोज राजन।

पीआरआईडी पी. टी. प्रभाकर कहते है, रोटरी सेंट्रल मार्गरेट सिडनी हॉस्पिटल (RCMSH) रोटरी के सिद्धांत स्वयं से ऊपर सेवा को सार्थक करता है। रु38 लाख की लागत से स्थापित एक नए डायलिसिस केंद्र के जुने के पश्चात्, वर्ष 1982 से रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल, मंडल 3230, द्वारा चलाये जा रहे अस्पताल ने जनता को आर्थिक सहायता युक्त स्वास्थ्य सेवाएं मुफ्त उपचार प्रदान करने में एक और मील का पत्थर पार कर लिया है। चार डायलिसिस इकाइयों एवं सहायक उपकरणों के साथ, नयी सुविधा को जीएच इंडक्शन इंडिया' के उपाध्यक्ष वी. आर. चारी द्वारा दान किया गया था। निजी अस्पतालों के रु2,500 से अधिक के मुकाबले यह अस्पताल एक डायलिसिस सत्र के रू1,100 लेता है। क्लब द्वारा अस्पताल का प्रभार लेने के बाद से इसके साथ अपने साहचर्य को याद करते हुए, प्रभाकर ने कहा, "वीएचएस ब्लड बैंक के साथ यह अस्पताल - क्लब द्वारा चलायी जा रही दो महत्वपूर्ण चिन्हक परियोजनाएं है और *रोटरी मानवता की सेवा* में का उत्तम उदाहरण है।" वर्ष 1970 में 100 घन फीट के क्षेत्र में शुरू हुआ एक छोटा दवाखाना अब एक पूर्णतः विकसित बहु-विशेषतायुक्त अस्पताल बन गया है।

> वीएचएस ब्लड बैंक के साथ यह अस्पताल, मानवता की सेवा में रोटरी के उत्तम उदाहरण है।
>
> **पीआरआईडी पी टी प्रभाकर**

डीजी नटराजन नागोजी ने इतने वर्षो से क्लब द्वारा इसकी बहु-विशेषज्ञता सेवाओं को उन्नत करने एवं रोगियों की देख-भाल करने के अद्भुत कार्य की प्रशंसा की। डायलिसिस एक सतत प्रक्रिया है और नयी सुविधा गरीबों के लिए अत्यंत मददगार होगी। प्रभाकर ने वी. आर. चारी और उनके पुत्र आर. वी. चारी को रोटरी से जुने का सुझाव दिया ताकि वे उनके परोपकारी कार्यो को समाज के बे हिस्से तक फैला सकें।

आर्थिक सहायता युक्त स्वास्थ्य सेवा

अस्पताल के अध्यक्ष, रोटरियन विजय चोर्डिया ने कहा कि 25-बिस्तर वाला यह अस्पताल प्रति वर्ष इसमें आने वाले 40,000 बाहरी रोगियों में से 6,000 लोगों को मुफ्त सेवा प्रदान करता है। रोटरी 1 करोड़ की लागत से नवीनीकृत, यह अस्पताल अनुदानों पर चलता है।

चित्र: वी मुथुकुमारन

शेखर मेहता

अध्यक्ष, RILM

Rotary India Literacy Mission

साक्षरता फोकस

संपूर्ण साक्षरता और शिक्षा की गुणवत्ता के लिए लक्ष्य

स्कूल सर्वेक्षण अभियान

हाल के एक रिपोर्ट के अनुसार, शिक्षा कार्यक्रमों के लिए कॉर्पोरेट कंपनियों की ओर से सर्वाधिक CSR फंडिंग प्राप्त हुआ है। RILM के TEACH कार्यक्रम के कॉर्पोरेट जगत में लोकप्रियता प्राप्त करने के साथ, अब कंपनियां अपने परोपकारी कार्यों के माध्यम से स्कूलों में इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने में रुचि ले रही है। इसके लिए उन्हें स्कूलों के नामों की आवश्यकता होगी

RILM ने फरवरी में स्कूल सर्वेक्षण अभियान शुरू किया था, जहाँ रोटरी क्लब ने संपूर्ण देश के सरकारी, जिला परिषद और नगर पालिका के स्कूलों के एक सर्वेक्षण किया था, जिन्हें सहयोग की आवश्यकता है। इस प्रकार से कंपनियों द्वारा स्कूलों का चयन करने के लिए स्कूलों के डेटा का एक संग्रह तैयार किया गया। RILM को संपूर्ण भारत से 800 सर्वेक्षण रिपोर्ट प्राप्त हुआ। क्लबों के अपने भविष्य के परियोजनाओं में मदद करने के अतिरिक्त, यह सर्वेक्षण उन्हें जमीनी स्तर पर स्कूलों के साथ काम करने के लिए व्यवहारिक अनुभव भी प्रदान करेगा।

स्कूल सर्वेक्षण करने के लिए रोटरी क्लब इन चरणों का अनुपालन कर सकते हैं:

- www.rotaryteach.org. में मेंबर जोन के रिसोर्स सेक्शन से R1.1 फॉर्म (समग्र स्कूल सर्वेक्षण फॉर्म) प्रिंट करें
- सर्वेक्षण करने के लिए कम से कम 5 स्कूलों की पहचान करें और स्कूल प्राधिकरण से सर्वेक्षण के लिए अनुमति प्राप्त करें ।
- स्कूलों का दौरा करें और स्कूल के अधिकारियों से वार्तालाप करते हुए फॉर्म भरें।
- www.rotaryteach.org. पर जाएं, और मेंबर जोन में SCHOOL SURVEY टैब पर क्लिक करें।
- एक नए उपयोगकर्ता के रूप में साइन अप करते हुये लॉग-इन करें।
- 'Add School' ऑप्शन पर क्लिक करें और उस फॉर्म को भरें जो 5 सेगमेंट में विभाजित होगा। आप फॉर्म को तब तक संपादित कर सकते हैं जब तक आप पांचवे सेगमेंट के अंत में 'सबमिट' पर क्लिक नहीं करते हैं। सबमिट करने के बाद, इसे संपादित नहीं किया जा सकता है।
- अगला फॉर्म भरने के लिए, 'ADD SCHOOL' ऑप्शन पर फिर से क्लिक करें।

पीडीजी रंजन ढिंगरा ने RILM की ओर से राष्ट्रीय ट्रस्ट के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किए।

दीक्षा

प्रति वर्ष राष्ट्रीय साक्षरता मिशन प्राधिकरण के सहयोग से राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) मार्च और अगस्त महीने के दौरान प्रौढ़ शिक्षार्थियों के लिए परीक्षा आयोजित करता है; जिसमें विभिन्न स्थानों पर प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत RILM द्वारा विभिन्न NGOs और RCC के सहयोग से शुरू किए गए स्वाभिमान केंद्रों में भाग लेने के बाद मंडल 3291 के 370 शिक्षार्थियों और मंडल 3060 के 47 शिक्षार्थियों ने मार्च में परीक्षा में भाग लेने के लिए आवेदन किया। उन्हें बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता में प्रशिक्षित किया गया और वे स्वास्थ्य और स्वच्छता, पर्यावरण जागरूकता, सरकारी योजनाओं आदि जैसे विषयों पर आयोजित कार्यशालाओं में भी शामिल हुए थे।

वर्ष 2017-18 के लिए TEACH अनुस्थापन

रोटरी मंडल स्तर पर एक सतत प्रशिक्षण कार्यक्रम अपने सुव्यवस्थित निष्पादन के लिए महत्वपूर्ण

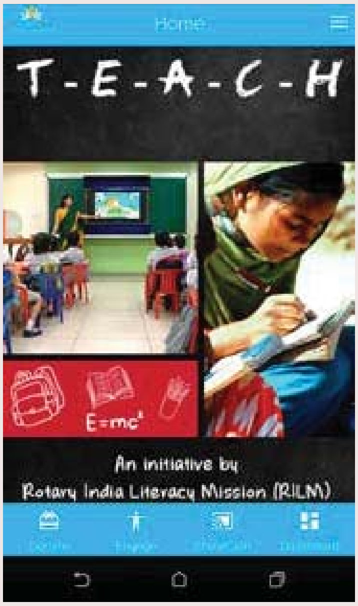

TEACH ऐप का होम पेज।

है। IGNITE एक दो दिवसीय गहन प्रशिक्षण कार्यशाला है, जिसका आयोजन रोटरी और इनर व्हील के नेताओं द्वारा अपनी क्षमता निर्माण के लिए किया जाता है ताकि वे संपूर्ण देश के रोटरी मंडलों में उनके साथ कार्य कर रहे मंडल स्तर के प्रतिनिधियों को प्रेरित और प्रशिक्षित कर सकें। इस केंद्रीकृत कार्यशाला के बाद विभिन्न रो इ मंडलों में प्रशिक्षण की एक श्रृंखला का आयोजन किया जाता है:

पहले स्तर के प्रशिक्षण, का आयोजन प्रति वर्ष 15 अप्रैल तक, वरिष्ठ मंडल नेतृत्व (मंडल प्रशासनिक, मंडल साक्षरता समिति अध्यक्ष) के लिए किया जाता है

दूसरे स्तर के प्रशिक्षण, का आयोजन प्रति वर्ष 15 मई तक क्लब नेतृत्व (क्लब अध्यक्ष और क्लब साक्षरता समिति के अध्यक्ष) के लिए आयोजित किया जाता है।

तीसरे स्तर के प्रशिक्षण, का आयोजन प्रति वर्ष 1 जून से 31 अगस्त के बीच किया जाता है, और जिसे एक सेमिनार शैली के अनुसार आयोजित किया जाता है और जिसमें रोटरी वर्ल्ड (मंडलों के सभी रोटरियन) के सदस्य विशाल संख्या में भाग लेते हैं।

ये सभी प्रशिक्षण सम्मेलन योजनाओं के कार्यान्वयन, लक्ष्य की स्थापना और कार्यकर्ताओं के विभिन्न स्तरों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझने के लिए उपयोगी चर्चाओं के लिए एक उचित मंच प्रदान करता हैं।

RILM ने नेशनल ट्रस्ट के साथ गठबंधन स्थापित किया

विज्ञान भवन में RILM की ओर से PDG रंजन धींगरा, ने सामाजिक न्याय और सशक्तीकरण के केंद्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत, के साथ राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर और रामदास आठवले की मौजूदगी में राष्ट्रीय न्यास, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, के साथ आत्मकेंद्रित के बारे में जागरुकता फैलाने के लिए, एक चेण पर हस्ताक्षर किया।

विज्ञान शिक्षकों को प्रशिक्षण

रॉयल सोसाइटी ऑफ केमिस्ट्री ने RILM के लिए शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करने और भारतीय विज्ञान शिक्षकों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाने पर सहमति व्यक्त किया है। अत्यधिक कुशल शिक्षक विकासकर्ता, विज्ञान के शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं और उन्हें उन्नत शिक्षण तकनीक से संबंधित विशेष ज्ञान से लैस करते हैं। वे संसाधन सामग्रियों और प्रमाण पत्र के साथ-साथ दो दिवसीय प्रशिक्षण नि:शुल्क प्रदान करेंगे। शिक्षक विकासकर्ता के लिए मानदेय और यात्रा व्यय का वहन सोसाइटी द्वारा किया जाएगा। रोटरी क्लब उनके भोजन, आवासीय सुविधा और स्थानीय वाहन सहित उनकी स्थानीय आतिथ्य का ध्यान रखना होगा। मंडल 3160 में, सोसाइटी ने लगभग 2,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है।

वयस्क विद्यार्थी भरूच में एनआईओएस परीक्षा लिखते हुए।

RILM आशा किरण के लिए स्वयंसेवकों का आह्वान करता है

क्या आपने अभी तक TEACH ऐप को डाउनलोड नहीं किया है? यदि नहीं, तो इसे तुरंत डाउनलोड करें। प्ले स्टोर में जाएं और 'RILM द्वारा TEACH' को डाउनलोड करें। होम पेज पर 'एंगेज'पर क्लिक करें और अपने आप को एक TEACH स्वयंसेवक के रूप में पंजीकृत करें। वर्तमान समय में हमें आशा किरण केन्द्रों के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए स्वयंसेवकों की जरूरत है। प्रशिक्षण में आशा किरण केंद्र पर नामांकन कराने वाले बच्चों को हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली और गणित पढ़ाने वाले शिक्षकों के कक्षा प्रबंधन कौशल पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

हमें मुख्य रूप से बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, ओडिशा, दिल्ली और मध्य प्रदेश से स्वयंसेवकों की आवश्यकता है।

अपने आशा किरण बच्चे की प्रगति की निगरानी करें

लगभग 27,000 दाताओं को अभी तक टैग किया गया है। क्या आपने आशा किरण बच्चे की प्रगति का अवलोकन किया है जिसे आपने प्रायोजित किया था? यदि नहीं, तो कृपया www.rotaryteach.org पर जाएं और इन 3 आसान चरणों का पालन करें। आप अपने बच्चे की सफलता के बारे में जानकर खुश होंगे

- माई आशा किरण चाइल्ड' पर क्लिक करें
- यदि आपने पहले से ही अपना ई-मेल आईडी पंजीकृत किया और पासवर्ड का निर्माण किया है, तो आप सीधे 'लॉग इन' कर सकते हैं। यदि नहीं, तो सूची में अपना नाम ढूंढने के लिए 'सर्च' विकल्प पर क्लिक करें; उसके बाद आप साइन अप और रजिस्टर कर सकते हैं।
- आप अपने प्रायोजित बच्चे की उपलब्धि देख सकते हैं।■

Join us at the Traditional

South Asia Reception

at Rotary Convention, Atlanta, USA

Message from RI President John Germ

Dear fellow Rotarians,

I am glad to hear you are organising a South Asian Reception on June 10 during the 2017 Rotary Convention. Judy and I will be glad to join you at this special event, which is a great opportunity for Rotarians to come together for fellowship and inspiration.

This is also a truly significant year, as we are celebrating our Foundation's Centennial. What started with a $26.50 donation has grown into a Foundation that has spent over $3 billion on programmes and projects to make a difference throughout the world. We've done so much good in the first 100 years of our Foundation, imagine what we can do in another 100.

Now is the time to capitalise on our success and to move Rotary forward to be an even greater force for good in the world. If we work together, we can show the world that Rotary is made up of dedicated individuals who work together to accomplish great things.

Our founder Paul Harris once wrote, "Individual effort may be turned to individual needs, but combined effort should be dedicated to the service of mankind. The power of combined effort knows no limitation." Through our Foundation, Rotarians have been able to combine resources to provide extraordinary service to local and global communities.

We look forward to seeing you in Atlanta. Because of you, we will be able to continue to accomplish so much more. Your support is what enables us all to be part of *Rotary Serving Humanity.*

Message from TRF Trustee Chair Kalyan Banerjee

I hope you are all coming to the South Asian Reception to be held at the OMNI Hotel and Resorts on the 10^{th} of June, 2017.

It will be an occasion to cherish as our Rotary Foundation celebrates its 100^{th} anniversary and Indian Rotarians rise high to become the second largest supporters of our Foundation.

It will be once in a lifetime opportunity to celebrate together and Director Manoj and Lady Sharmishtha and his colleagues have planned a special occasion.

It will be an occasion you just can't afford to miss.

See you at the South Asia Reception in Atlanta.

Message from RI Director Manoj Desai

My Dear Friends,

I would like to convey my sincere thanks to you for registering for the Atlanta Convention. The number has gone up several times more than what was expected. It is praiseworthy because each Convention show-cases great international-ity and excellent Rotary speakers. It is awe-inspiring always.

The South Asia Reception will be held on June 10 from 6 pm to 9 pm at the official venue, Hotel OMNI CNN, adjoining the Convention Centre. Chairman Ranjan Dhingra and co-chairs Dr John Daniel and Dr Vinay Kumar are working hard to live up to the raised expectations after the grand success of the DDZI and Chennai Literacy Summit this year. I am pretty sure those who attended the South Asia Reception at Seoul would not like to miss the opportunity. It is time to connect again and celebrate the Centennial Year.

I have received confirmation from RI President John Germ and Lady Judy, Trustee Chair Kalyan Banerjee and Binotaben, RI President-elect Ian Riseley and Lady Juliet, and other dignitaries including the Board Members and Trustees.

I request you to register early as the capacity of the hall is just 450 and we do not want to disappoint anyone at the last moment.

We have chosen the evening before the Convention so that everyone can unwind and be ready for the big event the next day.

Message from South Asia Reception Chairman Ranjan Dhingra

Dear Rotary Leaders,

Greetings from South Asian Reception!

On behalf of Convener RI Director Dr Manoj Desai and his gracious spouse Dr Sharmishtha, it is a great pleasure and privilege for Anjali and me, alongwith Co-chairs Dr John Daniel and Dr Meera and Dr Vinay Kumar Pai Raikar to welcome you to the South Asian Reception being held at the OMNI Hotels and Resorts, Atlanta, on June 10 at 6 pm.

Some of you have already registered for this mega event and the response to the South Asian Reception is overwhelming. As the capacity of the hall is just 450, our sincere request is to get yourself registered immediately, in order to avoid last minute disappointment.

Looking forward to welcoming you at OMNI Hotels and Resorts, Atlanta on June 10 at 6 pm to celebrate 100 years of The Rotary Foundation in true traditional South Asian style.

Venue

OMNI HOTELS & RESORTS

Grand Ball Room
Atlanta | CNN Center
100 CNN Center, Atlanta, GA 30303
PHONE: (404) 6590000

Registration Fees:

INR 5,500 per person/US $80

Payment Details:

Ranjan Dhingra, Yes Bank
Green Park, New Delhi
A/c. No. 012790700000893
IFSC Code: YESB0000055

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

निम्न प्रदर्शन, उच्च प्रतिफल

इस साल के आईपीएल के शुरू दिन एंकर ने सुनील गावस्कर से पूछा कि टी-20 प्रारूप में कौन अधिक महत्वपूर्ण है, बल्लेबाज़ या गेंदबाज़। गावस्कर ने कहा बल्लेबाज़ क्योंकि वे 20 ओवर तक खेल सकते है जबकि गेंदबाज़ केवल चार ओवर तक खेल सकते है।

उन्होंने ऐसे चार खिलाड़ियों के नाम भी गिनाये जिन्हें हाल ही में सम्मानित किया गया था। वे सब बल्लेबाज़ है, उन्होंने कहा, जो मेरे कथन को सिद्ध करता है।

गावस्कर एक बल्लेबाज़ थे और उनका पक्षपात समझ में आता है। परन्तु यदि वह एक अर्थशास्त्री होते, जैसा कि मैं हूँ, तो वह तुरंत समझ जाते की वे गेंदबाज़ हैं जो ज्यादा फायदे में रहते है।

उन्होंने इस तथ्य को भी नजरंदाज़ कर दिया होगा कि वे लोग बहुत अधिक मेहनत करते है और इसके बावजूद भी वे साधारण बल्लेबाज़ों द्वारा, अच्छी गेंदे फेंके जाने के बाद भी छक्का पड़ जाने पर अपमानित होते है। और उन्होंने इस तथ्य को नजरंदाज़ नहीं किया होगा कि हालाँकि निरपेक्ष रूप से बल्लेबाज़ को अधिक वेतन मिलता है, परन्तु मेहनत-प्रतिफल के अनुपात में वे गेंदबाज़ है जो बेहतर करते है।

अर्थशास्त्र के अनुसार बुनियादी तथ्य यह है कि गेंदबाज़ ही विजेता है क्योंकि मेहनत-प्रतिफल का अनुपात उनके पक्ष में अधिक झुका हुआ है।

इसलिए, आम तौर पर, यदि एक गेंदबाज़ अपने करियर में 100 टी20 मैच खेलता है, तो उससे केवल 400 ओवर तक गेंदबाज़ी करने की अपेक्षा की जा सकती है और सिर्फ उन 400 ओवरों के लिए गेंदबाज़ी करने पर वह कम से कम रू 1 करोड़ कमाने की अपेक्षा कर सकता है। हाँ, बस इतना ही, सिर्फ 400 ओवर।

ना ही वहाँ ऐसी कोई आवश्यकता होती है कि उसे कोई विकेट लेना ही होगा, जबकि एक बल्लेबाज़ से कम से कम एक रन बनाने की अपेक्षा की जाती है। इस सबके विपरीत एक गेंदबाज़ को बस इतना करना होगा कि अपने हर मैच के 24 गेंदों के कोटे में से उसे 10 या 11 डॉट गेंदे डालनी पड़ेगी।

कम मेहनत, ज्यादा पैसा

दूसरे शब्दों में, एक गेंदबाज़ केवल टीम में शामिल होने पर ही कमा लेता है। कुछ और करने की आवाश्यकता नहीं है। उसे बस स्टंप-टू-स्टंप गेंदबाज़ी करनी है जिससे कि बल्लेबाज़ केवल एक-एक रन ही ले सके।

केवल इतना ही नहीं: एक गेंदबाज़ के लिए चार ओवेरों में बिना कोई विकेट लिए 28 रन देना बेहतरीन प्रदर्शन समझा जाता है। इसकी तुलना उन अपेक्षाओं से कीजिये जो एक बल्लेबाज़ से की जाती है और आपको समझ में आ जायेगा। यदि बल्लेबाज़ों को टीम में बने रहना है तो उन्हें आधा दर्जन से अधिक मैचों में एक गेंद पर कम से कम दो रन बनाने पड़ेंगे।

अगर एक गेंदबाज अपने करियर में 100 टी 20 मैच खेलता है, तो उससे केवल 400 ओवर तक गेंदबाजी करने की अपेक्षा की जा सकती है और सिर्फ उन 400 ओवरों के लिए गेंदबाजी करने पर वह कम से कम रू 1 करोड़ कमाने की अपेक्षा कर सकता है।

दर्शक केवल रन बनते देखने जाते है और वास्तविकता में किसी को भी परवाह नहीं होती कि बिना विकेट लिए एक गेंदबाज कितना पिटता है। ना ही किसी को एक अच्छी गेंद याद रहती है और ना ही एक शानदार गेंदबाजी का दौर।

अन्य मामलों में भी गेंदबाज़ों के लिए यह बार बहुत नीचे रखा गया क्योंकि दर्शक केवल रन बनते देखने जाते है और वास्तविकता में किसी को भी परवाह नहीं होती कि बिना विकेट लिए एक गेंदबाज़ कितना पिटता है। ना ही किसी को एक अच्छी गेंद याद रहती है और ना ही एक शानदार गेंदबाज़ी का दौरा। आखिरकार, 24 बाल में इससे अधिक क्या हो सकता है?

वह मुद्दा जिससे गावस्कर चूंक गए बहुत ही सरल है: वह उत्पादकता होती है जो महत्व रखती है चाहे किसी भी तरीके से उसको मापा जाए। इस संदर्भ में कि जितनी उन्होंने मेहनत की उसके बदले उन्हें क्या मिला, गेंदबाज़ आसानी से बाज़ी मारते है।

अन्य खेल

यह अंतर केवल क्रिकेट में ही नहीं बल्कि अन्य खेलों में भी स्पष्ट है। और कहीं भी अपेक्षाएं इतनी कम नहीं होती है जितनी एक गेंदबाज़ से होती है।

विवादास्पद रूप से, फुटबॉल और हॉकी में गोलकीपर की तुलना गेंदबाज़ों से की जा सकती है। तथ्यों के आधार पर, दोनों ही खेलो में उनके लिए यह संभव है कि वे बस वहाँ खे रहे और कुछ भी ना करें और बहुत सारा पैसा कमायें। बाकि के 10 खिलाड़ी यह सुनिश्चित करते है की गेंद कहीं भी उनके गोलपोस्ट के नज़दीक ना जाए।

सच है, कि यदि गोल होता है तो गोलकीपर स्वयं के सिवा किसी और को दोष नहीं दे सकता। फिर भी, उसका प्रतिफल एक गेंदबाज़ के प्रतिफल के आसपास भी नहीं होता है हालाँकि हार से बचाने के लगभग-एकाधिकार के लिए उसे उच्चतर प्रतिफल मिलना चाहिए।

बास्केटबॉल में भी, जहाँ पर दोनों तरफ केवल पाँच खिलाड़ी ही होते है, ऐसा संभव हो सकता है, कम से कम परिकल्पना में, कि दोनों तरफ के एक-एक खिलाड़ी कुछ भी ना करते हुए बस आगे-पीछे दौड़ते रहे गेंद को एक भी बार हाथ लगाए बिना। परन्तु उनसे ऐसी अपेक्षा नहीं की जाती है। उन्हें जल्द ही बाहर कर दिया जायेगा।

टेनिस में, यह संभव है, फिर से परिकल्पना में, कि एक मैच 72 पॉइंट पर ही खत्म हो जाए। ऐसा होगा यदि वहाँ 36 ऐस हों और बिना-वापसी की 36 रिटर्न ऑफ़ सर्विस हो। परन्तु वहाँ पर लगने वाला प्रयास इतना अधिक हो जायेगा कि पुरस्कार अनंतता के करीब होगा।

मेहनत के मामले में कोई भी टी 20 गेंदबाज़ इसकी कहीं-से-कहीं तक बराबरी नहीं करता परन्तु प्रतिफल के मामले में इसके काफी करीब पहुँच जाता है। एक टी20 गेंदबाज़ की उत्पादकता के संबंध में उसका मुनाफा लगभग अनंत होता है। कोई अन्य पेशा जो टी20 के गेंदबाज़ों के समरूप है वह भारतीय अधिकारी-तंत्र का है - कम प्रदर्शन की अपेक्षा और बहुत उच्च प्रतिफल। इसलिए बहुत से लोग सरकारी नौकरी चाहते है।

शिक्षा: सभी माता-पिता को अपने लड़के एवं लड़कियों से गेंदबाज़ बनने के लिए कहना चाहिए। शोहरत बल्लेबाज़ी करने में हो सकती है परन्तु पैसा गेंदबाज़ी में है।

एन कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

चरबी गलाने की मिथ्या

शीला नंबीयार

वज़न घटाने व तंदुरुस्ती की संकल्पना अनेक मिथ्याओं और गलत धारणाओं से घिरी है। इनमे सबसे आम धारणा है कि कुछ खाद्य पदार्थ चरबी को गला देंगे।

कुछ बारंबार सूचीबध्द किये गये चमत्कारी खाने की चीजें है नीबू रस, शहद, जीरा और दालचीनी, अंगूर, ककडी, दही, ग्रीन टी, लहसून, कुईनोआ (एक दक्षिण अमरीकी अनाज), ओट्स, मसालेदार खाना तथा युनानी दही।

लेकिन सचाई यही है कि ये चीजें 'चरबी गलायेगी' नहीं। चरबी को गलाने के लिये ईंधन के रूप में उसका उपयोग करना होगा। चल-फिरने और व्यायाम करने के द्वारा शरीर की ऊर्जा का उपयोग करना ही चरबी को ईंधन के रूप में उपयोग करने का एकमात्र तरीका है।

महज़ एक किस्म का खाना लेने से ही नतीजे एक जैसे नहीं रहेंगे। कफैन, मसाले, लहसून जैसी चीजें उसे लेने के बाद कुछ समय तक शरीर के 'मेटाबालीज़म' को बढ़ा देती है। और इससे कलोरी को कुछ ही समय के लिये, वह भी हल्का सा गला दिया जा सकता है। सभी खाने की चीजों के पचन के लिये अमुक मात्रा में ईंधन की जरुरत है। इसे 'थर्मीक इफेक्ट' कहा जाता है। कुछ खाद्य पदार्थों में दूसरों के मुकाबले अधिक थर्मिक इफेक्ट पाया जाता है। मिसाल के लिये प्रोटीन में सादे कार्बोहाईड्रेट के मुकाबले ज्यादा थर्मीक इफेक्ट पाया जाता है। कार्बो हाईड्रेट को पचाने के मुकाबले प्रोटीन को पचाने से अधिक कलोरीयों को जलाया जा सकता है। लेकिन महज़ इस तरह की चीजें लेने से ही चरबी नहीं गल जाती। इस मिथ्या को साबित करने के लिये कोई खास सबूत नहीं है।

हालाँकि ऊपर की सभी चीजें सेहत के लिये फायदेमंद हो सकती है। उनमें कुछ मुख्य पोषक तत्व पाये जाते हैं जो हमारे शरीर के लिये जरुरी है और अंतडियों के जीवाणु को बेहतर बनाने के द्वारा आपकी पाचन प्रणाली को स्वस्थ रखते हैं।

और फिर, इस तरह के आहार लेना, कम-पोषक आहारों को लेने की मात्रा को अप्रत्यक्ष रूप में कम करा देंगे। मिसाल के लिये, सुबह सुबह खाली पेट नीबू का रस पीना अच्छी बात है खासकर गर्मी के मौसम में। हालाँकि उसमें चरबी को गलाने की क्षमता नहीं है, वह चीनी डली चाय-कॉफी लेना कम करा सकती है जिससे कलोरी कम हो जायेगी।

ग्रीन टी में केटेशीन नामक हितकरी एंटीऑक्सीडेंट पाये जाते है। यें रक्तचाप और कोलस्टेरोल को कम कराने के साथ दिल और दिमाग की सेहत को बेहतर बनाते हैं।

यदि आप सारा दिन ग्रेप्फ्रूट ही खाते रहे, तो वजन के घटने की गुँजाईश ज्यादा रहेगी। लेकिन यह इस फल का चमत्कारी गुण नहीं है बल्कि ऐसा इसलिये होता है क्यों कि कम कलोरी का सेवन किया जाता है।

जब एक आरोग्यकर संतुलित आहार के हिस्से में खाया जाता है तो यें फल या सब्जियाँ सेहत के लिये बेहद फायदेमंद होते है और यदि जायका बढाने वाले पदार्थ, चीनी मिलाये गये तैयार खाद्य पदार्थ या फास्ट फुड लेने से यें आपको रोक पाते हो तो वजन घट सकता है।

'चरबी गलाने वाले आहार' का उत्पादन करने वाली तथा विपणन करने वाली बडी कंपनियों ने विज्ञापन करने का तथा उन्हे बेचने का हुनर सीख लिया।

इसमें इस्तेमाल की गयी मनोवृत्ति यह है कि किसी ऐसी बात के लिये एक सुलभ हल प्रदान करना जिसे हम गहराई से चाहते हैं जैसे चरबी घटाना आदि जिसे ख़ूबसूरत तरीके से पैक कराके, बेचा जाता है।

मिसाल के लिये ग्रीन टी को ही लीजिये, महंगी ग्रीन टी के एक टिन के खरीदे जाने की संभावना ज्यादा रहती है यदि उसके पैकिंग पर यह लिखने के बजाय ''दिल और दिमाग की तंदुरुस्ती को बेहतर बनाती है'' यूँ लिखा हो, ''चरबी गलाती है''। महज वजन घटना काफी होता है! हम 'अलझैमेर' की बीमारी की वजह से भी दुबले हो सकते हैं!

'चरबी गलाने' वाले आहार अनेक है। दो नीबूओं के रस में ठीक डेढ़ चम्मच शहद को मिलाकर बनाया गया वह खास मिश्रण आपके वजन को घटाने में

महंगी ग्रीन टी के एक टिन को खरीदने की संभावना निश्चित ही तब बढ़ जाती है जब उसकी पैकिंग में ''दिल और दिमाग की सेहत बनाने वाला'' के बजाय लिखा होता है, ''चरबी गलाने वाला''।

मददगार साबित होगा जो इतना आकर्षक लगता है कि आप उसे नज़रअंदाज नहीं कर पायेंगे।

हम इन चमत्कारी समाधानो पर विश्वास करना पसंद करते हैं खासकर जब अधिक वजन/चरबी की बात आती है। यह सोचना ठीक लगता है कि हमारे नियंत्रण से परे किसी बात से ही हमारा वज़न बढा और इस अतिरिक्त चरबी से छुटकारा पाने के लिये हमें किसी असाधारण शक्ति की जरुरत है।

हालाँकि मैं यही सुझाव दूँगी कि महज वजन पर ही ध्यान रखने के बजाय, एक नियमित, ठोस व्यायाम कार्यक्रम के जरिये सेहत और तंदुरुस्ती की मात्रा को बेहतर करना, आरोग्यकर आहार लेना जैसे

चरबी गलाने वाले आहार, तनाव, नींद और रिश्तों का उचित प्रबंधन आदि से बेहतर, स्थायी नतीजे पाये जा सकेंगे।

तीव्र स्वास्थ्य संबंधित मुद्दों को नजर अंदाज करते हुये मोटापा, वजन, आकार और अच्छा दिखना जैसी बातों को लेकर पागल हो जाने की वजह से मोटापा और बीमारियों की समस्या जटिल होते जा रही है।

खाद्य पदार्थ बनाने वाली कंपनियाँ इसी बात का फायदा उठाते हुये ऐसी चीजें बेचती है जो बेहद तेजी से आपका वजन घटाने में मददगार होने का दाँवा करती है या आपके पसंदीदा उत्पादन को 'कम चरबीयुक्त' बनाकर बेचती है जिसमें असल में कोई पोषक तत्व तो होता नहीं उल्टा उसमे हर तरह के जायका बढाने वाले 'एडीटीव्स' मिलाये जाते है ताकि हमे उसकी लत लग जाये। इंटरनेट ऐसे उत्पादनों से भरा पडा है जैसे दुनिया के किसी दूरवर्ती हिस्से में उगे बेरनुमा फल या जडी-बूटियाँ, जो दाँवा करती है कि उसके इस्तेमाल करने से आपका 5 घेरा कम हो जायेगा।

पसंदीदा आहार, कुछ खाद्य पदार्थों को खास तौर पर खाना, या किसी खाद्य पदार्थ के समूचे समूह को हटा देना आदि बातों की दीर्घ-कालीन समस्यायें अनेक है। हम अपनी सेहत की कीमत पर इन विपणन युक्ति का शिकार ना बनें। इसके बजाय, नियमित व्यायाम तथा खाने की आरोग्यकर आदतें जैसे कुछ सरल उपायों को शामिल करने के द्वारा अक्लमंदी के साथ तंदुरुस्ती और सेहत के बारे में सोचे।

लेखिका सेहत और जीवन शैली सलाहकार हैं। उन्होने दो पुस्तकें प्रकाशित की है: Get Size Wise; Gain to Lose.

वेब साईट : drsheelanambiar.com

बेहतर स्वास्थ्य के लिए सहयोग

टीम रोटरी न्यूज़

डीजी रवि मेहरा (बाएं) और IMA उत्तराखंड के अध्यक्ष टी एस राउताला, IMA के महासचिव आर एन टंडन और पीडीजी आई एस टोमर (बीच में) की उपस्थिति में अनुबंधों का आदान-प्रदान करते हुए।

रोटरी मंडल 3110 की ओर डीजी रवि मेहरा और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन खचअ की ओर से इसके अध्यक्ष उत्तर प्रदेश चैप्टर के लिए डॉ विनय गुप्ता, और उत्तराखंड चैप्टर की ओर से डॉ टी एस राउताला ने 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए नियमित टीकाकरण को बढावा देने के लिए एक MoU पर हस्ताक्षर किया और खुले में शौच को रोकने के लिए शौचालयों का निर्माण करने में सहायता की।

रोटरी ग्रामीणों के बीच टीकाकरण को बढ़ावा देगा, जबकि मूल बुनियादी सुविधाएँ IMA द्वारा प्रदान किया जाएगा। मेहरा कहते हैं, "एक बच्चे के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए नियमित टीकाकरण बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ तक कि अगर सरकार इन सभी टीकों को राज्य के स्वास्थ्य केंद्रों के जरिए मुफ्त में उपलब्ध करा रही है, तो भी ग्रामीण जानता के मध्य जागरूकता एक बडी समस्या है।"

मंडल का रोटरी क्लब इस क्षेत्र के स्कूलों और घरों में पहले चरण में 162 शौचालय का निर्माण करेगा। रोटरियन स्थानीय लोगों को शौचालयों का उपयोग करने और WinS के विभिन्न पहलुओं को बढावा देने के लिए प्रशिक्षित करेंगे। IMA के साथ मिलकर गांवों में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन नियमित रूप से किया जाएगा।

लोगों के बीच रोटरी की उपस्थिति को बढाने के लिए, एक मानव श्रृंखला, जो रोटरी के प्रतीक को दर्शाती है, का निर्माण एक रिकार्ड संख्या में 3,333 सदस्यों वाले रोटरियनों, रोट्रैक्टर्स, इंटरट्रैक्टर्स और इनर व्हील के सदस्यों के साथ किया गया था। इस उपलब्धि ने सबसे अधिक संख्या में सदस्यों को मिलाकर मानव श्रृंखला बनाने का एक विश्व रिकॉर्ड बनाया और इस प्रकार रेड क्रॉस के 2,367 सदस्यों द्वारा बनाए गए पूर्व रिकॉर्ड ब्रेक कर दिया।■

काजू के फलों से लटकती काजू की फली।

गोवा: काजू की खुशबू हर कहीं

प्रीति वर्मा लाल

"April is the cruellest month, breeding lilacs out of the dead land" कवि टी एस एलीयट की मशहूर कविता *Wasteland* इन्ही लब्जों के साथ शुरू हुयी थी। यदि एलीयट ने गोवा में गर्मी के दिन बिताये होते, तो उन्होने अप्रैल को हरगिज बेरहम नहीं कहा होता। क्यों कि अप्रैल में ही गोवानी हवा में काजू से जुडी हर बात की खुशबू फैली रहती है। लाल, नारंगी, पीले काजूई सेबों से लदे काजू के ऊँचे पेड। फूली हुयी डाली के किनारे पर एकलौते दाने के साथ खतरनाक ढंग से लटकते काजू के फल (सेब)। धूप में सुखाये गये, पीपों में भुने, तेल चुपडकर भुने या भाँप में पकाये गये,और झुलसाये

नीचे : मशहूर कार्टूनकार मरीयो मिराँडा ने लेंब्राँका फेनी बोतल के लिये यह चित्र बनाया था- फेनी के बोतल के लिये उनके द्वारा बनवाया गया यह एकमात्र चित्र है।

उस दिन गोवा में, मैंने हजारों काजूई किरदार निभाये – काजू चुनने वाली, काजू सेब को कुचलने वाली, फेनी को खींचने वाली, काजू के दाने तोडने वाली, काजू के पकवान बनाने वाली शेफ।

गये साबूत काजू, सफेद साबूत काजू, मीठे, मिलाये गये, साबूत, टुकडों में और नरम, टूटे दाने आदि के रूप में श्रेणीबध्द किये गये काजू। ताँबे की हौज में खौलता काजू का रस, नशीले फेनी और उराक में बदल जाता है। रसोईघर में काजू। 'स्पा' में काजू। हर जगह काजू ही काजू। बाकी सब कुछ इसके सामने अनावश्यक बन जाते है। पुरानी।

एक सुहानी अप्रैल की दोपहर, मैंने काजू के पीछे की कहानी के बारे में जानने का फैसला किया। लगभग 500 साल पहले पोर्तुगीयों ने गोवा में एक पेड को लाया था। उस पेड का मूल ब्रेजील था; उसके दूर के 'रिश्तेदार' थे पिस्ता और पाईजन आईवरी (पूर्वी और सेंट्रल अमरीका का एक पौधा)। उस दिन गोवा में, मैंने हजारों काजूई किरदार निभाये – काजू चुनने वाली, काजू सेब (फल) को कुचलने वाली, फेनी को (शराब) खींचने वाली, काजू के दाने तोडने वाली, काजू के पकवान बनाने वाली शेफ.. निश्चित ही काजू के अफसानों के लिये मुझे देश के इस सबसे छोटे राज्य में तलाश नहीं करनी पडेगी। सो मैंने 'Cashew Trail' नामक एक वार्षिक सब कुछ बतला देने वाला, हर तरह की जानकारी दिलाने वाला, अपने किस्म का एकमात्र, काजू समारोह के लिये पंजीयन कर लिया, जिसकी मेज़बानी की पार्क हयात गोवा रिजार्ट एंड स्पा ने जिसने उसे व्यापार चिन्हित भी किया था।

पहले, काजू सेब के बारे में। सीड्रीक तथा मैक वाझ के काजू के बागानों में, मैंने काजू-सेब चुनने के नियम सीखे। हरगिज टहनी से काजू के फल को ना तोडें। हमेशा नीचे गिरे काजू के फल ही चुने। मैंने कील ठोके नोक वाली छडी उठायी और ऐसे फलों को टटोलकर देखा जिन्हे आसानी से मसला जा सकता था। काजू सेबों को ब्रेजील में एक स्वादी पकवान माना जाता है। काजू के लिये उस दीवानेपन के बारे में जानने के लिये, मैंने एक ताजे लाल फल को चबाकर देखा। वह लसीला है, रसीला है, मीठा है जिसके बाद आपको चक्कर आने जैसा आभास होता

फटी ऐडियों के लिये काजू के शुध्द तेल का उपयोग किया जाता है।

है। अगला कदम: फल में से बीज निकाल दे, दाने को निकालकर अलग रख दे और फलों को एक चट्टानी गड्डे (कोलंबी) में फेंक दे और नंगे पाँव उन्हे कुचलते रहिये, ताकि उसमें से रस बहे। काजू रस के एक तत्काल 'पेडीक्यूर' (पाद चिकित्सा) के विचार से अविचलित, मैं अपनी डुंगारी' (मोटा सूती कपडा) को कसकर, गड्डे में कूद पडी, एक रस्सी को पकडकर फलों को कुचलते रही, कुचलते रही; और रस एक मिट्टी के बर्तन में टपकता रहा।

अप्रैल की गोवानी धूप के नीचे, जब कि काजू सेब के रस से मेरे पाँव चमचमाते रहे, मैं बाँबी मिट्टी से बंद किये गये उन बडे ताँबे की भट्टियों के पास बैठी हुयी थी जिनमे काजू सेब को पकाया जा रहा था। जब काजू सेब का रस भाप बनकर एक मोटे होस पाईप से चक्कर मार मारकर बह रहा था, मैडम रोसा डिस्टलरी के सीड्रीक वाझ ने फेनी बनाने की प्रक्रिया के बारे में विवरित किया। काजू सेब के ठीक 90 लिटर रस से 30 लिटर उरक बनाया जा सकता है। ज्यादा खमीर। हिसाब लगाये। तीन भाग में बाँटे। यही फेनी है, एक मादक पेय जिसका शुमार *टाईम* पत्रिका ने दुनिया के चोटी के 10 बेतुके ढंग से तेज ज़ायके वाले पेयों में किया है। *टाईम* पत्रिका फेनी को शायद बेतुके ढंग से तेज जायके वाला पेय बतला सकती है, लेकिन गोवानी लोग फेनी को लगभग सभी बीमारियों का निवारक मानते हैं जैसे बुखार, पेट में कीडे, सर्दी-जुकाम, दाँतों में दर्द, मसूडों में फोडे आदि। गोवानीयों के लिये फेनी एक औषधकार है।

रोचक बात यह है कि Cashew Trail इतिहास की नीरस सैर नहीं है। इस आठ दिवसीय कार्यक्रम के दौरान सब कुछ काजू के

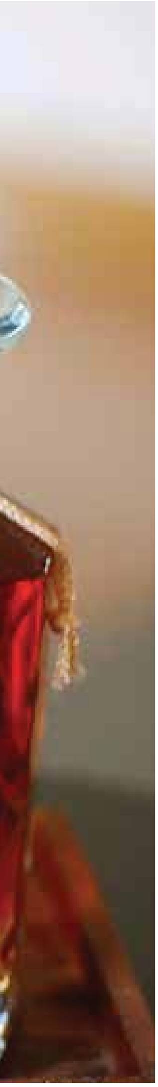

काजू की अच्छाईयाँ

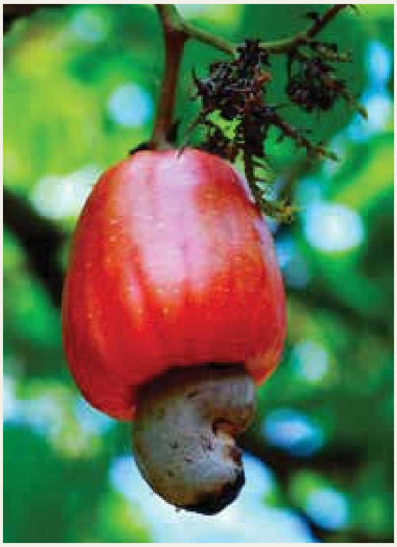

- — इसमे कोई दो राय नहीं कि काजू चरबी-रहित नहीं है लेकिन उसमें 'बुरी' चरबी नहीं बल्कि 'अच्छी' चरबी पायी जाती है।
- — वह प्रोटीन और लौह तत्व, ताँबा, मैंगनीज तथा फॉस्फोरस जैसे खनीजों का उपयोगी श्रोत है।
- — काजू में काँसे की मौजूदगी उसे एक लोकप्रिय एंटीऑक्सीडेंट बना देती है।
- — काजू का फल खून में शक्कर की मात्रा और ऊँचे रक्तचाप को घटा देता है।
- — काजू का तेल फटी ऐडियों और फफूँद के संक्रामण के लिये उचित निवारक है क्यों कि उसमे लौह और फास्फोरस पाया जाता है जो घाँवों को भरने में उपयोगी साबित होता है।
- — आप सूखे काजू और बादाम को मिलाकर घर पर ही काजू का 'फेस मास्क' बना सकते हैं।

काजू फल को कुचला जा रहा है।

इर्दगिर्द ही घूमता है। मैंने शेफ फ्राँको कैनझानो के साथ रसोई घर में कदम रखा जिन्होने काजू की फलियों को भुना, दम देकर पकाया, टुकडे किये, मसाले डाले, और काफी हिलाते रहने के बाद उन्हे स्वादी चीजों में बदल दिया। सब कुछ कलछी के घुमाव से ही। काजू एल्ले बेल्ले parfait (एक तरह का मलाईदार आईसक्रीम)। लिंगुनी पास्ता के लिये काजू और कडी पत्ते का पेस्तो। काजू का मंगोलीय शोरबा। फिलो (आटा) में भरे काजू को फेनी एंग्लेईस (पानी में उबाला गया) के साथ परोसना। काजू का जैम (क्षरा)। काजू/आम की चटनी। एक चिकन पकवान के लिये सिरके में डालना। पिसे काजू, मलाई पनीर और मसालों से बना काजू डिप (बघार)।

काजू का इस्तेमाल करते हुये बनाया गया 'ब्रंच' (नाश्ता और खाना दोनों मिलाकर) लेने, हम जंगल में गये जहाँ लकडी की पालखी में एक तगडा 'बिग बॉस' (Big Boss) बैठा हुआ था। लगभग आधे पाव के माप तक भरे 45 लिटर बिग बॉस फेनी की शीशे की बोतल एक धर्मार्थ कार्य निमित्त नीलामी के लिये तैयार थी। वहाँ हमने दक्षता पूर्वक फेनी की बोतल पर स्याही में अंकित गोवानी मधुशाला के चित्र को देखा; मशहूर कार्टूनकार मरीयो मिराँडा द्वारा फेनी के लेबल के लिये बनाया गया,यही पहला और इकलौता चित्र है। एक दशक से पहले बनाया गया मिराँडा का चित्र अब लेंब्राँका के बोतल की शोभा बढा रहा है। मैडम रोसा डिस्टीलरी (मधुशाला) का फेनी ब्रैंड, जिसे पारंपरिक ताँबे के बर्तन में निकाला जाता है, स्वादिष्ट बनाने के लिये कोयले में छाना गया और बलूत के पीपों में रखे गये फेनी के साथ मिलाया जाता है।

हर जगह काजू ही काजू था। मेरी त्वचा पर, खाने की थाली में परोसे गये हर पकवान में, चमचमाते पाँवों के लिये ताजे काजू के फल को पैरों से कुचला गया,और मेरे डुंगारी की सिलाई के बीच फंसा काजू की डाली।

आगे, मैंने काजू की गरी से, बेजान त्वचा और उस पर की चिपचिपाहट को अच्छी तरह से रगडकर निकाला; इसके बाद काजू की फलियों के खालिस लेई को सारे बदन में लेप किया और उस पर 20 मिनट तक 'क्लिंग रैप' (चिपकते आवरण) से ढककर रखा। भाप के स्नान के बाद, काजू के शुध्द तेल से हल्की सी मालिश। इस 120 मिनट के काजूई बौछार के बाद एक गिलास काजू शरबत के साथ यह सिलसिला खत्म हुआ।

Cashew Trail में, हर जगह काजू ही काजू था। मेरी त्वचा पर, खाने की थाली में परोसे गये हर पकवान में मिलाया गया, चमचमाते पाँवों के लिये ताजे काजू के फल को पैरों से कुचला गया,और मेरे डुंगारी की सिलाई के बीच फंसा काजू की डाली। हालाँकि मैं शराब पीती नहीं, काजू के फूलों की खुशबू को सूँघकर ही मुझे हल्का सा नशा हो गया था।

चित्र: प्रीति वर्मा लाल

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/GLOBALREWARDS

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

District Wise TRF Contributions as on March 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	1,86,643	12,397	0	0	1,99,041
2982	34,776	13,948	0	0	48,724
3000	1,74,999	0	69,105	57,882	3,01,986
3011	9,58,086	2,399	3,183	35,373	9,99,041
3012	1,80,846	2,430	40,381	6,000	2,29,658
3020	29,890	12,985	0	99,114	1,41,988
3030	47,548	0	(42,761)	(8,825)	(4,038)
3040	1,897	29	23,303	0	25,229
3051	10,846	27	0	0	10,872
3052	(24,025)	0	53,175	0	29,150
3053	1,639	0	0	0	1,639
3060	1,01,918	175	25,075	58,351	1,85,518
3070	69,416	1,368	6,191	0	76,976
3080	41,931	21,511	1,34,144	25,833	2,23,419
3090	39,683	0	0	0	39,683
3110	36,657	26,815	0	0	63,472
3120	30,892	149	30,000	0	61,041
3131	2,71,926	29,197	2,56,183	1,24,955	6,82,262
3132	45,989	3,007	16,877	0	65,872
3141	6,72,622	24,174	3,00,448	25,699	10,22,943
3142	1,30,518	100	5,250	2,000	1,37,868
3150	1,63,852	16,360	65,982	97,585	3,43,779
3160	84,056	2,198	3,000	0	89,254
3170	81,566	16,154	1,762	58,735	1,58,217
3181	1,73,375	4,118	27,261	0	2,04,754
3182	55,262	2,476	6,043	35,373	99,153
3190	1,26,096	(10,138)	1,73,724	74	2,89,755
3201	55,820	1,964	77,994	0	1,35,778
3202	33,574	1,419	0	0	34,993
3211	64,661	1,015	1,400	18,015	85,091
3212	80,849	1,600	49,265	1,000	1,32,714
3230	1,85,577	4,549	64,676	24,525	2,79,327
3240	92,295	7,677	0	2,866	1,02,838
3250	16,153	0	722	0	16,875
3261	13,134	100	0	0	13,234
3262	87,255	5,608	1,22,126	2,000	2,16,989
3291	1,03,689	2,800	73,765	9,875	1,90,129
India Total	**44,68,834**	**2,08,611**	**15,88,275**	**6,76,430**	**69,42,150**
3220 Sri Lanka	49,537	25	705	11,068	61,335
3271 Pakistan	61,008	1,11,337	20,011	100	1,92,456
3272 Pakistan	88,020	24,505	0	4,000	1,16,526
3281 Bangladesh	1,66,199	7,413	28,551	7,000	2,09,162
3282 Bangladesh	48,480	1,463	0	2,000	51,943
3292 Nepal	3,10,830	1,421	1,66,561	0	4,78,812
South Asia Total	**51,92,907**	**3,54,775**	**18,04,104**	**7,00,598**	**80,52,384**
World Total	**9,00,39,636**	**1,96,35,091**	**93,15,240**	**1,87,54,349**	**13,77,44,316**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

मंडल गति

रोटरी क्लब मन्नारगुडी मिडटाउन - मंडल 2981

मेलथिरुपपालकुडी गाँव में एक सामान्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 600 लोगों की जाँच की गई, जिनमें से विशिष्ट विकारों वाले 200 मरीजों का उपचार किया गया। इस शिविर का आयोजन संयुक्त रूप से एक स्थानीय ट्रस्ट और तंजावुर मीनाची अस्पताल के सहयोग से किया गया था। शहर में SBA मैट्रिक स्कूल के छात्रों के लिए त्वचा-विज्ञान शिविर का आयोजन किया गया था।

रोटरी क्लब भोपाल हिल्स - मंडल 3040

गांधीनगर नई बस्ती भोपाल के चार सौ बच्चों को राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस पर पोलियो की ड्रॉप्स दी गई। क्लब के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल और उनकी टीम ने बच्चों के माता-पिता से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों को टीकाकरण के अगले चरण में जरूर लाएँ और उन्होंने बच्चों को उपहार भी दिया।

रोटरी क्लब अहमदाबाद वेस्ट - मंडल 3051

क्लब ने अपने 'प्रोजेक्ट डिग्निटी' के अंतर्गत नगरपालिका के छह स्कूलों में 300 छात्राओं के मध्य सैनिटरी पैड वितरित किया और इस प्रोजेक्ट का लक्ष्य रु 45-50 लाख की लागत से शहर के सभी 445 नगरपालिका स्कूलों को कवर करना है। क्लब के अध्यक्ष राकेश भार्गव कहते हैं कि सैनिटरी पैड की कमी के कारण नौ मिलियन किशोरियाँ हर महीने एक सप्ताह तक स्कूल नहीं जाती हैं।

रोटरी क्लब ग्वालियर गालव - मंडल 3053

क्लब ने कासर गाँव में वस्त्र विरतन कार्यक्राम का आयोजन किया और लगभग 400 लोगों को ऊनी वस्त्र प्रदान किया गया। रोटरियनों ने गांव वालों से अपनी बस्ती को साफ़ रख ने का अनुरोध किया

रोटरी क्लब अमृतसर आस्था - मंडल 3070

रोटरियनों ने शहर में गुरुकुला संस्थान के विद्यार्थियों के साथ सभी बाधाओं के बावजूद शिक्षा प्राप्त करने के महत्त्व पर विचार-विमर्श किया और उनके मध्य स्टेशनरी, स्कूल बैग और कैप वितरित किया।

रोटरी क्लब करनाल मिडटाउन- मंडल 3080

क्लब द्वारा मिलेनियम स्कूल और फायरफॉक्स साइकिल्स के सहयोग से आयोजित किए गए एक साइकिल रैली में लगभग 150 स्कूली बच्चों ने भाग लिया। रैली में - 'पर्यावरण को बचाओ, स्वस्थ और खुश रहो' विषयों पर प्रकाश डाला गया। परियोजना के अध्यक्ष के के गंभीर ने प्रतिभागियों को एक स्वस्थ व्यायाम के साधन के रूप में साइकिल चलाने के लिए प्रोत्साहित किया।

रोटरी क्लब राजपुरा ग्रेटर - मंडल 3090

क्लब ने निर्धन परिवारों से आने वाले 12 जोड़ों के विवाह का आयोजन किया। पी डी जी विजय गुप्ता और डी जी एन राजीव गर्ग ने समारोह की अध्यक्षता की। मेहमानों के लिए शानदार नाश्ते और लंच उपलब्ध कराने के अलावा, क्लब ने नव विवाहित जोड़ों को उपयोगिता आइटम्स उपहार में दिया।

रोटरी क्लब ठाणे स्काईलाइन - मंडल 3142

ठाणे में अंधे अपंग प्रगति समिति के 275 नेत्रहीन सदस्यों के मध्य सफेद बेंत और जूट से निर्मित शॉपिंग बैग वितरित किया गया।

रोटरी क्लब रायचोटी - मंडल 3160

रोटेरियन कोपाला नागी रेड्डी ने चिड्लगुर गाँव के पास वृद्धाश्रम नामक एक वृद्धाश्रम के 50 बुजुर्ग लोगों को साडी और धोती उपहार में प्रदान किया। क्लब के सदस्यों ने वृद्धाश्रम के निवासियों के साथ बातचीत करते हुए कुछ समय व्यतीत किया।

मंडल गति

रोटरी ई-क्लब बेलगाम - मंडल 3170

अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में तीन विदेशी मंडलों द्वारा समर्थित और 46,750 के वैश्विक अनुदान के साथ, क्लब बेलगाम में पोलियो सुधारात्मक शल्यचिकित्सा शिविर आयोजित कर रहा है। क्लब के सदस्य डॉ अनिल पाटिल ने 50 मरीजों के उपचार करने के लक्ष्य में से 11 पोलियो पीडितों का उपचार किया।

रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड - मंडल 3190

क्लब ने बच्चों में जन्मजात हृदय रोग का पता लगाने और उसका निदान उपलब्ध कराने के उद्देश्य से फोर्टिस अस्पताल में एक पोर्टेबल इकोकार्डियोग्राम मशीन को प्रायोजित किया। ऐश्वर्या ट्रस्ट के साथ संयुक्त रूप से क्लब द्वारा नियमित रूप से स्कैनिंग शिविर आयोजित किया जाता हैं। TRF से वैश्विक अनुदान के माध्यम से इस उच्च तकनीकी उपकरण के लिए निधि की व्यवस्था की गई।

रोटरी क्लब किलकंबलम - मंडल 3201

एक नया घर, जिसका निर्माण रु8 लाख की लागत से किया गया था, एक बूढ़ी माँ और मानसिक रूप से बीमार उनकी 22 वर्षीय बेटी को दिया गया। उन्हें नए घर की चाभी डी ज प्रकाश चंद्रान ने प्रदान किया।

रोटरी क्लब उदुमालपेट - मंडल 3202

स्वच्छ भारत मिशन के एक भाग के रूप में क्लब ने अपने इनर व्हील सदस्यों और रोट्रैक्टर्स के साथ मिलकर नगरपालिका के 66 महिला सफाईकर्मियों के मध्य यूनिफार्म वितरित किया। यूनिफार्म को रोटरियन के बालसुंदरम, टी शिवकुमार, एम जयकुमार और मुरुगनंदन ने प्रायोजित किया था।

रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन - मंडल 3230

गुम्मिदिपुन्दी तालुका में एक रोटरी ग्रामीण दौड़ का आयोजन किया गया जिसमें 1,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। यह एक मिनी-मैराथन था जिसका लक्ष्य खेल और तंदुरुस्ती को बढ़ावा देना, उभरती प्रतिभाओं की पहचान करना, और जीवनशैली से संबंधित बीमारियों से लड़ना है।

विधियाँ

रोटरी क्लब चंचल - मंडल 3240

क्लब ने WinS प्रोजेक्ट के एक भाग के रूप में पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्याश्रम के परिसर में एक हाथ धोने के स्टेशन का उद्घाटन किया। छात्राओं को स्वच्छ प्रथाओं को अपनाने के लिए अनेक प्रसाधन सामग्रियाँ दी गई।

रोटरी क्लब रायपुर - मंडल 3261

क्लब ने राज्य संसाधन केंद्र के साथ साझेदारी में रायपुर के पास बकतरा गाँव में एक प्रौढ़.साक्षरता केंद्र स्थापित किया। गाँव में डिजिटल जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक कंप्यूटर और एक LCD प्रोजेक्टर भी उपलब्ध कराया गया।

रोटरी क्लब बरहमपुर - मंडल 3262

स्वच्छ भारत - स्वच्छ विद्यालय के विषय पर 'युवा कलाकार नामक' एक ड्राइंग और पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन क्लब द्वारा किया गया, जिसमें 300 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन स्कूली बच्चों के बीच WinS प्रोग्राम के बारे में जागरुकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से किया गया था।

रोटरी क्लब पुरुलिया - मंडल 3291

पुरुलिया जिले के सोनथली गाँव में दो होम्योपैथी शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें 52 मरीजों की जाँच की गई और मुफ्त में दवाएँ प्रदान की गई। इस वर्ष अब तक कुल 13 शिविरों का आयोजन किया गया था और डॉ प्रसेनजित सेनगुप्ता ने 650 रोगियों का मुफ्त में उपचार किया।

रोटारैक्ट क्लब ऑफ न्यू रोड पोखरा - मंडल 3292

रोट्रैक्ट क्लब द्वारा आयोजित नौवें जिला सम्मेलन के साथ एक 9 दिवसीय अंतर क्लब यूथ एक्सचेंज कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। यह स्कूलों, पर्यटन स्थलों और विरासत केंद्रों के दैनिक यात्रा के साथ एक अत्यंत-व्यस्त कार्यक्रम था। समुदाय के साथ बातचीत करके और नए मित्र बनाकर प्रतिभागी बहुत खुश थे।

वी मुथुकुमारण द्वारा संकलित;
एल गुनाशेकरण द्वारा रूपरेखा

Please pay your *Rotary News* Dues at the earliest

to enjoy uninterrupted supply. Please note that *Rotary News* subscription is mandatory and defaulting clubs can be suspended by RI.

List of defaulting clubs and the club dues details on our website ***www. rotarynewsonline.org***

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,33,283

Clubs : 35,529

Districts : 534

Rotaractors : 2,33,312*

Clubs : 10,144*

Interactors : 4,95,857*

Clubs : 21,559*

RCC members: 2,16,315*

RCC : 9,405*

* As on April 3, 2017

Membership in India, Sri Lanka, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Bhutan and Maldives

As on April 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	109	4,491	190	55	217	171
5	2982	65	2,881	83	55	109	41
5	3000	119	5,286	439	236	538	112
4	3011	72	3,183	578	45	99	28
4	3012	86	3,627	771	62	113	54
5	3020	85	4,289	216	108	452	351
4	3030	99	5,452	689	71	264	156
4	3040	90	2,160	251	51	109	135
4	3051	66	2,489	189	47	146	335
4	3052	61	3,899	901	39	142	132
4	3053	66	2,584	398	16	34	93
4	3060	98	4,072	396	58	111	126
4	3070	108	3,192	286	66	152	54
4	3080	76	3,310	194	62	207	106
4	3090	79	2,121	75	33	36	122
4	3100*	71	1,714	70	10	71	146
6	3110	111	3,862	200	52	49	95
6	3120	74	2,982	289	36	50	50
4	3131	125	5,392	988	85	258	70
4	3132	95	4,088	417	58	147	120
4	3141	85	5,278	1017	101	238	86
4	3142	78	2,984	423	60	180	65
5	3150	97	3,503	336	90	221	108
5	3160	66	2,342	107	20	44	81
5	3170	128	5,585	361	50	280	159
5	3181	69	3,161	214	28	167	102
5	3182	79	3,398	261	25	265	91
5	3190	147	5,770	690	130	335	48
5	3201	139	5,181	309	91	117	46
5	3202	130	5,016	245	92	419	40
5	3211	134	4,372	244	11	80	121
5	3212	95	3,885	205	105	254	126
5	3220	70	1,943	246	79	190	75
5	3230	147	6,239	528	168	455	311
6	3240	87	3,048	349	57	142	141
6	3250	98	3,718	620	34	197	173
6	3261	70	2,350	227	15	100	42
6	3262	86	3,229	379	41	71	73
6	3271	71	1,369	197	43	16	13
6	3272	135	2,715	446	36	36	36
6	3281	195	5,697	770	220	79	184
6	3282	127	3,611	265	123	31	40
6	3291	148	3,878	667	63	126	570
6	3292	115	4,438	654	110	106	104
	Total	**4,351**	**1,63,784**	**17,380**	**3,037**	**7,453**	**5,332**

**Non-districted*

Source: RI South Asia Office

Rotary Institute 2017
KUALA LUMPUR
1-3 Dec '17 | Zone 4, 5 & 6A

Let us
Unite to Serve
at Malaysia - the land of diversity!

RI President 2017-18
Ian Riseley

Convener
RIDE Basker Chockalingam

Chairman
PDG R. Theenachandran

For Registration information:

Chairman: PDG R.Theenachandran
M: +91 94430 53301 | E: theena3000@gmail.com

Secretary: PDG Deepak Shikarpur
M: +91 98220 44533 | E: deepak@deepakshikarpur.com

Treasurer: PDG L.Narayanaswamy
M: +91 94437 37818 | E: ln3200@gmail.com

Promotion Chair – Zone 4: PDG Ramesh Agrawal
M: +91 98290 50862 | E: ragrawal20@yahoo.com

Promotion Chair – Zone 5: PDG Rajadurai Michael
M: +91 98948 33333 | E: rajamichael@gmail.com

Promotion Chair – Zone 6A: PDG Sanjay Khemka
M: +91 94311 21176 | E: sanjay3250@gmail.com

For more details contact:

Rotary Institute 2017 Office
DEVI HOUSE, 281-4, Sivagangai Main Road,
Gomathipuram, Madurai, Tamil Nadu - 625 020. INDIA

P: **+91 452 4370027**, M: **+91 94430 53301**
Alternative Contacts: **+91 73977 44371 / 73977 44372**
theena3000@gmail.com | www.rotaryinstitute2017.org

AMERICAN LIFE INCORPORATED

American Life, Inc. EB-5 Regional Center welcomes all Rotarians to RI convention 2017 in Atlanta, USA. June 10 -14

Visit our booth in the Hall of Friendship

Special Hilton Hotel rates
For Indian delegates
99 US$ / night at RI Convention 2017
Group Code: ROTARY
Email: ric@h1solution.com

Investment opportunity in 255 South King Street LLP– a 282 room Hilton Embassy Suites Hotel and Avalara Hawk Tower in Seattle.
Open for business in December 2017
Visit www.amlife.us for the American Life story and photos of completed projects.

INVEST IN YOUR AMERICAN DREAM!

American Life, Inc. of Seattle, Washington USA is a real estate developer of hotels and office buildings in Seattle, Los Angeles and Atlanta. We develop, build and manage our projects.

- Established in 1996
- U.S.Government approved Regional Center
- 2,459 Permanent Green Cards awarded
- 4,778 Conditional Green Cards awarded
- 24 Completed EB-5 Projects
- Over One Billion US$ of EB-5 capital invested
- Equity and Preferred Equity investment model

For more information, contact us at :
india@americanlifeinc.com | 001-206-381-1690
270 S Hanford Street, Suite 100 | Seattle, Washington 98134 USA
3405 Bobby Brown Pkwy, Atlanta, GA 30344, USA Tel: Sachin Patel - 404 491 4325

This does not represent on offer or solicitation to buy or sell securities. Investments are available only to qualified accredited investors via the confidential offering memorandum.

INDIA : Law Office of Prashant Ajmera & Associates 5 Shivam Complex, 3rd Floor, Nr. H. L. Commerce College, Navrangpura, Ahmedabad 380009, Gujarat
M. : +91 99 74 25 3030 | Ph. : 079 - 2646 0679 | Email : prashant@ajmeralaw.com | Web : www.ajmeralaw.com, www.eb5visaconsultant.com